किछु पुरान गप्प, किछु नव गप्प

कीर्तिनाथ झा

कीर्तिनाथ झा डाक्टर छथि, आ सेहो आँखिक। हिनक काज अछि आँखिक चिकित्सा। दृष्टि-दोषक निवारण। जहिना जीवन मे तहिना लेखन मे-आँखि साफ करब हिनक स्वभाव अछि। वृत्ति आ प्रवृत्ति अछि।

हिनक एही प्रवृत्तिक परिचय अछि प्रस्तुत पुस्तक। एक समय रहय जखन मैथिली कथाक विषय-वस्तु पंचकोशी मे सीमित छल। सवर्णक सम्पुट मे बन्द छल। मुदा कीर्तिनाथ झाक कथाक व्याप्ति मिथिलाक दियादी झगड़ा सँ पंजाबक आतंकी दंगा धरि अछि। संतानहीन बहिरीक व्यथा सँ गोधरा-कांडक कथा धरि अछि। काटर-प्रथाक पर्यवसान रीता आ सलीमक विवाह मे तथा दाम्पत्य-जीवनक सुखक सुगन्धि रति आ समीरक सहवास मे भेटब नव दिशाक संकेतक थिक। आशय ई जे एहि कथा सभ मे पुरान सँ नव दिसक प्रयाण अछि। कथानक सँ कथ्य धरि, भाषा सँ ट्रीटमेन्ट धरि मे नवताक आग्रह अछि। यैह थिक एकर आकर्षण।

किछु पुरान गप्प, किछु नव गप्प कीर्तिनाथझाक अक्षर-कीर्त्तिक स्तम्भ थिक।

किछु पुरान गप्प, किछु नव गप्प

कीर्तिनाथ झा

प्रकाशक :
श्रीमती रूपम झा
16/1 गुरु गोविन्द सिंह मार्ग
लखनऊ छावनी – 226 002

प्रथम संस्करण : 2005

मूल्य : 150 टाका

मुद्रक :
कला मुद्रण,
बुद्धा कालोनी, पटना – 800 001

Kichhu Puran Gapp, Kichhu Nav Gapp
A Collection of Maithili Short Stories by Kirti Nath Jha
Rs. 150/-

माता स्वर्गीया विन्देश्वरी देवी

आ

पिता स्वर्गीय तारानाथ झा

केर

पुण्य–स्मृति मे

कथा सँ पहिने

कथा लिखबाक इच्छा तँ प्राय: तहिए जागए लागल जहिया कथा पढ़बाक ऊहि भेल। मुदा तकरा प्राय: नेना वा किशोर वयसक लौल कहि सकैत छिऐक। मुदा नीक वा बेजाए तहिया जे लिखैत छलहुँ ताहि मे सँ किछु बचल नहिं। जँ सब सँ दूर भूतकाल मे जाइ तँ सत्तरिक दसकक कथा भेटैत अछि जहिया दरभंगा मेडिकल कालेजक छात्र छलहुँ। मुदा ताहि मे सँ एक गोट कथा 'देसी साहेब' (मिथिला मिहिर, 1979) छपि सकल छल।

दरभंगा मेडिकल कालेज सँ पढ़ाइ समाप्तिक पछाति जीविका सेना चिकित्सा कोर मे भेटल जतए वातावरण हमर नेनपन आ कैशोर्यक वातावरणसँ एकदम्मे भिन्न छल। मुदा गाम-घर सँ सम्पर्कक नाड़-पुड़इन तँ कटल नहिंए।

व्यवसाये हम आँखिक डाक्टर छी। मुदा सेनाक सेवाक प्रसादें विगत 23 वर्ष मे उत्तर भारतक सुदूर जान्सकार-सियाचिन सँ ल कए कन्याकुमारी धरि आ पूर्व मे आसाम-अरुणाचल सँ ओखा-द्वारिका धरि भारत-दर्शनक अवसर भेटल अछि, गंगा-गोदावरी सँ ल कए पवित्र सिंधु-सियाड् आ सयोक सन विशाल, किन्तु देश मे अपरिचित, नदीक जलक स्पर्शक अनुभव भेल अछि। जीवन-यात्राक एहि क्रम मे मनुक्खक संसर्ग मे जतय-जे-किछु चित्र-विचित्र देखलहुँ हमर मन पर ओकरे प्रतिक्रिया आ प्रतिविंब थिक हमर कथा सब।

संयोग सँ हमर पहिल कथाक प्रकाशनक पछाति जे किछु छपल ताहि मे छल खलील जिब्रानक उपन्यास 'द ब्रोक्न विंग्स' केर मैथिली रूपांतर 'टूटल पाँखि' (माटि पानि, पटना सँ धारावाहिक रूपें 1984 में प्रकाशित) आ छिट-फुट प्रकाशित किछु कविता।

आब क्रमश: मैथिली मे पत्र-पत्रिकाक संख्या बढ़लै-ए, छपबा-छपएबाक स्रोत सेहो खुजलैए। एहि परिवर्त्तनक प्रसादें पिछला किछु वर्ष मे हमर किछु कथा सब जहाँ-तहाँ छपल तँ पाठक लोकनिक प्रोत्साहन सेहो भेटल। समय-समय पर हमर कथा के पढ़ि जे लोकनि हमरा प्रोत्साहने टा नहिं समुचित सुझाव सेहो दैत रहलाह ताहि मे प्रमुख

छथि डा. शंकर कुमार झा, प्रोफेसर श्रीश चौधरी, पं. गोविन्द झा, श्री भीमनाथ झा आ हमर पत्नी श्रीमती रूपम झा। हम हुनका सभक आ आन-आन पाठकक आभारी छी जे अपन नीर-क्षीर विवेचना सँ हमरा उपकृत केलनि।

सत्यतः एहि कथा सबके एकठाम छपएबाक एखन धरि ने कोनो नेआर छल आ ने प्रेरणा। मुदा विगत किछु दिन सँ आदरणीय डाक्टर शंकर कुमार झाक निरंतर तगेदाए-क प्रतिफल थिक जे अंततः हम अपन कथा सबके पुस्तकाकार छपएबाक निर्णय लेल। तेँ एहि पोथीक प्रकाशनक सम्पूर्ण श्रेय हुनके छनि। हम आभारी छिअनि श्री मोहन भारद्वाज जीक जनिकर सहयोगक बिना हमर काव्य-कृति 'जड़ि' आ एहि पोथीक छपब असंभव छल।

एकटा आओर गप्प : एहि संग्रह मे संकलित कथा सब अछि थोड़, मुदा रचनाक काल दीर्घ छैक। तेँ एहि सबमे किछु पुरान गप्प आ किछु नव गप्प भेटब स्वाभाविक। संगहि, एतेक वर्ष मे मैथिली लेखनहु मे बहुत परिवर्तन भेलैए। तेँ ओकरो आभास ओहिमे भेटब आश्चर्यजनक नहिं।

कथाक विषय मे हम आओर की कहू ? कथा अपन कथा अपनहिं कहए सएह नीक !

27 अगस्त, 2005 **कीर्तिनाथ झा**

क्रम

बहिरीक इनार

पंच परमेसर होइत छथि से तँ सब मानबाले तैयार छल मुदा निसाफ खामेखा एना हेतैक से विश्वास ककरो नहि छलैक । फुसनाकेँ तँ नहिञे । बहिरी केँ मरना कम-सँ-कम चालीस बरख भ गेल छलैए किन्तु, कर्णपुरमे ककरो ओकर नाम बिसरल नहि रहैक । हँ, बहिरी नामक मनुक्खकेँ भले लोक बिसरि गेल हो मुदा 'बहिरी' नाम गाममे अपरिचित नहि भेल रहैक यद्यपि बहिरी नामक केओ छौंड़ी वा माउगि नहि छलैक । आ से ठीके । पहिने गाममे जेना अन्न-पानिक संग नामहुँक अकाल रहै । जँ गाममे रौदी भेलैक तँ कएकटा रौदीआ जनमि जाएत । जँ बेसी बाढ़ि अएलैक त' दहौड़ा । अकाल भेलै त' अकला । आ एकटा भाइ-बहिनक मृत्युक बरख भीतरे केओ जनमल त' घुरना । तहिना गाममे बहिरी, घेघहा, लङड़ा, लुल्हा आ कनहा नाम सेहो अपरिचित नहि होइत छलैक । किन्तु, संयोगे गाममे बहिरी एकेटा रहैक । ओना इहो संयोगे जे मरलाक चालीस वर्षक पछातिओ ओ नाम गाममे ओहिना परिचित छलैक । छलत' ओ अपने निःसन्तान किन्तु, बहिरीक इनार ओकर नामकेँ जिआकए रखने रहैक ।

तहिआ कर्णपुरमे कमलाक बाढ़िसँ लोक कोनो जीवने नहि जीवैत छल । जहां कनेक गर्मी पड़ैक, पहाड़पर बर्फ पिघलैक कि कमलाक धार फुलाए लगैक । आ एकबेर जँ बाढ़ि शुरू भेलैकत' लगाति हथिआ धरि लगारि कए दैक । तहिआ ने छहर रहैक ने कोनो बान्ह । जहाँ धार भरैक कि बाहा, नासी आ चरकें भरैत बाढ़ि बस्ती पर आबि जाइक । आ ओकर संगे अबैक सबटा दुर्भाग्य । मच्छड़, मलेरिया, हैजा, सांग्रही, जर-बुखार आ कोन-कोन रोगे नहि, सांप-कीड़ा, सोसि-नकार, सेहो कमला सनेस मे आनथि । रोग-व्याधिक कारणो रहैक । ने पीबाक पानि, ने रहबाक थम्हगर घर । तेँ यद्यपि काज-करतेबता लोक जरूरतिए करैत छल मुदा घरहट बुझू सबके लगिते छलैक, साले-साल ।

बहिरीकेँ कथीक करतेबता लगितैक । अप्पन बेटा-बेटी रहैक ने । तेँ गाम भरिक नेना-बच्चाकेँ अपनहि परिधिमे रखने छलि । सरिपहुँ, जकरा केओ नहि होइत छैक तकराले सब अपने होइत छैक । बहिरिओक हाल सएह रहैक । बेचारीक बिआह कहिआ भेल रहैक से ओकरा मोन कोना रहितैक । तहिया लोकक बिआह ज्ञान-प्राण

भेलापर कदाचिते होइत छलैक । किन्तु, गाममे प्रचलित कथा छलैक जे ओकर घरवला बावनदास गामक एकमात्र राज-मिस्त्री छल । तकरो एकटा खीसा छलैक । बहिरीक बाप हरिहर खबास केओट सबमे मुँहपुरूख छलाह । दस ठाम लोक चिन्हैत छलनि । पर-पंचैतीमे लोक बजबैत छलनि । जाहि वर्ष हरिहर खबास अपनाले जमाय तकैत छलाह ओही वर्ष बुढ़ा महराजक बिआह कर्णपुर भेल रहनि । गाममे महराजक सासुर मे बंगला-कोठा-बखारी सभक नेओ पड़ल रहैक । सबटा राज-मिस्त्री बाहरेसँ अबैवला रहैक । हरिहर खबास समधिकेँ लोभ देलखिन—"महराज एखनि एहिगाममे कोठे-कोठामय क देथिन । आ हमर गाममे एखनि एकोटा राज नहि छैक । बावनत' नेहाल भ जाएत ।"

समधिकेर मोन डोलि गेलैक । कहलकै—"जहिया होअए घरदेखीले आबि जाउ ।" मुदा गाम आएलत' जातिमे विवाद भ गेलैक । लोकसब कहलकै—"मर, हम आउर सगहा रही । साग-भात ल कए गुजर करैत छलहुँ । ओ सब घिबहा अछि । बाबू-भैयाक आँठि खाइ-ए आ मखड़ै-ए ।"

खूब घोल-फचक्का भेलैक । मुदा बड़ घमर्थनिक पछाति माइन्जन कहलकैक—"ठीक छै, हरिहर, तोरा हिक लागि गेलौ लड़िकापरत' क लैह कुटमैती । मगर समधिकेर कहिहक जे लड़िकाके घर-जमाय बनए पड़तै । हमरा आउर जेना रहै छी—साग-भातमे तहिना एत्तहि रहए । तोरो पूतकरन नहिएँ छौह । जे किछु छलह से कमला माइ अपना पेटमे ल गेलखुन । डीह टा जे बाँचल छह सेहो बहिरिएक हेतैक ।"

आखिरी सएह भेलैक । बहिरी नेनपनसँ बुढ़ारी धरि बहिरीए रहि गेल । मुदा बापक डीह जेहन उसर छलैक तेहने रहलैक । बेचारीक कोखि आबाद नहि भेलैक । कतेक बाबू-भैया-दाइ-बौआसीन बेटा-बेटी लेल भगता-योगी-जप-यज्ञ मे कतेक धन बुकैत छली । मुदा बहिरीकेँ केओ कहबो करैक त' धनिसन । कखनो मोन अकछा जाइक त' दूटा गप्पो कहि दैक—"गै, दै छथिन कमले माइ, लै छथिन कमले माइ । हुनका कहबनि तखनि बुझथिन । ओ त' मोनेमे पैसि जाइ छथिन । तखनि जहिया मोन हेतनि अपने दिन घुरतै ।"

लेकिन कमला माइ बहिरीक दिन नहि घुरऔलखिन । अप्पन सन्तान हो तकर लिलसा कोन मौगीकेँ नहि होइत छैक । मुदा बहिरीकेँ तकर त' मनमे दुःखो छल हेतैक त' केओ बुझलकैक नहि । किन्तु, बहिरीक नाम गाममे लोक नहि बिसरए तकर लिलसा ओकर मनमे अवस्से लागि गेल रहैक । असली गप्प कहू त' मनोरथ त' बड़ पैघ रहैक मुदा लोककेँ जँ कहितैक त' गाममे अनेरे हँसारथ होइतैक । कहितो छैक दछिनक मेघ आ गरीबक मनोरथ एके थिक । तैयो एक राति जखनि टोल निशबद्द भ गेल रहैक बहिरी शीतलपाटी पर फटकीक भीतर आ बावनदास मचानपर जगले पड़ल

रहए त' बहिरी बड़ सहास क कए कहलकै—

सुनै-ए ?

की ?

जँ खिसिआइ नहि त' एगो गप्प कहितिऐ।

कहौ ने।

खिसिएतै त ने?

मर बहिं, कहतै कि बलू बुझौअलि बुझबै-ए।

हमरा एगो मनोरथ होइ-ए।

हँ।

नवारी सँ बुढ़ारी भ गेल। कमला माइ सभक घर-आँगन धने-पूते भरि देलखिन। हमरा बेरमे.......

बहिरीकेँ आगू कहि नहि भेलै।

हुनकर उहे मर्जी। ऐले दुःख किए करै छै। हमरो आउरके जे एनाहित रखने छथिन सएह पार लगौथिन ने। दोहाइ कमला माइ। दोहाइ राजा सलहेस।.....कहैत बावन भक्तिमे दुनू हाथ ज़ोड़ि माथमे लगओलक।

बहिरी कहलकै—ठीके। मुदा कहिओ सोचलकै-ए। ओहि दिन बसन्तीसँ झग्गड़ भेल त' केहन भारी कथा कहि देलक।

की ?

हमरात' सब दिन बाँझी कहिते छले। मुदा परसू हमरा जखनि नहि रहि भेल त' हमहू कहि देलिऐ जे पुजेगरीसँ मथाहाथ नहि दिअबितें त' ओइ पिलपिलहाक भरोसे मनुख रहितें। तै पर हमरा की कहै-ए बुझलकै, हँ, गै, तोरा जकाँ डीहपर गीदड़ त' नहि भूकत। तोरा नामो रहतौ। तै दिन सँ हमरा.....बहिरीकेँ फेर बुकौर लागए लगलै।

बावनदास एहिबेर चुप्पे रहल। बहिरी फेर कहए लगलै......... एहि गामक सब बाबू-भैयाक धी-बेटी बड़के घर गेलै-ए। सब नैहरमे कोठे-कोठामय क दै गेलखिने। उग्रतारादाइ पछिला अकालमे पोखरिए खुना देलखिन।

बावनदास चुपचाप सबटा सुनैत रहल। बहिरी फेर कहए लगलै......

एहिगाममे सब बाबू-भैयाक अंगनामे इनार छनि। लेकिन टोलबैयामे ककर हिम्मत छैक जे जनी-जातिके खलिया घैला ल कए बाबू-भैयाक अगनामे पानिले

पठौतै। तें हमरा आउर भरि बरख खत्ता-चहबच्चाक पानि पीबै छी। आ तैं कातिके माससँ जे कफजारा शुरू होइ-ए से लगाति फागुन-चैत धरि धेनहि रहै-ए। से बलू एगो इनार जँ होइतै टोलपर त'......... ।

बावनदास गुम्म भ गेल। किन्तु, कनिए कालमे ओकरा हँसी लागि गेलै। कहलकै.....

बहिं, मौगीक जाति ! हमरा आउर बाबू-भैयाक परतर करब। बिनु खरचे होइ छै इनार खुनाएब। बलू, डीहो बेचि देबै, भिखारि भ जाएब मुदा तैयो हेतै ?

बहिरी उठिकए बैसि गेलै। कहलकै.....

एकर दुश्मन होअए भिखारि। एकरासन इंटा के जोड़ै छै। एते छथि बाबू-भैया ककरो बहिखत लिखने छै। चोरि-छिनरपन क कए खाइ छी। बोनि-बुत्ता-काज-धंधा जे सक्क लगैए, करैछी, अल्हुआ-मडुआ खाइ छी। ककरो धारने त' नहि छिऐ। बावनदासकें बहिरीक गप्प सुनैत-सुनैत आँखि लागि गेलैक। मुदा बसन्तीक कहल गप्प दगनीक दाग जकाँ उखड़ि गेल छलैक।

दोसर दिन सांझमे बावनदास ब्रह्मस्थानक अङनैक एककात बैसल छल। हाथमहक लाठीकें बीचसँ दुनू हाथे पकड़ि हाथक भरे माथ झुकौने मोनमे गुन-धुन चलि रहल छलैक। एसगरमे एना बैसल देखि बचाइदास दूरेसँ टोकलकै—'भजार, बड़े गुन-धुनमे एसगर बैसल छी।'

बावनदास उठिकए ठाढ़ भ गेल। कहलकै—ब्रह्मबाबाक थानमे अएलहुँ जे केओ भेटत से आइ एत्तहु सुन्ने छैक। गामेपर जा कए की करब। आब अहाँ आबि गेलौं त'.... । टोलो पर त' आब केओ तेहन नहि छैक। तै पर सँ बुढ़िया फूटे तरद्दुत मे द देलक-ए। तमाकू खाएब एक जूम ?

'........दियौ। लेकिन तरदुत की ? बुझलौं नहि।'........बचाइदास कहलकै।

'भजार, कहै छै, राजा दुःखी परजा दुःखी, योगीके दुःख दूना, कहत कबीर सुनो भइ साधो को घर नहि सूना। बाल-बच्चा नहि अछि। माल-जाल नहि रखने छी। काज करतेबता कपारपर नहि अछि। लेकिन बुढ़ियाके किदून मोनमे आबि गेलै-ए। किदून जे इनार खुनबितौं। आब कहू जे ई लोक इनार-पोखरि खुनबै ले जनमै-ए। आ सएह धरम जँ केने रहितौं त' एही योनिमे कहै छै..... ।' कहैत बावनदास एक चुटकी चुनाओल तमाकू बचाइदासकें देलकै।

बचाइदास सेहो कबीरपंथी छल। कहलकै......'भजार, कहै त' छी ठीके। तखनि कहै छथिन साहेब....

चन्दो मरिहै सूरजो मरिहै मरिहै धरनि अकासा ।
चौदह भुवन चौधरी मरिहै काकी करिहै आसा ।

ककर नाम रहतै । तखन एकटा गप्प कहब । बहिरी बहीर अछि, बकलेल नहि । गप्प बड़ गियानक कहलक-ए । हमहू कने सोचै छिऐ ।'

ई कहि दूनू गोटे उठल आ टोल दिस विदा भेल ।

टोलपर पहुँचल त' चिराग-बत्ती भ गेल रहै । टेल्हबासब घूड़मे आगि द देने रहैक । दुनूगोटे ओत्तहि बचाइदासक दलानपर बैसि गेल । कनिएकालमे कोम्हरो सँ आबिकए सुखदेबा सेहो ओत्तहि बैसल त' फेर इनारक गप्प शुरू भ गेलै । सुखदेबा गप्प सुनलकै त' हँसए लगलै । कहलकै....''हौ, पीसा, किदून कहै छै, मोन भेल जे पूड़ी पकबितहुँ......सएहवला गप्प । ने गुड़, ने चिक्कस, ने घी । तखनि छुछे मनोरथे टा ने । तै परसँ तोहर खोपड़ी छौह गाछीक एक कोनपर । बाट जंगलाह छै । धीया-पूता दिनो क' ओम्हर जाइ-ए त' भूत लागि जाइ छै । आ रातिक तँ गप्पे छोड़ह । के जेतह ओतए पानि भरै ले । मानिलैह जे एकटा कच्चा कूप खूनिओ लेलह तँ राति-बिराति जँ ककरो गाय-बच्छा खसि पड़लै त' अनेरे पतिया लगतह । हँ, फैदा बभनटोलिए वला आरू के हेतैक । तोहर डीह बेचबाकए चूड़ा-दही सनतह ।'' कहैत सुखदेबा ठठाकए हँसए लगलै ।

बावनदासकेँ बाजलसन पछताबक होमए लगलैक । मोन भेलैक जे भोकारि पाड़ि कानए लागी । सोचय लागल बेचारी बहिरी ! ने भरि देह कहियो बस्तर देलिऐ, ने भरि पेट खोरिस । तैपर सँ भगवान कोखिओमे आगिए लगा देलखिन । गंगा-स्नान त' दूर कोसी स्नान धरिले भाड़ा नहि जुरल । बुढ़ारीमे बेचारीके एकटा मनोरथ भेलैए त' लोक पतिया-प्रायश्चित लगबै-ए । ठीके कहै छै जाति-भाइ पाते टा बिछबैले होइत छैक । मुदा हमहू एक मर्द छी त' लोक केँ देखा देबैक ।.....बावनदास मोने-मोन सोचलक । लेकिन माय-बाप लगाकए सप्पत नहि खेलक । सोचलक.....सप्पत खाइमे की लगै छै । अनेरे माय-बापकेँ किएक गारि देबैक ।

माय-बापक स्मरणसँ हृदय आदरसँ भरि अएलैक । मोने-मोन गोड़ लागि कहलकै—अहाँसब सरगमे राज करू हमरा आउर नरकमे जीबै छी !

अङना आएलत' बहिरी रोटिपक्का पर रोटी पाथिकए द देने रहैक आ पतलोइक आंच फूकि रहल छलैक ।

कहलकै......खेतै ?

.........दौ ने । ....बावनदास कहलकै ।

.........किछु सोचलकै ?

........की सोचबै । तों जिनगी बिता देलैं एही खोपड़ी मे, हमरा बुते की देल भेल ।........बावनदासक गला बाझए लगलै ।

..........मर, लोक-वेद की दै छै । भरि-पेट खोरिस आ भरि देह नूआ-बस्तर । तै ले हम कहियो किछु कहलिऐ-ए ?

.........से नहि । हमरो त' मोन होइ-ए....... ।

...........अनेरे मोन छोट करै छै । हमत' अहिंना किछु कहि देलिऐ ।

............अहिना नहि । बड़ नीक गप्प कहलकै । लेकिन सएह सोचै छिए । कोना हेतै ।

........कोनो दिन बीतल जाइ छै ।

खैर, बहिरी अपन मनोरथ बावनकेँ कहने त' रहैक किन्तु, ई सोचिकए नहि जे ओकर मनोरथ पूर हेतै । मनोरथ मनोरथ छिऐ । कतेक केर मोन मे मनोरथ होइ छै आ मनोरथे रहि जाइत छैक । लेकिन बावनदास बहिरीक इनारकेँ अपन पुरुषार्थक जांच बूझि लेलनि आ चौबीसो घड़ी हुनकर सुधि ओहीपर रहए लगलनि ।

आखिर अपने लोक काज अएलैक ।

माइनजनकेँ गप्प बुझैमे एलैक त' नीक दिन तका क टोलबैयाकेँ ल कए ब्रह्मस्थानमे बैसाड़ केलक । कहलकै....सबके धीयां-पूतातँ मुँहपुरूखे छौ । केओ मोरङ कमाइए त' केओ दिनाजपुर । ककरो भेलौए जे दसगर्दाक गप्प सोचितैं । हमआउरत' पोखरिक पानि पीबैत-पीबैत बुढ़ा गेलहुँ । कहै छै मौगीक जाति ! ई गप्प त' आखिर बहिरीए केँ फुरलै । बेचारीकेँ सखापात नहि छै । तखनि एकटा मनोरथ भेलै-ए । सुखत' टोलबैए करत । पार लगा दै जाही ।

माइनजनक गप्प सबके नीक लगलै । मुदा हेतै कोना ? ककरा छै जमीन आ ककरा जथा । गरीबक जीवन देवाल बराबरि । भरि टोलबैया त' महराजक जमीनपर बसै-ए आ तही तरे बहिखत लिखने अछि । तखन चाही उंचका जमीन जे बाढ़ि मे नहि डूबै । आ बान्हक कातमे जे भरि टोलबैया पानि भरि सकए लेकिन ककरा छै आ के देतै एहन जमीन बहिरी आ बावनदासके । बैसले-बैसल पंच सब भरि टोलपर नजरि घुमाबय लागल । जकरा जे फुरलै, कहलकै । अन्तमे माइनजन कहलकै—सुनै जा, राजा-महराज त' अपन जमीन देतौ नहि हमरा आउरके इनार-पोखरि खुनबैले । तखनि अपनेमे जकरा जे छह बन्दोबस्त करए पड़तह ।

बचाइदास कहलकै—मीता हमरा ऐगो गप्प फुराइ-ए ।

सब साकांछ भेल । माइनजन कहलकै....कहिऔ ने ।

बचाइदास कहए लगलै....ठिठराके पांच धूर जमीन बान्हक कातमे छै । कहियो दू सेर मडुआ होइत छै, कहियो दसटा अल्हुआ । बासडीह एक कट्ठा छै । तै मे तीनू बेटाक घर त' बैसतै नहि । ने एहि पांच धूर सँ कोनो होना-जोना । इएह दौ पांच धूर इनार ले आ बावनदास अपन डीहमेसँ एक कट्ठा द देथुन । जखनि मरि जेताह तखनि एखनि जे खोपड़ीवला एक कट्ठा छनि से जे आगिसराध करतै तकर हेतै । ई कहि बचाइदास चुप भ गेल ।

बावनदासके गप्प सुनिकए कने हूबा भेलै । किन्तु तुरते मोन छोट होबए लगलै, दू कट्ठा बाड़ी छले । दू टा भाटा-मूर, दू मूड़ी सागो होइ छले । आब सेहो नहि हएत ।

ठिठरा जखनि ई गप्प सुनलक त' मोन लोभा गेलैक । सोचलक ठीके गप्प । बान्हक कातक पांच धूर जमीनक कोन ठेकान । कहियो उरमा उठतै, कहतै, बान्हपर माटि दै जाही । महराजक मोटर अओतै । बस, भ गेल । माटिकाटिकए खेतकेँ खन्ता बना देत । नहि त' कोनो बाबू-भैयाक मोन हेतनि आ नापी करौलनि त' कहता, तोहर जमीन । बान्हमे चल गेलौ ई ढिमका हमरेमे पड़ैए । अइ बदलेनसँ मंगला-जंगलाक घरो बैस जेतै । बाकी अगाड़ी बान्ह बनउ कि नापी हउ जाने बावनदास !

जखनि बड़ीकाल धरि केओ किछु नहि बजलै त' माइनजन बावनदासकेँ लक्ष्य क' कए कहलकै....की सोचै छी, मीता ?

बावनदासकेँ एकाएक भक्क टुटलै....ऐं, हम की सोचब । सब गोरे मिलिकए जेना पार लगाबी । बचाइदास ठिठरा दिस घूमल.....की हौ ?

........हम कि दस गोरेसँ बाहर छी । जे कहै जेबहक सएह नें हेतैक। ....ठिठरा मोने-मोन खुशी होइत कहलकै ।

दोसर दिन टोलपर गप्पक गलन्जर उड़ि गेलैक । बहिरी इनार खुनाओत । जकरा जे फुरै, बजै । केओ कहलकै....इनार जे खुनओतै से कएक दिन रहतै । कमलाजी जँ एकबेरि सरि भ कए पांक आ बालु द देलखिन त' एके बरखमे इनार निपत्ता भ जेतै । बहिरीकेँ नहिं रहि भेलै । कहलकै....भूइकम्पमे किदून सुनै छिऐ, राजनगरोक कोठा आ मन्डिल सब ढहि गेल रहै, तैं कि आब गाममे कोठा नहि बनहै छै लोक ? हमरो इनारके उहे एकबाल हेतनि कमलामाइक त' बेस ।

लेकिन बहिरी मोने-मोन बड़ खुशी भेल । साँझमे एसगरे बैसल-बैसल बावनदास जौड़ बँटैत रहै त' बहिरी लग सहटि कए एलै । कहलकै........

एते दिन ऐ गाममे बीति गेल । सखा-पात नहि भेल । जकरा जे फुरलै, कहलक । एकरा मोन मलिन नै भेलै । कतेक सर कुटुम लोभ देलकै, सौतिन बियाहिकए नहि अनलक । कोनो छौड़ी-मौगीसँ नेरहा नहि लगौलक । बहीरेत' रही ।

मुदा आब लगैए हमरो मनोरथ पूर भ जाएत। बाल-बच्चा नहि भेल त' की भेलै। इनार जँ खूनल गेलै त' मुरेड़ा आ चबूतरा बनाइए दितै, जाग सेहो करा दितै। बूझब बेटे-बेटीक बियाह कुटमैती केलहुँ-ए। बड़ गुन मानबै।....कहैत कहैत बहिरी चून-तमाकुल बुढ़ाक लग आनिकए देलकै आ अपने आओर लग सहटिकए हुक्का ल कए बैसलि।

बावनदासकेँ फेर हँसी लागि गेलैक। कहलकै अलबत्त कही तोहर मनोरथ के। इनारले बापक आधा डीह त' दइए देलही। आब जे बचल छौ तकरा कोड़ब शरू करै छी। कोन ठेकान बाप लोटामे चानीक रूपैया गाड़िकए द गेल हउक!

बहिरीकेँ छक द लागि गेलैक....कहलकै–नवारीमे त' कहियो बात-कथा नहि कहलक। आब बाप-पुरखाके उकटैए त' बेस।

बावनदासकेँ कहलापर पछताबक होअए लगलै। कहलकै....अनेरे मोन छोट करैए। हमत' अहिना किछु कहि देलिऐ। अङनाक ई सीसोक गाछ नहि देखै छै। बँहि, एकरे बेचि देबैक त' पचास टका स कम देतै। सब खरचा त हम ओही मे सँ निकालि देबै। इनार खुनै मे त जन नहिए लागत। हजार-पांच सौ इंटा लगतै। तकरो जोगाड़मे बावनदासकेँ मोसकिल हेतै? इंटा जोड़ि त हम अपने देबै। रहलै जाग। से भेलै त' आठ टा बाभनकेँ चूड़ा-दही-चीनी। कतेक खेतै?

बावनदास जहिना बहिरीकेँ कहने रहैक, इनार खुना देलकैक। जाग करबा देलकैक। जहिया इनारक जाग भेल रहैक बहिरीकेँ भेल रहैक ओकर कोखि अबाद भ' गेल छलै। गाममे नामत' रहतै। नाम बुड़तै त ने। बेचारी भरि दिन उपासले रहल। ब्राह्मण-भोजन भ गेलै त' जातिकेँ सेहो सबजाना नोत खेऔलकैक। जाति आ कुटुम पातपर बैसल रहै त' बहिरीक आँखिसँ नोर बहए लगलैक। बेचारी आँचरसँ नोर पोछैत, आबिकए कहलकैक....काका, भैया, बौआसब, एहन दिन भेल जे तों सब अइ आङनमे आबिकए पात बिछौलह। भगवान कोखिकेँ वएह केलनि। मरबो करब त' एहि अङनामे के बजौतह। मुदा एतबा अबस्से कहबह जे तोहर सभक साहिस सँ आइ बहिरीक बाँझ हेबाक दुःख दूर भ गेलैक।

कुटुमोसब खूब खुशी भेल रहै। सब कहलकै......भले, बहिरी डीह बदलि कए इनार खुनौलक मुदा यश-यश भ' गेलै। जाबे ई इनार रहतै गाममे बहिरीक नाम नहि मेटएतैक। इनारे छिऐक ओकर सखा-सन्तान।

फुसना तहिया मोसकिलसँ दस बरखक छल हएत। मुदा बापक संगे भोज खाइले गेल त' आँचर ओड़ने, नोथारीक पतिआनीक बीचमे ठाढ़, बहिरीकेँ ओ देखने रहैक। तैं जखनि छियासठि इसबीक बाढ़िमे इनार भत्थन जकाँ भ गेल रहै त सब छौड़ा मारड़ि केँ ढकढिआरि कए फुसना इनारकेँ उड़हबौने रहए। यद्यपि ताधरि गाममे

तीन-चारिटा कल गड़ि चुकल रहै । एकटा दुसधटोलीमे, एकटा, मियांटोलीमे, एकटा डिहबारक थान लग आ एकटा सुर्यूमिसरक दरबज्जा पर । मुदा पछबारिटोलमे लोक तखनहुँ बहिरीएक इनारक पानि पीबै छल । कारण जकरा ओकर हिस्सक लागि गेल रहै तकरा कलक पानि वा आन इनारक पानिसँ छाके नहि पुरैक ।

किन्तु, एहिबेर फुसना गाम आएल त' इनारक हालत देखिकए मोन गह्वरित भ गेलै ।

टोलबैयासभक अड्ने-अड्ने कल भ गेलैए । तै परसँ सुनै छिऐ दसमीसँ पहिने बहिरीक इनारमे केओ मरल कुकुर खसा देलकै । तखन के कराओत ओकरा साफ-शुद्ध । आब टोलपरक सब अपन अड्नाक गदौस बहिरीएक इनारमे खसबैए ।

फुसनाक मोनमे बड़ दुःख भेलै । मुदा कहितै ककरा ? बचाइदास, ठिठर कामति, मंगला सब मरि चुकल छैक । तथापि ओ इनारकेँ फेरसँ साफकए उड़ाहबाक जोगाड़ करए लागल । मुदा संग दैले, हठे, केओ तैयार नहि होइक । सभक एके गप्प । आब की हेतै इनार ल' कए । अड्ने-अड्ने त' कल छै । बाट-बटोही केओ पैदल चलैए जे थाकिकए पानि पिबैले इनार पर बैसत । फुसना केँ तैयो सबूर नहि होइक । कहलकै....कहै जा, गाड़ी-रेल-हवाई जहाज त' चलिते छै तेँ बैल गाड़ी बन्न भ गेलैए । बेचारी बहिरी दीदी जहिया ई इनार खुनौने छल आ ओकर जाग केलक त ओकरा भेल रहै जे बेटा-बेटीक बियाह केलक । ओकर कोनो निसानी त' छैक !

मुदा गप्प सोझ रहै तखन ने । असलमे आब गप्प रसे-रसे खुजलैए । इनारक जमीन गैरमजरूआ आम मे पड़ै छलैए । भोले राउत आब ओकरा खाप करौलनि-ए । चारिटा बेटा छनि । इनारवला पाँच धूर जमीन जँ भेटि जेतनि त' घरो बैसि जेतनि आ बाटो भेटि जेतनि । तैं ओ आइ पंचैती बैसौने छलाहे जे फुसना अनेरे बलवा करै-ए । टंटा ठाढ़ करैए ।

खैर, पंच सब जखनि ब्रह्मस्थान मे जमा भेलै आ फुसनाकेँ पुछलकै जे तोरा ने आरि मे छौ आ ने हिस्सामे त' राउतकेँ किएने घर बैसए दै छही त' फुसनाकेँ बुकौर जकाँ लागए लगलै । ओ कहलकै......पंच, अहाँ लोकनि परमेसर छी । अही ब्रह्मस्थान मे गौआँसब मीलिकए बहिरीकेँ इनार खुनेबाक जगह देने रहैक । आब एकरो जँ माटिमे मिला देबैक त' बेचारीक नामो कतए जेतै ?

जीतन मरड़ ध्यानसँ सूनि कहलखिन.......गप्प त' तों ठीक कहै छह । मुदा गाममे तहिया लोक कम रहै । आब सब केँ पलिवार बढ़लैए । जमीनत' नहि नमरतै । तखनि त' लोक अहिना गुजर करत । आ तैपर सँ आब इनारक काजो त' नहि होइ छै ।

फुसनाक बयस बड़ भ' गेल छैक । एखनि तक नौकरीक जोगाड़मे कतए-कतए ने घूमल अछि । कहलकै—मरड़ से त' ठीक । इनार कोन, बलिराजगढ़क छहरदेबारीए कोन काजक छैक । सरकार बचाकए रखने छै किने । ककरो निसानी छिऐ । बहिरीक इनारक जमीन ककरो ब्रह्मोत्तर त' नहि छिऐक । बेचारी एकर बदलेनमे बाप-पुरुखाक डीह देने छलै । आब केओ गैरमजरूआ कहिकए हड़पि लै इएह निसाफ छिऐ ?

भोले राउतकेँ बड़ तामस चढ़लै । ओ बमकैत बाजल—ऐनदारी त' बड़ करै छेँ । बहिरी महराजो सँ पैघ छलैए । आब हुनको किलाकेर इंटा बिका रहल छनि । समय-समय केर बात छै । तखनि पंच आउरकेर निसाफ !

पंचक निसाफ भ गेलै । काल्हिएसँ बहिरीक इनारक इंटा उखड़ब शुरू भ गेलै । फुसना ओहिबाटे जाइत छल त' केओ लग आबिकए किछु कहलकै । फुसना कहलकै.....आब बोनहीए गाछी टा बचल छैक । बहिरी-बावनकसंग बाप-पितामहक सारा सेहो छैक ओत्तहि । करै जो जोतिकए आबाद । जोड़ै जो दुमहला !

अंतिका

अक्टूबर-दिसम्बर, 2002

येनास्य पितरो याता...

मेचुका गामक सियाङ नदीक किनार पर बड़का पीपरक गाछक चारूकात जे गौंआँ सब ओहि दिन जमा भेल छल तकरा सबले ई दृश्य एकटा नव अनुभव छलैक। नेनपनक टुअर सोनम सेनाक सिपाही-ए टा तँ छल, कोनो सेनानायक नहिं। मुदा ओकर शव-यात्राक दाबी कोनो वीर योद्धासँ कम नहि रहैक।

जवान सँ अफसर धरि औपचारिक वरदी, तगमा, बन्दूक-राइफल सबसँ सजल। जेना ई जुलूस शव यात्रा नहिं रण-यात्रा होइक। सत्ते, सैनिकले दुनू यात्रा मे एके रंग निरपेक्ष भाव रहैत छैक।

पीपरक गाछतर राष्ट्रीयध्वज सँ झांपल शव कें चिता पर रखलाक पछाति सब केओ बेरा-बेरी आबिकए फूल-माला-हार आ सम्मान समर्पित कएने रहैक आ तकर पछाति पंक्तिबद्ध सम्मान गार्ड द्वारा राइफल सँ हवाई फायरिङ्ग भेल रहैक। मुदा तकर पछाति जे भेलैक से दृश्य सबकें चकिते टा नहि मुग्ध क' देने रहैक। कंपनी कमांडर मेजर साहेब स्वयं अपने सोनम कें मुखाग्नि देने रहथिन।

एतुका लोकसबकें मोने छैक। कतेक वर्ष पूर्व सोनम सेनाक ट्रेनिंग समाप्त कए जहिया मेचुका वापस आयल छल त' ओकर बयस बरख सतरह वा अठारहेक छल हेतैक, उन्नैस त' नहिं-ए-टा। लोक कहैक—सेना में भरती करबैले बयस बढ़ाक लिखौने हेतैक। बचहोने तँ लगैत छैक। ठीके ताधरि सोनमकें मोछक पम्ह धरि नहिं देने छलैक।

मेचुका द एकटा कहबी प्रसिद्ध छलैक जे ''एतुका लोक जीवन मे दुइ-ए बेर नहाइत अछि, एकबेर जन्मक पछाति आ दोसर खेप मरला पर।'' किन्तु, सोनमक प्रतापे जेना एतुका संस्कृतिए बदलि गेल छलैक। एहिठाम, जतए, एहि पहाड़ी नदीक जड्डर पानिमे लोककें पयरो देबाक सहास नहि होइत छलैक सोनम ओहि नदी मे गौंआ छौंड़ा (आ सुनैत छिऐक छौंड़ीओ) सबके हेलब सिखाएब शुरू केने रहैक।

मझोलबा कद, गठल शरीर, औंठियाकेश, पहाड़ी पीअर गोराई, छोट-छोट आंखि आ पीचल सन नाक; सोनम 'गोरखा' सिपाहीक टिपिकल नमूना छल। दौड़ै मे

खरहा सन द्रुत, गाछ चढ़ै मे बानर-लंगूर सन आ हेलै मे माछ-सोंसि-नकार जकाँ महारत छलैक सोनमकेँ । युवक-युवतीक बीच आओर के 'हीरो' हएत !

तैं गाम भरि मे जँ ककरहु घर मे माछ-मासु-मुर्गीक तीमन बनितैक त' सोनमक बखरा रहबे करितैक । तैं आइ जखन-जखन सोनमक, सियाङ नदीमे डूबि, मरबाक खबरि गाममे पसरलैक तँ भरि गाम मे, बतर, ककरहु चूल्हि में पजार नहि पड़लैक । चारूकात पहाड़-टीला टेकरी सँ मौगी-पुरूख-बूढ़-बुढ़ानुस धरिक धर्रोहि लागि गेल रहैक । सभक मुँह सँ एके गप्प—देवताकेँ बलिए लेबाक छलनि तँ सोनमे किएक ? एहन त' कहिओ नहि भेल छलैक ।

जहिया हम पहिलबेर मेचुका गेल रही हमरहु मोन अत्यन्त उत्साह सँ भरल छल । कारण ओहि स्थानक प्रसंशामे अनेकबेर लोकक मुँहसँ सुनने छलहुँ जे ''मेचुका अरुणाचल प्रदेशक स्विट्जरलैंड थिकैक ।'' आब स्विट्जरलैण्ड मे की छैक आ मेचुका मे की नहि तकर लेखा-जोखा के देत ? ओना बाहरी लोक ले इएह कोनो कम छलैक जे, असली वा देसी कोनो स्विट्जरलैण्ड मे आएल छी । ई गप्प भिन्न जे अरुणाचल प्रदेश मे अरुणक किरण भलहिं सबसँ पहिने पहुँचैत होइक किन्तु, स्वतंत्रताक पच्चीस नहि पैंतीस वर्षक बादहुँ आसाम सँ मेचुका धरि सड़कमार्ग नहिं पहुँचल रहैक । जे-से, मुदा पहिले दर्शन मे, ठीके, मेचुका हमरो मोन मोहि लेने छल । उत्थर सन उपत्यका । चारू दिस वीरान पहाड़ किन्तु, चोटी सब हिमाच्छादित । जेना खढ़क घरक मठहट चानीसँ पाटल होइक । किन्तु, एहि सभक अतिरिक्त जे प्राकृतिक अवदान मेचुका केँ नैसर्गिक कमनीयता प्रदान करैत छैक ओ थिक कल-कल करैत सियाङ नदीक नील, शीतल जलधार ।

समतल भूमि हो वा पहाड़ नदी सबठामे जीवनदायिनी मानल गेलै-ए । चाहे ओ मिस्र केर नील हो, इरान-इराकक युफ्रेटिस-टिगरिस वा भारतवर्षक सिंधु, गंगा आ यमुना । लोक एहि धार सबकेँ अनेरे मायक पद नहि दैत एलै-ए । मेचुकाक सियाङ नदी सेहो मेचुकाक माता थिकी । एहन शीतल, निर्मल-निश्छल आ पवित्र जल जे सामनेक पहाड़ पर कठोर पाथर बनल चमकैए मेचुकाक घाटीक स्पर्श पबिते कोमल कविता आ मधुर संगीत जकां प्रवाहित होमए लगैए । तेँ जे मेचुका धरि गेल अछि तकरा बूझल छैक जे ओतुका जनमानस मे कतेक कथा-लोकगीत आ संस्मरण सियाङ नदीक चारूकात बीनल छैक । तेँ एहिठाम जे कोनो सामुदायिक पाबनि-तिहार होइत छैक सियाङ केर तकर सनेस अबस्से भोग लगाओल जाइत छलनि । किन्तु, ओहि दिन सियाङ नदी सभक भर्त्सनाक लक्ष्य बनल छलीह ।

एतुका लोककेँ एखनहुँ मोने छैक । 1962 ई.क भारत-चीन युद्ध । ओहिसँ

बरख तीनेक पहिने सैकड़ो तिब्बती शरणार्थी परिवार सीमाक ओहिपार सँ भागिकए अरुणाचलक मेचुका, टूटिङ, वालोङ, बोमडिर सँ ल कए तेजू धरि शरण लेने छल। मेचुकाक मूल निवासी सब तँ, कतेक गोटे, दिन दुपहरिआ सँ ल कए रातिक अन्हरिआ धरि मे सियाङ पार क' कए मेचुका सँ भागल छल। कोरा आ कान्ह पर बच्चा, कांखतर पाठकेर पोथी आ माथ पर मोटा-मोटरीक बीच मे पद्मसंभव केर मूर्ति, तंखा' आ आसन। आगू-पाछू कतेक केँ घोड़ा आ मिथुन (जातिक) गाए सेहो रहैक। किन्तु, दोहाई भगवान बुद्ध, ककरो किछु भेल नहि रहैक। किन्तु, ओहि दिन, सोनमकेँ मृत देखिकए लोकक आँखि मे सियाङ सद्य: प्रवाहित भ' आएल रहथिन। मुदा सियाङ केँ माया नहि भेलनि ?

हमरा मेचुकाक अपन प्रथम यात्रा बेर-बेर ओहिना मोन पड़ि अबै-ए। हवाई जहाज पर सँ मेचुकाक इलाका एकटा पिक्चर पोस्टकार्ड जकाँ लागल रहए। देशक एकटा सुदूर प्रान्तक मुफस्सिल गाँव। शहर बाजारक गली-मुहल्ला-चौक-सिनेमा-होटल किछु नहि। अपन सूटकेश आ बेडिङ्ग ल कए जखनि अफसर मेस पहुँचि चारूकात दृष्टि दौड़ौने रही त' लागल छल मेचुका ठीके स्वर्ग थिक। नदीक किनार पर अवस्थित मेसक बरामदा नदीएक दिस रहैक। बरामदा पर राखल कुर्सीपर बैसि जखनि अपन फेफड़ा मे भरिमोन पहाड़ी हवा भरैत रही त' अर्दली पैघ चीनी मिट्टीक मग मे नोनगर-मक्खन युक्त चाह आ प्लेट में बिस्कुट राखि गेल छल। गर्म चाहक चुस्की लैत जखनि नजरि आगू उठाओल त' अगिला पहाड़ी पर एकेठाम घोदा-माली भेल अनेक रंगक कतेक पताका देखबामे आएल छल। हमर आँखि मे प्रश्नसूचक भाव देखि थोंडुप कहने छल—'वएह थिकैक मेचुकाक ऐतिहासिक गोम्पा* ।'

—अच्छा ?

—हँ।

मेचुका सन सुदूर इलाकामे जे सैन्य, पुलिस वा नागरिक रहैत अछि तकरे बूझल छैक ओतुका जीवन कतेक आ केहन स्थिर वा गतिहीन होइत छैक। तें भरिदिनक बैसाड़ी केँ देखैत सोचने रही, प्रतिदिनजँ बेरा-बेरी एक-एकटा पहाड़दिस टहलवाले निकलि जाइ त' मासदिन निकलिए जाएत। आ तेँ पहिल दिन गोम्पा-ए-वला टेकरी पर चढ़ल रही।

गोम्पा मे ओहिदिन झुनकुट बूढ़ लामा लेगडुप अपन आसने पर बैसल छलाह। ताधरि समतल भूमिसँ अबैत सिपाही-अफसर-मोलाजिमक सम्पर्क मे अबैत-अबैत लेगडुप क्रमश: हिन्दी सीखि गेल छलाह।

मेचुकामे बस अबैक त' बाटे नहि छलैक, रेलक कोन कथा। आ हवाई जहाज

गरीब लामा कें कतए सँ जुरतैक । नहि त' एहि शरीर के छोड़बासँ पूर्व बोधगया जयबाक बड़ मनोरथ छल से लेगडुप कहने छलाह ।

बूढ़-पुरान लोक अपने-आपमे इतिहास जकां होइछ । आ प्रत्येक व्यक्ति हस्तलिखित ग्रन्थक एकमात्र प्रतिजकां । मानस-पटलक प्रत्येक पन्ना पर परत-दर-परत इतिहास अंकित जे ओकरा संगहि चल जाइत छैक । तखनि ने प्रत्येक व्यक्तिक दृष्टिए विशिष्ट होइत छैक आ ने प्रत्येक व्यक्ति कैमराक रील जकां अपन अनुभव कें जोगाइए क' राखि पबैत अछि । तथापि की पता स्मृतिक गुदड़ीक अवगुंठन मे कखनि, कतए कोन लाल भेटि जाए । हमहूँ ओही लालक लोभें जखनि-तखनि लेगडुप लग पहुँचि जाइत छलहुँ ।

एकदिन लेगडुप कहए लागल छलाह । कोना 62 ई. में चीनी लाल सेनाक समूह मेचुकामे भरि आएल रहैक । आक्रमणक कथा कहैत-कहैत लेगडुपक छवि पर विगत संकटकजे छाया साओन-भादवक कारी मेघ जकां घनीभूत भ आएल रहनि से आइओ हमरा बिसरल नहिं अछि ।

कहने छलाह—'हमरा लोकनि राति मे सूतए गेल रही त' किछु नहि रहैक । किन्तु, सुतली राति मे जखनि एकाएक पैघ-पैघ धमाका भेल रहैक आ लोकसब डराकए उठल आ बहराएल छल त' किछु नहि फुरएलैक । ताधरि त' एहिठामक सेना आ पुलिस चौकी कें घयामी‡ सब रौंदि चुकल छल । अगिला पंहाड़ी पर जे सेनाक दल रहैक ताहिमे सँ त' केओ बँचबे नहि कएलैक, की कहू, वालोङ् इलाकाक एकटा पहाड़ी त' एखनहुँ नर कंकाल सँ चून सन उज्जर भेल छैक । ओहि दिन भोर होइत-होइत त' चीनी सेना पूरा हवाइ-पट्टी, पुलिस चौकी आ पहाड़ी पर भरि गेल रहैक । तकर पछाति ओकर सभक एकटा दल सबटा तिब्बती शरणार्थीकेँ ढकढ़िआरिकए एहि गोम्पामे जमा केने छलैक आ परतारब शुरू केने रहैक—तों, सब त' अपन भाइ-बंधु थिकह । हमरा सबमे कोन बैर ? कथीक दुश्मनी ? घर घूरि चलह । चेयरमैन माओ कें रहैत ककरो कष्ट नहि हेतैक । क्षमताक अनुकूल काज करिहह आ आवश्यकताक अनुकूल कमाइ भेटतह । आखिर अपन देश त' वएह थिकह ।

लोकक मोनपर एहि उपदेशक की असरि पड़लैक से त' नहि जानि मुदा मेचुका सँ केओ शरणार्थी तिब्बत वापस गेल हो से लेगडुप कें मोन नहि छलनि ।

जनवरी 1983 क पछाति हम जहिया मेचुका गेलहुँ लेगडुप सँ भेंट अवश्य करैत छलहुँ । लोक केर कहब छलैक, लेगडुप निर्वाण प्राप्त क' नेने छलाह । हुनका एखन धरि कहिओ, केओ, ककरो सँ लड़ैत, हर्ष-विषाद में ठठाकए हँसैत वा नोरे कनैत नहि देखने छलनि ।

मुदा भरि मेचुका में ओहिदिन अनघोल छलै—''सोनम कें मृत देखिक' आइ जखनि लेगडुपक कोंढ़ सेहो फाटि गेलनि त' गोम्पाक तथागत बुद्धक आंखिसँ सेहो भट्-भट् नोर खसलनि-ए।''

तें भोरहि सँ गोम्पामे अनवरत प्रार्थनाक क्रम जारी भ' चुकल छलैक।

सोनमक अकस्मात् मृत्युक कारणे ओहिदिन हमरहु फेर मेचुका जाए पड़ल छल।

हमर मेचुका पहुँचलाक किछुए कालक पछाति गौंआँ सभक समूह गोम्पा दिस घूमैत, क्रमशः छँटि गेल रहैक। तथापि यूनिटक सीमानक कंटैया तारक ओहिपार एकसरि ठाढ़ि एकटा युवती पर नजरि पड़ल छल। हृष्ट-पुष्ट आ गोल-गोल गाल पर पहाड़ी लालिमा। सुखाएल अस्त-व्यस्त केश आ नोर सँ डब-डबाएल लाल-लाल आंखि। पूछला पर थोंण्डुप कहने छल—

सिमानक ओहिपार एकसरि ठाढ़ि लड़िकी डोल्मा छलि।

आ एक बेर शुरू भ' गेल त' थोण्डुप कहितेगेल—डोल्मा, जहिना भगवतीक नाम तहिना सुन्नरि आ गुणवती। सोनम त' भाग्यवान छल मुदा.....एहिठाम त' ओना हठे लड़िकी भेटिते नहि छैक, तैपर सँ नीक लड़िकी कतय पाबी। तें तीन-चारि, क़त्तहु-कत्तहु, पांचहु भाइक बीच एकटा स्त्री होइत छैक गाम मे। तें लड़िकी सबकें एतय जोड़ा मिथुन गाए भेटैत छैक दहेज मे। डोल्माक बाप, रिन्जिन कें सेहो जोड़ा मिथुन चाहिऐक जमाए सँ। सोनम तकरे जोगाड़ में लागल छल ताबते एहन घटना भ' गेलैक। जे-से।

सोनमकेर आकस्मिक आ अप्राकृतिक मृत्युक पुलिस आ कानूनी कार्रवाईक औचारिकता पूरा करैत-करैत दिनान्त होमए लागल रहैक। अरुणाचलक एहि उपत्यकामे सूर्य जहिना जल्दी अबैत छथि तहिना झटकारनहि चल जाइत छथि, बेरूक पहर बजैत-बजैत सूर्यास्त होमए लगैत छैक।

मुदा समस्या दोसर छलैक। अन्त्येष्टि ले सोनमकेर केओ निकट वा दूरस्थ सम्बन्धी नहि छलैक। 62 ई.क युद्ध मे पिताक मृत्यु भ' गेल रहैक। माय तहिया छोटहने रहैक। ओकरा केओ भगाकए ल गेलैक कि ओकर मृत्यु युद्धक गोलाबारी मे भेल रहैक, ककरो बूझल नहि छैक। युद्धक पछाति जखनि सब किछु शान्त भ' गेल रहैक त' सोनम सन कतेक नेना सभ लेगडुपहिक शरण मे पढ़ल-बढ़ल छल। ओहि नेना सब मेसँ किछु लामा बनि गेल, किछु उड़ांत भेल आ जहि-तहिं पसरि गेल आ सोनम कें मौका लगलै त' ओ फौजी बनि गेल।

तें जहिया सँ सोनम एहि विशेष सीमा क्षेत्रीय सैन्य बल मे भरती भेल छल इएह

न. 120 कम्पनी ओकर घर आ दुआरि भ' गेल छलैक । कम्पीक बाग-बगीचा, मेस, लाइन्स, फुटबॉल ग्राउंड, हॉकी फील्ड, पिगरी, एभियरी, क्वार्टर गार्ड आ मेन ऑफिसे ओकर संसारक सीमा बनि गेल रहैक ।

1984 ई. मे हम एहि कम्पनी मे छ मास ले आएल रही । तहिए सोनम सँ हमरा नीक जकां परिचय भेल छल । नव-वर्ष लोसर-क अवसर रहैक । लोसरक तैयारी तँ सोनम कहने छल बुझू मास दिन सँ शुरू भ' गेल रहैक । कतेक तरहक भोजन-व्यंजनक विन्यास, कतेक खेल-कूदक नेआर । फैमिली-क्वार्टरक भव्य सजावट । लोसरक दिन अएलैक त' जवान सभक आग्रह पर हमरा लोकनि फैमिली-क्वार्टर दिस सेहो गेल रही । मोन अछि सूबेदार मेजरक पत्नी हठ क देने छलि—"छांङ[1] तँ पीबहि पड़त । कम-स-कम एक बट्टा । आ एके छाक मे ।"

हमर दुविधा देखि ओ बाजल छलि—"ई कोनो अपकार करत ।"

आ हम एके छाक में भरिवट्टा छांङ उदरस्थ क' नेने रही । किन्तु, यावत बट्टा ठोर सँ हँटैत गृहस्वामिनीक सुन्दर जग मे भरल छांङ हमर बट्टा केँ पुन: भरि चुकल छल । किछु आश्चर्य आ कौतूहल सँ हम ओकरा दिस नजरि उठौलहुँ त' सूबेदार मेजर आ ओकर पत्नीक मुसुकाइत छवि पर दृष्टि पड़ल । सूबेदार मेजर बाजल छलाह—

'डॉक्टर साहेब, लोसर में बट्टा खाली हएब त' लेडीक अपमान थिकैक । आ ई छाङ, ई त' हम अपनहि खेतक मडुआसँ बनौने छी । चीनीक शर्बतक बरोबरि । एहिसँ अहांक चेहरा पर खाली लालिमा आबि जाएत आ मोन मस्त भ' जाएत ।

'आ छाङ केर बिना कैम्प केर लड़की सभक संग नाच मे नहि सकथिन'-

ओकर पत्नी पाछू सँ टिपलकै । जे किछु—

हमरा मोन अछि । सम्पूर्ण यूनिटक संग हमरहु कोठलीमे लोसरक उपयुक्त सजावट भेल छल । मोन अछि, हमर दूटा स्टीलक बाकस केँ एकक ऊपर दोसर केँ राखि सोनम टेबुल बनौने छल । ओहिपर चद्दरि बिछाकए बीच में परम-पावन दलाइ लामाक फोटो राखि ओकरा चारूकात फल-फूल, धूप-दीप, माला, मधुर, पकवान, मक्खन-मिसरी सँ सजौने छल सोनम । ई सबटा सामग्री ओ कतए सँ अनने छल से ओएह जानए । हम परिहास करैत कहने रहिऐक—"आब अगिला तीन-चारि दिन धरि हमरा ले जलखै अनबाक काज नहिं । इएह नैवेद्य सब काफी हएत ।" त' सोनम अपन दुनू कान छूबैत जीह कूचि नेने रहए—"नहि, नहि, इ सब पूजाक आखिरी दिन तक रहतै ।"

ओहिदिन जखनि सुदूर हेडक्वार्टर सँ सोनमक उपचार आ आब शव परीक्षा ले फेर आएल छलहूँ त' विगत केर सबटा स्मृति अएना जकां आंखिक आगू झलकि

आएल छल। गोम्पाक टेकरीक नीचा सियाङ नदी ओहिना बहि रहल छलि जेना किछु भेले नहि होइक; स्थिर, शान्त आ महात्मा बुद्ध जकां निरपेक्ष। किन्तु, 'येनास्या पिता जाता....क मंत्रक संग जखनि कम्पनी कमांडर मेजर प्रधान सोनमकेँ तिलांजलि देलखिन त' हमरो आंखि मे नोर ढबकि आएल छल। सत्ते, जीविकाक लोभे भरि देश मे पसरल हमरा लोकनि अपन पिता-पितामह केँ तिलांजलिओ नहि द सकलहुँ आ ने चिता में पांच टा काठी-ए अर्पित क सकलहुँ। किन्तु, जखन सियाङ नदीक किनार पर ओहिदिन हमरा लोकनि सोनमकेँ बंधु-पिता-पितामहक पतिआनी में ठाढ़कए तिलांजलि देलिऐ त' ठीके, हृदय अभिभूत भ' गेल छल।

‡ सूती वा रेशमी पर्दा पर बौद्ध धर्मक देवी-देवताक चित्रकारी वा कढ़ाइ।

* बौद्ध मंदिर।

‡ चीनी जनताक लेल उपयुक्त अनादर सूचक तिब्बती शब्द।

† मडुआ वा साम सँ बनाओल गेल मादक पेय।

भारती मंडन
अंक-दस

एकटा वीर पुरुष

1966 ई॰ गाम मे बहुत गोटे केँ मोन छैक । बहुत कारण सँ । भ सकैत छैक बहुतो गोटेक ई स्मृति भिन्न-भिन्न कारणसँ होइक । किन्तु, ओहि बरखक एकटा स्मृति जे गाम मे सामूहिक छैक ओ छैक ओहि बरखक बाढ़ि । कमलामे ओहि बरख भयानक बाढ़ि आएल रहैक । बाढ़ित' ओना प्रतिवर्ष अबैत छैक आ प्रतिवर्ष पछिला बरखसँ बेसी भयानक । मुदा ओहिबेर बाढ़िसँ लोकक चासेटा नहि दहाएल रहैक बल्कि वास सेहो उजड़ि-उपटि गेल रहैक । पछबरिया छहर जे टूटि गेल रहैक । छहर जे टुटलैक-से-टुटलैक किन्तु जाहिबाटे पानि गाम दिस बहलैक ओहि बाटे जेना कमलाक एकटा धारे बनि गेलैक । सत्ते, ओहि बाढ़िक पछाति आब लोक दसमीक दिन दुर्गाक भसान करए कमलाक धार नहिं जाइत अछि । कमला माइ दुर्गाजीले अपनहि जे लग आबि गेलखिन । ओ त' एकटा गप्प भेल । ओहिबेर त' जेना गामक कायाकल्पे भ गेलैक । कतहु त' कमलाक पांक ऊसरकेँ सोनाक टुकड़ा बना देलकैक आ कतहु उपजाउ धनखेती बालुक ढेर भ' गेल । तथापि आनन्दकेँ से प्राय: मोन नहि छनि । कारण खेत खरिहानक नुकसान त' तकरा होइतैक जकरा खेत छलैक । किन्तु आनन्दकेँ एतबा मोन अवश्य छनि जे बाढ़िमे घरक पुबरिआ देबाल खसि पड़ल रहनि आ तेँ घरक पुबरिआ ठाठ ढहलाहा देबाल पर लटकि गेल रहनि । आ ताहिपरसँ घुरती आसिन-कातिकमे बापजे खाट धेलखिन से जाड़ खेपि नहि सकलखिन । तेँ बेचारे मैटरिकक परीक्षाओ नहि द सकलाह । तकर पछाति आरम्भ भेलैक सतत् संघर्षक कड़ी । 1966-67क वर्ष आनन्दकेँ एहिना एकटा कालखण्डक अन्त जकाँ मोन पड़ैत छनि । किन्तु से पुरान गप्प भेल ।

पढाइ जखनि बाधित भ गेलनि त' आनन्द कोनो गतातीक संग राँची गेल रहथि । मुदा नौकरी भेटब तहियो कोन आसान रहैक । किन्तु, नौकरी त' ओ ताकए जकरा रहबाक ठौर रहैक आ नौकरीक तकबाक समय । त' आनन्द रेलवे प्लेटफार्मपर आर्यावर्त्त, इन्डियन-नेशन, मिथिला-मिहिर, धर्मयुग, हिन्दुस्तान बेचए लगलाह । जखनि जतए कतहु जगह भेटि गेलनि रहि गेलाह । जे जुरलनि खएलनि आ जतए नीनक बेर भेलनि, पलखति भेटलनि, सूति रहलाह । सएह सुनल छल ।

एहि घटनाक करीब तीन वर्षक पछाति एक दिन अकस्मात् पटनाक महेन्द्रूघाट पर आनन्दसँ भेंट भ' गेल । हमहू कोनो परीक्षा देबए पटना गेल रही । एतेक दिनक पछाति आनन्दसँ एना भेंट हएब अत्यन्त सुखद छल । कुशल क्षेम पूछलिअनि । कोना की छी से पूछबाक हठे साहस नहि भेल । अपनहि आनन्द कहने रहथि :

की कहू भाइ, कतेक मनोरथ छल । की-की पढ़ब-गुनब । की-की बनब । किन्तु, मनोरथक महल कमलाक बाढ़ि आ बाबूक मृत्युक संगहि दहि-जरि गेल । किन्तु हिम्मतटा केँ बचाकए रखने छी । पहिने राँची गेल रही । गुजर कहुना ओतहु चलिए जाइत छल किन्तु अपनहिटा रही तखनि ने । विवाहत' बाबुए करा गेल रहथि, तखनि अहाँक भौजीकेँ कहिआ धरि नैहरमे छोड़ितिअनि । अपनेत' राँचीमे जत्तहि धड़, तत्तहि घर जकाँ रही । किन्तु पछिला वर्ष एकटा न्यूज-पेपर एजेंट एतए काज देब गछलनि त' एतए आबि गेलहुँ । हुनके गोदामक लगमे एकटा कोठली ल'किए रहैत छी आ एतहि पेपर-पत्रिका बेचैत छी । जखनि कखनहुँ पलखति भेटैत अछि लग-पासक दोकान सबमे जाकए हप्तामे एकबेर हिसाब-बाड़ी लिखि दैत छिऐक त' ओहूसँ किछु आमदनी भ जाइत अछि । कहुना चलल जा रहल छैक ।

ओहिदिन हमहूं कनेक हड़बड़ीमे रही । आनन्द डेरापर चलबाक आग्रह केने रहथि किन्तु हम जा नहि सकलहुँ । तथापि एतबा धरि भेल जे यदा-कदा पटना जाइत-अबैत आनन्दसँ भेंट भ' जाइत छल ।

किन्तु, क्रमशः हमरो दरभंगा पटना छूटि गेल । मुदा आनन्दसँ सम्पर्क बनैत रहल । कहिओ वर्षमे दू बेर, कहिओ दू वर्षमे एकबेर आ कहिओ पांचो वर्षक पछाति । किन्तु तकर पछाति सेहो क्रम टूटि गेल ।

असलमे 1977क पछाति आनन्दसँ हमर पहिल भेंट 1985 में भेल छल । आठ वर्षक पछाति । ताधरि गंगा आ कमलामे बहुत पानि बहि चुकल रहैक । समाज आ देशाक समस्या सेहो समर्थ भ' चुकल रहैक । पटना शहर मे जनसंख्याओक बाढ़ि गंगाक बाढ़िसँ कम त' नहिए, बेसीए भयावह भ' गेल रहैक । ताहिपरसँ बिहार प्रदेशक जनताक दार्शनिक प्रवृत्ति ! महाराज जनक जकाँ विदेह, महात्मा बुद्ध जकाँ स्थितप्रज्ञ । प्रशासन, अनुशासन आ अव्यवस्था कोनो हद तक ने पहुँचय' 'सब चलता है' । त' तिनसुकिया एक्सप्रेससँ पटना उतरि जखनि बांकीपुर बसस्टैण्ड पहुँचलहुँ त' बुझबामे आएल जे, ''आइ नेतालोकनि कोनो रैलीले सबटा बस ढकढिआरिक ल' गेलाहे तें झंझारपुर दिसुका कोनो बस सांझ सँ पहिने नहि भेटत'' । एतेक दूर—ब्रह्मपुत्रक पार—सँ आएल रही । बच्चा-बुतरू आ कनिया सेहो संग रहथि । किछु बक्सा-पेटी सेहो संग छल । मोन त' बिखिन्न छले । सब गोटे बैसिकए मकैक ओरहा खाइत रही ।

तावत् कतहुसँ आनन्दक नजरि हमरापर पड़लैक । दौड़ैत आबिकए भरिपाँजकए पकड़लक ।

........भाइ, कतएसँ ?

.........की कहिअह, एतए बिहारमे यातायातक तेहन अव्यवस्था छैक जे आसामसँ अबैत सेहो, एखनहुँ बरौनीक बदला पटना द क आएब सुलभ लगैए। एहि बेरतँ आओर परम पहपटिमे पड़ि गेलहुँ-ए । देखिते छहक बसक हड़ताल । संगमे परिवारो अछि ।....हम कहलिऐक ।

आह्लाद सँ आनन्दक आँखि चमकि उठलैक । कहलक—''हद्द भ गेलैक । गाम एकदिन देरीसँ पहुँचबह सएह ने । आइ एत्तहि रहि जाह । डेरा लगेमे अछि । एक दिनक कष्टे सही ।'' कहैत आनन्द, औपचारिक परिचयक प्रतीक्षा बिनु केनहि आगू बढ़किए हमर पत्नीकेँ सम्बोधित करैत कहलकनि—''भौजी हम आनन्द छी । हमर नाम नहि सुनने हएब से त' विश्वास नहि होइए ।'' ई कहैत हुनका उठबाक संकेत देलकनि आ दुनू बच्चाकेँ डेन पकड़ि बिदा भ' गेल । रिक्शा बजाकए सामान केँ सेहो लादि देलकैक । हमहूं सोचल, पटनाक गर्मी, बसक हड़ताल आ बस स्टैण्ड पर दिन भरि बिताएब । तेँ हम कोनो प्रतिवाद नहि केलिऐक । तीन दिनुक थाकल तँ रहबे करी ।

करीब दस मिनटक रिक्साक यात्राक पछाति मछुआटोली वा सब्जीबागक कोनो गलीमे हमरा लोकनि आनन्दक डेरा पर पहुँचल रही । छोट सन डेरा । साफ-सुथरा । सब किछुमे सादगीक (वा साधनहीनताक) छाप । किन्तु, सबटा सीटल-सैंतल । डेराक दुआरि लग जे बोराक टुकड़ी फुट-मैट जकाँ राखल रहैक ताहिठामसँ भितरुका भूमि एतेक साफ लागल जे जूता-चप्पल ल'कए भीतर पैसब पापसन बूझि पड़ल । तेँ सबगोटे जूता-चप्पल खोलि भीतर गेलहुँ । कोठलीक प्रवेश एकटा संकीर्णसन कॉरीडोरक आगू बन्दसन अङनैक ओहिपार रहैक तेँ दिनहुक समयमे बल्ब जरैत रहैक ।

डेरामे पएर रखिते आनन्दक पत्नी आबि हमरा लोकनिकेँ बैसबैत कहलनि—अएबामेत' बड़ कष्ट भेल हएत । हमर डेरात' तेहन दोलहारीमे अछि जे देखिते छी दिनहुमे बिजुली जरैए ।

''........भौजी, अहाँ केहन गप्प करैत छी । ई त' अत्यन्त सुखद संयोग जे आनन्द सँ भेट भए गेल । ताहिपर आनन्दक आग्रहकेँ हम कोना टारितहुँ ।'' हम कहलिअनि ।

........की कहू, कतेकबेर डेरा बदलबाक सोचै छथिन । किन्तु....

हमरा भौजीक, 'किन्तु' क आगू किछु सुनबाक आवश्यकता नहि छल । तावत् रिक्सावला केँ विदा करैत आनन्द सेहो पहुँचलाह ।

........भाइ चाह पीअब ? नेबोवला । दूधकचाह हम नहि पीबैत छी ।

.........हँ, पीअब । कोनो चाह ।.......हम कहलिअनि......''स्टेशन आ ट्रेनक चाह पीबैत तंग भ' गेल छी ।'' हम मनहि-मन चकित रही जे एहि युगमे सब सुख-सुविधा रहैत, ऐल-फेल घर-अङना रहितो माय-बाप-भाइ-बहिन कें दुःख सुखहुमे, अचानक अएलापर, लोक असुविधाक अनुभव करैत अछि तेहनामे सीमित साधनवला आनन्द कोना हमरा लोकनिकें साह्लाद अह्लादिकए ल' अनलके । सत्ते असौकर्यक अनुभव ओकरे बेसी होइत छैक जकरा ओकर हिस्सक एकदमे छूटिगेल रहैत छैक । जँ जीवनमे हर असौकर्यकें दबाड़ि, मोनकें खुशी राखक हिस्सक लागिगेल हो त' असुविधाक परिभाषा बदलि जाइत छैक ।

खैर, पाँच मिनटक भीतरे भौजी लाल चाहक तीन-चारि कप ल' कए उपस्थित भेलीह । सत्य कहै छी, अत्यन्त स्नेह सँ बनाओल ओहि चाहसँ बेसी स्फूर्तिकर कोनो आन प्रिमियम चाह हम कहिओ नहि पीने छी !

ओ दिन हमरा लोकनि आनन्दहिक डेरा पर बिताओल । राति में जखन सब निश्चिन्त भेल हमरा लागल आनन्द हमरा लोकनिक बिछाओन-ओछाओन डेरा क एकमात्र काइलीमे क' रहल छथि त' हम कहलिअनि—नहि, हम तोहरे संग छते पर सूतब । कतेक दिनक जमा गप्प हेतैक ।

प्रायः ओहि आमंत्रणक अवहेलना आनन्दो नहि क' सकल । ठीके, प्रायः भोरहरवा धरि हमरा लोकनि गप्पे करैत रहि गेलहुँ ।

कतेक गप्प भेल रहए । नव गप्प, पुरान गप्प, गप्पक गप्प, मस्तीक गप्प, दुःखक गप्प, सुखक गप्प । किन्तु सबटा गप्पमे लागल आनन्द निराश नहि छल, हताश नहि छल ।

कहलक—''जिन्दगी चलैत जा रहल छैक । तखनि कतेक उतार-चढ़ाव एलैए एहि बीस वर्षमे । हँ, उतार तँ अवस्से । किछु चढ़ावक पड़ाव सेहो अएलैक । फेर उतार । फेर एकटा स्थिर गतिक समरसता । देखै नै छहक गंगाक धारकें । एहिमे जखनि बाढ़ि अबै छै, गति बढ़ै छै, छोट-छीन घास-फूससँ ल कए बड़का स्टीमर जहाज धरि ऊपर उठैए, गति पकड़ैए कखनहुँ डूबौ लगैए किन्तु फेर जखन ऋतु बदलै छैक धारक पाट कम भ जाइत छैक, पानिक गति मन्थर सँ स्थिर दिस बढ़ै छैआ क्रमशः सब किछु स्थिर जकाँ भ जाइत छैक । तखनि खुशी तएबे अछि जे एतेक उतार-चढ़ावमे डुबबासँ बँचल छी । एकबेर एहन भेल छल जे लागल जे आब सब दुःख दूर भ' गेल । पटनाक एकटा प्राइवेट लिमिटेड कम्पनीमे, स्थायीए जकाँ नौकरीओ लागि गेल छल । नीक, काज जोगर दरमाहा भेटैत छल । बैसिकए काज करैत छलहुँ ।

देहोकेँ आराम छल। हमरहु भेल जे चलू एतेक दिन पटनाक सड़कपर बालु फँकलहुँ त' से सार्थक भेल। किन्तु सेहो सुख बेसी दिन नहि रहल। कम्पनी बन्न भ गेलैक। लोक सब बेरा-बेरी छोड़ि-छोड़ि आन ठाम चल गेल। जकरा जतय द्वारा रहैक। हमरा त' ने योग्यते छल ने द्वारा। जैतहुँ कतए ! डेरा छोड़ि देबैक से पहिने बकाया चुकाबए पड़त। गाम चलि दितहुँ। से ओतहु किछु रहितए तखनने। तखन धन्य कही तोहर भौजीकेँ आ धीया-पूताकेँ। हमजँ अस्तित्वले लड़ैत सेनानायक छी तँ ओ सब वीर सिपाही। ने पएरे पाछू घिचैत छथि ने हताशए हमरापर प्रकट करै छथि। एखनि फेर हम एकटा नव व्यवसायमे लागल छी। संयोगसँ एकाएक लोकमे मिथिलाक घर-दुआरि-देवाल-मड़बा-कोबड़ाक सूर्य-चन्द्रमा, बाँस-पुड़ैनि, कनिआ-वर, हर-हरवाहक चित्रकला आ सीकी-खजूरक मौनी-पथिया धुथरी-चङेरी-मुजेला दिस दृष्टि गेलैए। एतेक धरि जे आब हाकिम-हुकुम लोकनि गांज-पही-टेभकी आ टाइप धरि बैसक-घरमे सजबए लागल छथि। तें हमरासन लोककेर गुजर चलि रहल छैक। इएह सब अनैत छी आ खुदरा-खुदरी मे जतए बिकाइत अछि, बेचै छी। काज चलि जाइ-ए। दुनू बच्चा पढ़ि रहल अछि। सोचै छी अपना पढ़बाक मनोरथ पूरा नहि भेल त' की। खाइले घी-मलीदा नहि भेटै छै, रहबाले नीक ऐल-फैल घर नहि अछि, पहिरैले कोट-कमीज-जूता-पैताबा नहि छैक। किन्तु, भात-सोहारीक संग कखनहु नोन-अचार, त' कखनहुँ दालि-तरकारी भेटिए जाइत छैक। जएह डेरा अछि बरखा-बुन्नीमे त' नहि भीजै छी। काज जोकर कपड़ा-लत्ता भेटिए जाइत छैक। ताहिपरसँ जीबै छी से कोनो कम छै, हौ ! एकटा गप्प त' कहबे ने केलिअह कहै छै अनकर दुःख देखिकए अपन दुःख बिसरि जाइत छै। हमरा लोकनि त' पढ़ि नहि सकलहुँ तँ एक सन्ताप। सुनै छिऐक परसू-चारिम दिन एकटा डॉक्टर पटना सचिवालयमे प्राण हति लेलनि। कहांदन हजारीबाग दिस कोनो जंगली इलाकामे पोस्टिंग रहनि। बरख डेढ़ेकसँ दरमाहा नहि भेटल रहनि। प्रैक्टिस चलबा योग्य जगह नहि छलैक। ताहिपर जतेकबेर सचिवालय अबैत छलाह किरानीसँ मंत्री धरि टाका मंगिते छलनि। बेचारा कमाइत त' छल नहि दितैक कतए सँ। आजिज भ कए सचिवालयक परिसरे में आत्महत्या क लेलक। सुनै छिऐक जेबीसँ एकटा चिट्ठी भेटलैक जे हमर शरीरक तीन खण्ड क'कए एक-एक खण्ड मंत्री, सचिव आ बड़ा बाबू केँ द देल जाइन।''

बड़ दुःख भेल सुनि कए।

हमरा एतबे खुशी अछि जे पढुआ भाइक कहब सब दिन मिलैत गेल। आब त' हुनका मरलो दस बरख भ गेलनि। हुनकासँ आखिरी बेर जे भेंट छल त' कहने रहथि.....''आनन्द, तों बड़ संघर्षसँ गुजर करैत छह। किन्तु, एतबाधरि अवश्ये जे तोरा अपना देहा-देही कोनो कष्ट नहि हेतह।''

से ठीकें । हमरा अपना देहा-देही कोनो कष्ट नहि अछि ।

एतबा कहि पता नहि आनन्दकेँ कखनि आँखि लागि गेलैक । किन्तु हमर नीन उड़ि गेल । हम सोचए लगलहुँ जे तेजस्वी विद्यार्थी रहितहुँ पढ़ि नहि सकल । कर्मठ रहितहुँ स्थायी जीविका नहि पौलक । रहबा ले नीक ठौर नहि छैक । सोहारीपर सबदिन नोन धरि नहि जुरैत छैक, से एतेक संतुष्ट कोना अछि । एहन स्थितिमे लोक केँ कुण्ठा की हेतैक गंगामे डूबिकए जान द देने रहैत आ से कहैत अछि जे ''हमरा अपना देहा-देही कोनो कष्ट नहि अछि'' । ई व्यक्ति साधारण नहि । ई असली वीर थीक !

आनन्दसँ पिछला दू-तीन वर्षसँ सम्पर्क नहि भेल अछि । किन्तु, आइ फेर जखनि अखबारमे पढ़लहुँ जे एकटा कम्पनीक एक्जक्यूटिभ 'जॉब-लॉस' हएबाक कारणे बंगलोरकेर पब्लिक यूटिलिटी बिल्डिंग केर छब्बीसम फ्लोरसँ कूदि आत्महत्या क' लेलनि त' ओ वीर पुरुष फेर मोन पड़ि आएल ।

❑❑❑

बदलैत वृत्त

''ईश्वरे माय थिकाह, ईश्वरे पिता, भगवाने हमर सभक सब किछु छथि''—मास्टरनी नेनासबकेँ मनोयोगसँ पढ़बैत कहलखिन । किन्तु सुमन घर पहुँचलित' आँखि नोराएल छलैक आ कण्ठ अवरुद्ध । अबिते बापके भरिपांज पकड़ैत कानए लागलि—'हम तोरे बेटी छी, तोंही हमर दादा छैं । भगवान हमर मम्मी-पापा नहि छथि ।'

'.....हँ, हँ ।....बाप आलिंगनबद्ध करैत नेनाकेँ सांत्वना देलखिन ।

बापक बोलसँ नेनाकेँ भरोस भेलैक आ मास्टरनीक दार्शनिक भाषणसँ जे हताशा मोनमे भरि आएल रहैक से हठात् उड़ि गेलैक । आ मोन बहटरितें ओ भागि गेल छल कोनो आने धुनमे । दलानक एक कोनपर पड़ल दीनानाथकेँ रहि-रहिकए ई चित्र आँखिपर नाचि जाइत छनि । कतेक वर्ष भ गेलैक । सुमन नवजात नेना सँ विकसित नारी भए सात समुद्रपार चलि गेल छनि, एकटा स्वप्नक अन्वेषणमे लागल । पछिले वर्षक गप्प थिकैक दीनानाथक अंतिम बेटीक विवाह होएब निश्चित भेल रहनि । तखनि वैभवसँ पूर्ण छलाह आ शरीरसँ स्वस्थ । एहि आखिरी पारिवारिक उत्सवमे सब सम्मिलित हो तकर प्रबल इच्छा रहनि । किन्तु नेनालोकनिकेँ सेहो नेना छनि आ तकर चिंता बेगरता सेहो । तथापि सबगोटे अएबाक प्रयास केलकनि । सुमनकेँ सेहो फोनसँ संपर्क कए कहलखिन—

........बाउ, विवाह निश्चित भ' गेल ।

........हँ ।

........अएबह ने ?

....

.......तोहर बिनु बड्ड सुन लागत ।

..........की करू बाबू !

........आबए त' पड़बे करतह ।

.......ग्रीनकार्डकेर चक्कर छैक ।

'तोरा कोनो काजमे चक्कर लगलौए, सब भ जेतह।'

'कोशिश त' करबे करबैक।' बेटी कहलकनि।

दीनानाथ अपने भरि जन्म लोककेँ कहैत एलखिन—

"अपन भरि प्रयास करब, देखियौ त', कोनो-ने-व्यवस्था हएबे करतैक, सब कथूक रस्ता निकलिए जाइत छैक"। तेँ एहि भाषाक अर्थ बुझबामे भांङठ नहि होइत छनि। किन्तु,.....।

रीताक विवाह भ गेलैक। सुमन कोशिश केलनि किन्तु आबि नहि सकलीह। एकटा बधाइ कार्ड, रिग्रेट आ गिफ्ट पठौलखिन। दीनानाथ कहुना देह लगाकए मारलनि। कारण देह तहिया स्वस्थ छलनि आ मस्तिष्क स्थिर। किन्तु एहिबेर पक्षाघात भेल छनि आ बिछाओन धेने छथि। पत्नी पिछले वर्ष दिवंगता भ गेल छथिन। खाटपर एसकर पड़ल-पड़ल दीनानाथकेँ जीवनक सबटा इतिवृत्ति मोन पड़ै छनि। शरीर दुर्बल छनि किन्तु मस्तिष्क एखनो प्रखर। तेँ जीवनक जाहि घटनाक स्मृति पहिने घटना मात्रे जकां होइत छलनि एखनि तकर मीमांसा सँ स्वतः मनमे बिहाड़ि जकां अबैत रहैत छनि, अशक्तता शूल जकां हृदयकेँ बेधि जाइत छनि। आइ पड़ले-पड़ल आँखि आर्द्र भ आएल छनि, कण्ठ अवरुद्ध। सोचै छथि, अनेरे, विह्वल होइत छी। हमही कोन पुण्य अरजने छी। पिता मरणासन्न छलाह। जीबाक आशा नहि, नहिए जीलाह। किन्तु हमहूं त' नौकरीक अन्वेषणमे चले गेल रही।

तथापि आत्मदर्शन भाव आँखिक प्रवाहकेँ नहि रोकि पबैत छनि। सोचै छथि, माय-बापक सेवा नहि कए सकलाह। नेना लोकनिक सुख नहि भेटौन्ह किन्तु, पत्नीओ छोड़िकए चल गेलीह। पत्नीक स्मरणसँ हृदय आओर विदीर्ण भ' अएलनि—"कतेक दुलारि छलीह। कतेक स्नेह छलनि। ततेक स्नेह जे पत्नीत्वसँ मातृत्वक प्रतीक सेहो भ गेल छलीह।"

किन्तु आइ ओहि सब आश्रयक छाहरि विगत भ' गेल छनि। तेँ हँसी-खुशीकदिन बेसी मोन पड़ैत छनि आ कचोट बेसी होइत छनि। तहिया शरीर स्वस्थ रहनि आ आर्थिक आधार सुदृढ़। तेँ कतेको घोड़दौड़ करैत छलाह तथापि आयासक अनुभूति नहि होइत छलनि। किन्तु, आइ श्वास-प्रश्वासमे सेहो छातीक मांसपेशी सहयोग नहि करैत छनि। भोरहिसँ दलानक कोनपर खाटपर पड़ल छथि। गोधूलि भ' आएल छैक। दादाक कहब मोन पड़ैत छनि—गोधूलिक समय पढ़ब-लिखब, खायब-पीअब, सूतब सब वर्जित छैक। किन्तु एखनि रामेश्वरहिक आस छनि। तहिया जहिआ रामेश्वर मातहत छलनि एत्तहि रहब ओकर ड्यूटी रहैक आब ओ ड्यूटीक बादहि एतय अबैत अछि।

अचानक दीनानाथक दृष्टि दूर क्षितिजपर उगैत एकाकी तारापर पड़लनि। विशाल महाशून्य आकाश, अगणित तारामंडल, कल्पनातीत तारासमूह ! कोनो दूर,

कोनो लग । कतेक निरपेक्ष ! किन्तु, पृथ्वीओसन कोनो जे सूर्यसँ एतेकदूर रहितहुँ प्रबल गुरुत्वाकर्षणसँ बान्हल । जेना संपूर्ण सौरमंडल एके पिताक संतान हो—सब एक दोसरासँ दूर-दूर, सभक अपन-अपन निश्चित वृत्त आ कक्षा तथापि ककरोसँ केओ निरपेक्ष नहि ।

हठात् दीनानाथकेँ अपन एकाकीपनाक बोध भेलनि आ हृदय पुनः विदीर्ण ।

किन्तु, मनुष्यक मस्तिष्को विचित्र छैक । लोककेँ कखनहुँ अहंकारो होइत छैक त' कखनहुँ ओ आत्मनिरूपणो करैत अछि । एकाकीपनाक एहि क्षणमे दीनानाथ पुनः सोचैत छथि—''ठीके एहि शरीरक कोन काज ? ई शरीर आब अपन निर्दिष्ट काज कइए चुकल अछि । गाछक काज होइत छैक छाया देब, फल प्रदान करब आ बीआसँ आओर वृक्षसूमह पसारब आ अंतमे...... ।''

एहि विंदुपर अबैत-अबैत दीनानाथक मुँह विवर्ण होमय लगैत छनि । किन्तु मनकथाक प्रवाह रोकलासँ नहि थम्हैत छनि । सोचै छथि—''सब वृक्ष त' अंततः समिधाए बनत, केओ काल्हि, केओ आइए ! कारण, सब वृक्ष ने त' अक्षयवट बनि सकैत अछि आ ने प्रलयक प्रवाहकेँ रोकि सकैत अछि । वृक्ष बुढ़ा गेलासँ फल क्रमशः कम भ जाइत छैक तथापि छाया त' रहिते छैक । किन्तु, ओहि गाछक छायाक कोन काज जकरासँ गाम आ नगर क्रमशः दूर भ' गेल होइक ! नगर-शहरकेर बाट बदलिगेल होइक !! गाछ त' स्वयं चलि नहि सकैछ ।''

हठात् साइकिलक घंटीक ध्वनि सुनि दीनानाथक मनकथा टूटलनि । पूछलखिन—

....रामशरण ?

......हँ ।

.....आइ मुनहारि सांझ भ गेलह ।

.....हँ, तनखा भेटैमे त' समय लागिए गेलैक, तकरबाद बजारो चल गेलिऐक आ तैपरसँ साइकिलो पंचर भ गेलै । भइओ गेलैए झनकटही । कतेक साल चलतै । हमरोलग दस बरिस भ गेलै । आ हमहूँत' पुराने किनने रहिऐक ।

''........अच्छा, जे भेलै । मुँह हाथ धो लैह । हमहूँत' आइ एत्तहि पड़ल छी । देहे जखनि लोथ भ गेल त'... ।'' एतबा कहैत दीनानाथकेँ आगू नहि बाजि भेलनि । किन्तु रामशरणकेँ गप्प बुझबामे भाङठ नहि रहलैक । कहलकनि...''सबटा समयक फेर छिऐक । तै परसँ शरीरो त' मशीने छिऐक । जहां एकटा पुरजा भंङठल कि....'' कहैत एक लोटा पानि आनि कए देलकनि आ कहलकनि....चलू आब भीतरे ।''

दीनानाथ भीतर आबि गेलाह किन्तु मोन स्थिर नहि भेलनि । कहलखिन....''हौ रामशरण, पढ़ने छलिऐक जे बिलेंत आ अमेरिकामे बूढ़-बुढ़ानुस, जे हमरा जकां अशक्त भ जाइ छै, तकराले सरकार आश्रय-गृह सब बनबौने छैक । घर-परिवारकेँ

कोनो चिंता नहि आ अनाथहुँकें कोनो फिकिर नहि । हमरा लोकनिक एतय त' किछु नहि छैक । परिवारक हाल देखिते छहक आ सरकारक की हाल छैक तकर त' गप्पे नहि होअए ।''

रामशरणकें गप्पक अर्थ लागि गेलैक । कहलकनि—''मालिक, अहूँसन भाग ककरो-ककरो होइ छै । देखै छिऐ, बाल-बच्चासब केहन नाम कयने अछि ।''

दीनानाथ कने कालले गुम्म भ गेलाह ।

फेर कहलथिन—''ऐं हौ, से त' ठीक । किन्तु, आब त' देखै छिऐक कत्तहु कोनो घरमे कमासुत लोक नहि छैक, गाम-घरमे । जे सब गाममे बँचल अछि बूढ़-ठेढ़, रिटायर रोगी । तखन ककरा के देखतैक ? आब कमौआसब जनी-जाति आ परिवार सेहो संगहि रखैए ।''

फेर कनेक ठमकिकए कहलखिन—''आ कोना नहि राखए । पहिने हमरो लोकनिक आ अनको—छोट सँ पैघ घरक नेनासब गामहि पढ़ै छलै । आब देखैत छिऐक ने ओहि स्कूलमे केओ जाइत छैक आने मास्टर अबैत छैक । गामघरमे दवाइ-बिरोक व्यवस्था सेहो साढ़े बाइस छैक ।''

रामशरणकें गप्प त' सबटा बुझले छैक किन्तु की कहतनि । कहलकनि—''मालिक हमरा लोकनि त' लचार छी नहि त' आब, ठीके, गाम रहबा जोकर नहि छैक ।''.....कहैत रामशरण चिराग-रोशनीक व्यवस्थामे लागि गेल ।

दीनानाथ सेहो रेडियो खोलि प्रादेशिक समाचार सुनए लगलाह....''ये आकाशवाणी है । अब अनन्तकुमार से प्रादेशिक समाचार सुनिए.... ।''

एहि बयसमे आ एकाकी जीवनमे समाचार सेहो खूब अनमना होइछ । जखनि अपनाघरमे किछु बदलै योग्य नहि रहैत छैक तखनि देस-कोसक समाचारे अन्यथा बेरस जीवनमे किछु अनमना होइते छैक । तै परसँ जहियासँ रेडियोपर प्रतिघंटापर समाचार देमए लगलेए दीनानाथकें हरदमे समाचारक चाड़ि रहैत छनि, भले किछु नव होइक वा नहि । आ नव हेतैक की ? 47 ई० मे जे किछु भेलैक ताहिसँ सबके भेल रहैक जे आब सब किछु बदलि जेतैक । लोक कहलकैक...''गेल गोरा । आब कालूक राज भेलैए । अप्पन राज ! अप्पन मालिक अपने । सरकारत' हेतैक किन्तु, जनताक नोकर । जन-मजदूर-छूत-अछूत सब अपन भाग्य अपने लीखत । गेलै राजा-रानीक खीसा !''

किन्तु, की भेलैक ? किछु नहि बदललैक । जे लाटकेर बासामे बैसल, लाट भ गेल ! राजाविक्रमादित्यक सिंहासनक खीसा ! किन्तु जनता रहल ओतहिक ओत्तहि ।

समाचारमे आगू कहलकैक....''राज्य सरकारने वृद्धों के लिए पेंशन योजना शुरू की है । 65 वर्षसे ऊपर उम्रके अनाश्रित वृद्धों को सरकार 50 रु. महीने का भत्ता देगी । आदि, आदि.... ।''

एतबा सुनिते दीनानाथकेँ लेसि देलकनि । ओ रेडियो बन्न क' कए एक दिस पटकि देलखिन आ स्वगत बाजए लगलाह....''दस रुपये सेर चाउर छै आ भत्ता पचास रुपैया प्रतिमास ! माने स्वतंत्रतासँ पहिनहुँ आधागाम भुखले सुतैत छल, आबहुँ बेसहारा भुखले सूतत । भले सरकारी भंडारमे अन्न रखबाक जगह नहि होउक ।''

ताबते रामशरण हाक देलकनि........''मालिक, भोजन करबै ?''

....'हँ, द दैह । तोहों निचेन भ जयबह ।'.....दीनानाथ किछु ठमकिकए कहलथिन....'रामशरण, तोहों हमर कोनो जन्मक ऋण खएने छह, नहि त'.... ।

खैर, कोनो जन्मक ऋण खएने होइन्ह वा नहि, एखनि पंथक पाकड़ि अवश्य छनि रामशरण । से बूझैत अवश्य छथि दीनानाथ । किन्तु, हुनका वृक्षसँ छायामात्रेक आस नहि छलनि । वृक्षसँ फलक आस ककरा नहि होइत छैक ? खासकए अपन लगाओल वृक्षसँ ! तँ जहियासँ सुमनकेर चिट्ठी आएल छनि जेएहि बेर दसमीकपूजामे आओत आ एत्तहि रहति तहियासँ जेना हुनकर पक्षाघातग्रस्त हाथ-पएरमे क्रमश: संचारक अनुभूति होमए लागल छनि । सोचै छथि....''अपन बच्चा त' आखिर अपने थिक । पछिला वर्ष रीताक विवाहमे सुमन नहि आबि सकल त' की करबैक बेचारीकेँ ग्रीनकार्डकेर चक्कर रहैक । आखिर हम कतेक दिनले छी । ओकर कैरियर त' एखनि आरंभे भेल छैक । आ हमरा की फूसि कहत ! युग बदलि गेलैए किन्तु संबंध त' वएह छैक, मनुष्यक ह्रदय ओहिना धड़कैत छैक । दु:ख-सुख ओहिना हँसबैत-कनबैत छैक । चलू जे भेल से भेल आब मुँह त' देखबैक ।''

दीनानाथ मनहि-मन मस्त रहथि कि रामशरण भोजन आगूमे रखैत एकटा लिफाफ हाथमे दैत कहलकनि...बिसरिए गेल छलिऐक । पोस्टमास्टर ई चिट्ठी दिनमे अहांले देने छलाह ।

चिट्ठी सुमनकेर रहैक । दीनानाथ थारीकेँ एककात टारि लिफाफकेँ फाड़ि चिट्ठी पढ़य लगलाह... ।

''बाबू अहां मोन छोट नहि करब । हम दसमीमे एहिबेर नहि आबि सकब ।....दीनानाथक मोनतँ झूर-झमान भ गेलनि । तथापि कहुना हिम्मत क कए आगू पढ़य लगलाह....मोनूक एकटा इंपोर्टेन्ट परीक्षा ओही बीचमे हेतैक । आब देखैत छिऐक कतेक जल्दी दोसर प्रोग्राम बना पबैत छी ।'' आदि-आदि... ।

निरपेक्षभावें चिट्ठी एकदिस राखि दीनानाथ जखनि अनायास जंगलाबाटें आकाशदिस मूड़ी उठऔलनि त' लगलनि जेना सबटा ग्रह-नक्षत्र टूटि-टूटिकए खसि रहल हो आ अंतरिक्षक आकर्षणक सब पुरान नियमकेँ तोड़ि-तोड़िकए प्रतिक्षण अपन-अपन नव-नव कक्षा आ वृत्तपर यात्रा आरंभ कए रहल हो ।

❑❑❑

मरनो भलो विदेसमे

''मरनो भलो विदेसमे जहां न आपुन कोय देहो खाय जनावरा महा महोच्छव होय।'' ई लोकोक्ति त' मेजर मिश्रकेँ कर्नल सीतारामक मुँहसँ बहुतबेर सुनल छलनि किन्तु प्रकृति सीतारामक मृत्युक पछाति घटनाक्रमकेँ एना नाटकीय बना देतैक तकर अनुमान हुनका नहि छलनि।

मेजर मिश्रकेँ कर्नल सीतारामक कहल बहुतरास गप्प मोन छनि। कर्नल सीताराम बेसीकाल गप्पक क्रममे कहल करथिन—मिसिरजी, सबटा रोग-क्लेश, दुःख-सुख, हर्ष-विषाद, जय-पराजय जीवनकाले धरि अर्थ रखैत छैक। मृत्युक पछाति, कहैत छैक-'मुइला उत्तर डोम राजा।' आ दुनू मित्र खूब हँसथि। संयोग एहन जे दुनू गोटे वृद्धाश्रमक अपन-अपन कोठलीमे एसगरे-एसगर रहथि। कर्नल सीतारामक पत्नी पहिले प्रसवक पछाति दिवंगता भ गेल रहथिन। सर संबंधी, जे केओ रहथिन, से पंजाबक कोनो दूरस्थ गाममे रहैत रहथिन। घरमे विवाह-उपनयन प्रभृतिक उत्सव-उल्लासक कोनो अवसरे ने होइतनि तेँ सर-संबंधीसँ आयबो जायब छूटले छलनि। बांकी बंचलखिन एकमात्र भातिज। सेहो पछिला कतेक वर्षसँ अमेरिकामे जीविकामे लागल छलखिन। अस्तु, ल द कए पड़ोसी, मित्र वा जे बुझू एकटा मेजर मिश्रक संग बैसब-उठब, घूमब-फिरब बँचल छलनि।

कर्नल सीताराम असगरतँ तहियो रहथि जहिया युवक छलाह। किन्तु, फौजी जीवनक व्यस्त दिनचर्या आ वयसगत मानसिकता तकर भान नहि होबए दैत छलनि। देहसँ खूब श्रम करैत छलाह किन्तु, परिश्रमकेँ व्यवसायक अंगे मानैत छलाह। सत्ये, सैनिक-जीवनमे जे जतेक स्वस्थ हो, जकरा जतेक अदम्य साहस आ बाहुबल होइक, जे जतेक चलि सकए, दौड़ि सकए, पर्वतक मस्तकपर आरोहण करए, नदीक वेगपर विजय करए ओ ओतेक आदरक पात्र बनैत अछि। सैनिकसब ओकरे पूजैत छैक आ परवर्ती पीढ़ीले ओकरे नामक यशगाथा प्रेरणाक स्रोत बनैत छैक।

किन्तु, आइ जखनि कर्नल सीतारामक कहब हुनकर मृत्युक पछाति एकटा क्रूर आ कारुणिक यथार्थ भ' कए उपस्थित छैक त' मेजर मिश्र सेहो किंकर्तव्यविमूढ़ छथि।

असलमे कर्नल सीताराम गत राति जखनि सैनिक अस्पतालमे भर्ती भ' कए आइ० सी० यू० मे आनल गेल छलाह त' अनुमान नहि छल हेतनि जे एहि बेर घर वापस नहि जेताह । सत्यत: एसगर रहैत-रहैत अस्पताल आएब-जाएब एतेक सामान्य भ गेल रहनि जे रोग-व्याधि आ अस्पतालमे भर्ती भेलासँ आब कोनो घबराहटि नहि होइत छलनि । आ घबराहटि हएबो उचित नहि । सैनिको त' सामान्ये मनुक्ख जकां युवत्वसँ मध्य बयस, प्रौढ़ता, रिटायरमेन्ट आ वृद्धावस्था दिस निरंतर बढ़ैत रहैत अछि । आ वृद्धावस्थाक संग-संग जहिना-जहिना शरीरक कल-पुर्जा सब घंसाइत छैक तहिना-तहिना दवाइ-विरो आ अस्पतालक उपयोगिता सेहो बढ़ल जाइत छैक । आ तें सैनिक अस्पताल सन पंथक पाकड़ि सन आन कोनो आओर संबल नहि । किन्तु एहि बेर खेपि नहि सकलाह ।

खैर, जे किछु भेलैक । किन्तु, सीतारामक मृत्युक पछाति जखनि 'नेक्स्ट आफ किन' केँ सूचना देबाक प्रश्न उठलैक त' एकटा विकट समस्या ठाढ़ भ गेलैक । 'नेक्स्ट आफ किन'क कालमे जकर नाम रहैक तकर पता अमेरिकाक छलैक । रातिमे भर्ती करएबाकाले मेजर मिश्र संग आएल रहथिन आ तखनि स्थिति 'स्टेबल' बूझि ओ त' डेरा वापस आब गेल रहथि । मुदा दोसर दिन भोरमे मार्निंग वाकक पछाति जखनि सीतारामक हाल-चाल पूछए आइ. सी. यू. पहुँचलाह त' मृत्युक खबरि सूनि स्तब्ध रहि गेलाह । सीतारामक शरीर ताधरि शव-गृह जा चुकल छलनि । कारण, सीतारामक मृत्यु त' अहल भोरे भ' चुकल छलनि ।

तथापि मेजर मिश्रक पुछारीसँ अस्पतालकेँ एकटा सम्पर्क-सूत्र भेटलैक । किन्तु, जखनि हुनकासँ सीतारामक परिवारजनक पता पूछल गेलनि त' हुनकहु सत्यबात कहहि पड़लनि जे सीतारामक कोनो परिवारजन नहि छलनि । हुनकहु मात्र एतबहि बूझल छलनि जे निकट संबंधीमे सीतारामक एकटा भातिज छथिन जे स्टेट्स में बसल छथिन ।

'तखनि ?'...अस्पतालक अधिकारीलोकनि मिश्रजीसँ जिज्ञासा केलकनि किन्तु, हुनको लग कोन समाधान रहनि ?

कहलखिन...एकटा पितिऔत भाइ आ किछु आओर संबंधी पंजाबमे छथिन । किन्तु, हमरा नहि लगैए केओ अओथिन । हम ककरो हिनकालग कहिओ अबैत देखने नहि रहिअनि । तथापि हमर मित्र छलाह । हमरासँ जे किछु संभव हएत करबनि । ओना गप्पक क्रममे कर्नल सीताराम हमरा बराबरि कहैत छलाह जे मृत्युक पछाति ओ अपन शरीरकेँ मेडिकल कॉलेज वा अस्तपालकेँ देबए चाहैत छलाह । ओ कहैत छलाह जेओ तकर विल सेहो कयने छलाह ।

कर्नल सीताराम जखनि-तखनि बाजथि जे मोटर गराजमे टूटलो-फाटल गाड़ीसबकेँ मिस्त्रीसब दूरि कहाँ होमए दैत छैक । जहां जे काजक पार्ट रहैत छैक ओ सब ओकर उपयोग कइए लैत छैक । हमरहु शरीर, मृत्युक पछाति, ककरो देहक मशीनक मरम्मतिमे काज आबि सकए वा नवसिखा डाक्टरसब देहक कल-पुर्जा, खोलिकए शरीरक बनावट सीखि सकए त' एहि सँ नीक की !

अस्पतालक रजिस्ट्रारकेँ ई सब गप्प कहैत-कहैत मेजर मिश्र कने भाव-विह्वल होइत आगू कहलखिन...''ठीके, कर्नल सीताराम आ हम 1965 आ 1971 केर युद्ध आ पुन: शान्तिकालमे अनेकानेक दुर्घटना देखने छिऐक । सबल-स्वस्थ युवक सबके यत्र-तत्र मारल जाइत, देखने छिऐक । मुदा दु:ख एकेटा होइत रहल जे कारगर व्यवस्थाक अभावक दुआरे शरीरक कोन कथा आंखि धरि बेकार भ जाइत छैक । आ दोसर दिस हजारो व्यक्ति 'स्पेयर' अंगक अभावमे कुहरि कए मरि जाइत अछि । स्पेयर आंखिक अभाव में जीवन भरि अंधताक अन्हरियामे अहुरिया कटैत जीवैत अछि ।''

''असलमे हम आ स्व० सीताराम एहि अभियानमे लागल छलहुँ जे दूर-दराज वा लग, सैनिक वा सिविलयनक आकस्मिक मृत्युक स्थितिमे शरीरक उपयोग आओर अंगक संग्रह आ वितरणक व्यवस्थाले कोनो कारगर सामाजिक पहल हो ।''

किन्तु, अस्पतालक समस्या तात्कालिक रहैक । तें शरीरदानक 'कन्सेन्ट' देबाक प्रश्न उठलैक त' मेजर मिश्र मित्रताक निर्बाह करैत स्वीकृति देबाले आगू बढ़लाह । ''किन्तु, ओहिले त' संबंधीए चाही । तें हमरालोकनि हिनकर भातिजसँ संपर्क करबाक प्रयास करबनि । जँ केओ नहि अएलनि तखनि त' शरीरपर पुलिसेक अधिकार छैक । रजिस्ट्रार कानूनी गप्प बुझबैत कहलखिन ।

'तखन सएह करिअनु ।'—मेजर मिश्र हताश होइत कहलखिन ।

अस्पतालक सूचनाक जवाबमे दोसर दिन स्व० सीतारामक भातिजक फैक्स अएलैक....''हम व्यक्तिगतरूपे अएबामे असमर्थ छी । एहि फैक्सक संग सेपरेट कन्सेन्ट संलग्न अछि । काकाजीक जे इच्छा रहनि तद्नुकूल हुनकर शरीरक उपयोग कयल जाए । हमरा कोनो आपत्ति नहि ।''

किन्तु, जाधरि सूचना अएलैक ताधरि अंगदानले बहुत विलंब भ' चुकल छलैक से तँ मिश्रजी बूझिते छलखिन । किन्तु, स्व० मित्रक अंतिम इच्छा पूरा करबामे सफलताक आस नहि छोड़ने छलाह । तेँ अस्पतालकेँ निवेदन केलखिन...''आब स्थानीय मेडिकल कॉलेजहि सँ संपर्क कयल जाए ।'' कहैत-कहैत कण्ठ अवरुद्ध भ अएलनि ।

मोने-मोने सोचए लगलाह ... ककरो छल हेतैक कल्पना, दुनियाक स्वरूप एना बदलि जएतैक । दधीचि पुण्यक लोभें देहक हाड़ दान केने छलाह त' अमर भ गेलाह आ सीताराम समाजसेवाले शरीर दानकरबाक प्रण केने छलाह त' ई हाल ।

किन्तु अपन मनकथा दिससँ कने ध्यान हँटलनि त' भान भेलनि जे रजिस्ट्रार हुनके कहि रहल छलखिन...''मिसरजी, आब सेहो संभव नहि । आब मेडिकल कॉलेजहुँमे छात्रसब भिडियोपर थ्रीडी-एनिमेशन साफ्टवेयरक सहायतासँ शरीर-रचना सीखैत अछि । असलमे अगिला शताब्दीमे आपरेशनो त' यंत्र-मानवे करत । तखनि मेडिकल कॉलेज शव ल'कए की करत !''

ई सूनिकए मेजर मिश्रक आंखिमे नोर भरि अएलनि । अवरुद्ध कण्ठे कहलखिन...''तखन शरीर पुलिसेकेँ द दिऔक, जे फुरतैक से करत ।''

रचना मे प्रकाशित

सुख की थिकैक

जेठक दुपहरिया। गर्मीक चरम। ताहिपर सँ बिजुली नहि, पंखा बंद। पटिआपर ओङघायल रति कछमछा गेलि। घामसँ तीतल आङी ओकर देहमे सटि आएल छलैक, देह चुनचुनाए लागल छलैक। ओ तीतल आङी खोलिकए एककात राखि देलकैक आ घमाएले नूआकेँ देहमे लपेटि फेर ओही पटियापर ओङघरा गेलि। कोठलीक पछुऐतक केबाड़क पट्टा ओ खोलि देलकैक : कनेको बसात सिहकतैकत' त्राण हएत ! किन्तु बसात कतए आ कतए निन्न। आइ गत चारि-पाँच वर्षक जीवन पुनः ओकर मानस पटलपर सिनेमाक रीलजकाँ नाचि आएल छैक।

इएह जेठक दुपहरिया छलैक। आ इएह गर्मी। ने बसातक पता ने बिजुलीक गमन। पुबरिया घरक पछबरिया केबाड़ खुजल छलैक आ ओ भूंइए पर लेटाएलि। ताबते पाछुएसँ आबिकए ओकर आँखि केओ मूनि देने छलैक...

'खोल, आँखि खोल। चीन्हि गेलिऔक। पुरनी छिएँ।'

'धुर जो, पुरनीक ठेलावला हाथ आ हमर हाथमे तोरा फरक नहि बुझेलौ, त' तों कि चिन्हबें ?...भारती किछु कटाक्ष आ किछु विक्षिप्ततामे कहलकैक।

'चिन्हबौ किएक नहि, किन्तु भेलैए की ? नहि त', एहि अटट्ट दुपहरियामे दौड़लि नहि अबितें।

'हँ गै, आबि गेलियौ, निन्न टूटि गेलौ तेँ उलहन दै छें। नै एबो आब।'

रति उठि बैसलि आ भारतीकेँ भरिपाँजकए पकड़िकए जोरसँ गुदगुदा देलकैक।

भारती छिहुलि उठलि....' छोड़, छोड़ ! माय-गे-माय ! छोड़ि दे, कहै छियौ।

'कह।'

'एगो गप्प छै।'

'कह ने'

'कहबही तने ककरो ?'

'धुर जो, एतेक कहीं सत्त भेलैए।' रति मुँह बिजकबैत कहलकैक।

'बाबू आइए पटनासँ अएलखिन ।' ....भारतीकने बिरमि कए बाजलि ।

'तँ ? छुट्टी त' छैके ।'

'गै हमरा डर होइए ।'...भारती रतिक लग घुसुकैत बाजलि ।

'धुर, एतेक कहीं बुझौअलि भेलैए । डर होइत छौ तें एहि अकलबेरामे दौड़लि अएलेहें । जो हमरा सूतय दे ।

'गै, सुतबे त' करबें हम चल जेबौत' के अओतौ पूछैले' ।

'के अओतै से त' बुझबे करबीही कहियो ।'—कहैत रतिक मुँहपर मुस्की आ देहमे गुदगुदी भरि आएल छलैक । ओ मुस्की रोकैत बाजलि ...'खैर एखनि त' अपन कह ।'

भारतीकसंगे ओहि दुपहरिआमे किछु एहने गप्प भेल रहैक किन्तु तकर आगू रतिकेँ एतबे मोन छैक जे भारतीक गेलाक बाद बीचमे कनेक बसात सिहकले छलैक आ ओकर आँखि लागि गेल छलैक । किन्तु बेसीकालले नहिं । किछुए क्षणमे ओकरा लगलैक जेना पुन: ओकर देह केओ गुदगुदा देलकैए । ओ धरफड़ाकए पटियापरसँ फानिकए उठि गेलि । ओ देखलकैक जे समीर पटियाक एक कोनपर आबिकए बैसि गेल छलैक । घबराहटिसँ ओकर श्वास तेज भ गेल रहैक, मुखमंडल उद्दीप्त आ माथपरसँ घामकबुन्न टघरिकए कनपट्टीपर उतरि आएल रहैक ।

रति सहमि गेल छलि ।

.......अहाँ एखनि एतय ? बापरे ! जँ केओ देखि लेलक ?

.......सएह त' हम चाहिते छी ।

'माने हमर जगहँसाइ ? बोल जेना रतिक कंठमे अंटकि रहल छलैक ।

........बताहि ! जँ हमर सभक अनुराग, एक-दोसराक प्रति लगाव, लोक बूझत नहि मोने-मोने गुड़-चाउर फँकने की होएत ?...समीरक वाणीमे विश्वास आ दृढ़ता झलकि आएल छलैक । ओ एकटा गहन दृष्टिसँ रतिकेँ देखए लागल छलैक ।

.....नहि, नहि । एना नहि । देखू त' हमर सर्वांग शरीरकेर रोइआँ ठाढ़ भए गेल अछि । हृदय धड़कि-धड़कि कए छातीसँ बाहर अबै पर तुलल अछि । हमरा कनेक समय दिअय । हमर मायकेँ हमरापर विश्वास छैक । हम ओकरा कहबैक ।

......कहिया ? हम त' फेर अगिले वर्ष आएब । एखनितँ बहिनक बिदागरीक बहन्ने आएल छलहुँ । अगिला वर्ष जँ बहिन अहाँक भैयाकसंग कलकत्ता चल गेलि त' इहो बहाना नहि रहत । हमरो त' इंजिनीयरिंगकेर कम्पीटिशनमे बैसबाक अछि ।....समीर विह्वलतासँ कहलकैक ।

........बेस, एखनितँ ने हमरे पढ़ाइ समाप्त भेले ने अहींक । समय पाबि सब गप्प हेतै । ताबत बाबूओ गाम अबै छथि । भले साँझखन अहाँ कोनो बहाने चल आबी । किन्तु, ई दुपहरिआ आ हमर ई हुलिया !....रति अपन देह दिस मुड़ी झुकौनहि लजाइत कहलकै ।

........एखनि अहाँ चल जाउ । ....आ से कहैत रति समीरकेँ झमारिकए उठबैत विदाकए देने रहैक ।

किन्तु दुपहरियो बीति गेलैक आ साँझो । समीरकेँ कोनो बहाना नहि भेटलैक । अगिला दिन अहल भोरे त' ओकरा जएबाक छलैक । आ से ओ चले गेल छल । दुलारि आ आरामतलबी रति तखनि उठलो नहि छलि जखनि भोरे समीर अपन बहिनकेँ संग ल' कए बस पकड़ैले विदा भ गेल छल ।

आपस जाइतकाल ओ गोपालजीबाबूक पछुआड़े द कए गेल रहए । कतेक बेर ओकरा मोनमे भेलैक, कहीं आइओ रतिक कोठलीक केबाड़ कने खूजितै आ अपन रतिक एक झलक ओ देखि पबिते । एकबेर ओकरा मनमे इहो भलैक...धुर, केहन छी हमहूँ ! किन्तु तैयो ओकरा मोनमे ई कचोट रहिए गेलैक जे रतिक माय अहू बेर ओकर अभीष्ट नहि बूझि सकलखिन ।

किन्तु, से सत्य नहि । रतिकमाय ओहि दुपहरियामे समीरकेँ रतिक कोठलीमे बैसल देखि लेने रहथिन । किन्तु, हुनका मोनमे किछु खुशी भेल रहनि त' किछु शंका सेहो ।

'हे भगवान ! कुमारिकन्याक इज्जति बड्ड मोसकिलसँ बँचैत छैक ।'

किन्तु, ओ चुपे रहलीह ।

साँझमे ओहि दिन गोपालजीबाबू सेहो नहि रहथिन । दुनू माय-धी जखनि खयबाले बैसलि त' माय कहलथिन...

.....रति ।

स्थापित नीरवताक अचानक भंगसँ रति चौंकि गेलि । ओकर माथ ठनकलै... माय आइ एतेक गंभीर किएक अछि ।

माय कहय लगलखिन...रति, समीर बड्ड नीक लड़का छैक । हमरो नीक लगैए । नीक चरित्र, देहसँ स्वस्थ, सुन्दर आ पढ़बामे तीव्र । किन्तु, एखनि ओकर बयसे की छैक तोंहों त' एखनि बी. एससी.ए मे नाम लिखएबें । तोरो त' ई नहि छौक जे चिट्ठी-पत्री सीखि ली आ पढ़ाइ समाप्त । आ ताहूसँ बेसी, रति, जे छैक मूल विषय ओ छैक, भावी जीवन । तोहर सभक एखनुका बयस बिहाड़िए छिऐक । एक दिशामे

जहिना हुहआइत बढ़ैत छैक तहिना बिला जाइत छैक । किन्तु, बयस भेलापर, आवश्यकताक बढ़लापर लोककेँ चाहिऐक बेसी कैंचा-पैसा, शान्तिले चाहिऐक बेसी सुख-सुविधा, आराम आ चिंतामुक्त जिनगी । तें जीवन भरिक निर्णय लोककेँ सोचि-विचारिकए लेबाक चाही ।

ओ कनेक ठमकि पुन: बाजय लगलीह... ।

तोहर बाबू डाक्टर छथुन्ह । ओ तोरासबकेँ जीवनक, रहन-सहनक एकटा स्तर देने छथुन्ह जाहिसँ कममे तोरासबकें कष्टक अनुभव हेतहु । आ शारीरिक कष्ट मानसिक अशान्तिक कारण बनैत छैक । तें सोचिले, ठीकसँ सोचिहें । बेर अएलापर हमसब तोहर धारणा, विचार आ निर्णयक अनादर नहि करबौ । तोहर विवेकपर हमरा सभकेँ विश्वास अछि । किन्तु, निर्णयमे जल्दी नहि करिहें, हड़बड़इहें नहि ।

रति माएक भाषण सुनि मनेमन खुशीओ भेल... चलू माए बुझिओ लेलक आ तमसाएलो नहि अछि...आ आशंका सेहो भेलैक...नहि जानि माएक एहि भाषणमे की दृष्टि निर्देश निहित छैक । प्राय: सकारात्मक सँ बेसी नकारात्मके....रतिकेँ लगलैक ।

खैर, जे भेल होइक । अगिला हफ्ता—दस दिन तेहन बीतलैक जे रतिकेँ किछु सोचबाक मौका नहिं भेटलैक । शुद्धक अंत भ रहल छलैक । केओ सौराठ सभाक भरोसे आस लगौने छलाह तँ केओ घरकथाक सूत्रसभकेँ पकड़ि बराइत सभकेँ बन्हबाक जोगाड़मे लागल छलाह ।

........चलू ताहिसँ हमरा की ?....कपिलेश्वर झा सोचलनि...हमरा भारतीकलेल त' सुयोग्यवर भेटिए गेल । नोकरिए नहि छनि किने, एम. ए. त' पास छथिए । ट्यूसनोक व्यवसायमे किछु दिन लगताह त' परीक्षा आ कम्पीटिशनक तैयारीमे मोसकिल नहिए हेतनि । आ फेर उपेन्द्रजी त' छथिए । कहुना हुनकर कओलेजमे त' घोसिआइए देबनि । दस-बीस हजार लगबे करतैक किने किन्तु से त' दुनियाक रीतिए भ गेलैए । घूस थिकैक की ? वएह जे कबूलापाती थिकैक । तखनि जखनि भगवानेक नामे घूसक प्रथा चलि चुकल छनि तखन मनुक्खक सक्क छैक जे ओकरा रोकत !

हुनका एक मोन फेर होइत छनि...हँ, मनुक्खे एकरा रोकत । कारण, भगवानोक सृष्टि त' मनुक्ख मोने केने अछि । किन्तु कपिलेश्वर झा एखनि एहि मीमांसामे नहि पड़ए चाहै छथि । एखनि त' कहुना भारतीक विवाह भ जाइक आ तखनि दिलीपक नौकरी ।

किन्तु समय कतय बैसल रहैत । भारतीक विवाहो भ गेलैक आ द्विरागमनो । बराइत नहि मानलखिन । समधि कहलखिन...''औ समधि, सासु एखनि एसगरुआ छथिन । आब सम्हरै नहि छनि । जाइ-ए दिअनु । अपन घरो त' देखती-सुख वा दु:ख । जहिए कहब बिदागरीक कोनो झंझट नहि । आबत' हमसब एक परिवार भेलौं ।''

आ कपिलेश्वर झा तैयार भ' गेल रहथिन । भारतीक दुरागमनक दिन रतिकेँ लगलैक ठीके जेना आइ ओ एकदमे एसगरि भ' गेलि । जाइतकाल भारती रतिक घाड़ पकड़िकए बड्ड कानल रहैक । कहलकै...रति, हमत' आब जाइत छिऔक । कहै छैक, नदी-नदी भेंट, बहिन-बहिन नहि भेंट । नहि जानि तोरो एहिबेर डाक्टर काका कतए पढ़बैले पठौथुन । बिदागरीओ भ कए आएब त' भेंट हएत कि नहि । बिसरिहें टा नहि । रतिकेँ सेहो रहि नहि भलैक । ओकरो कोंढ फाटि गेलैक । कहलकै...'गै, तोरा बिसरबौ । ऐ जिनगीमे !'.... आ दुनू सखी एक दोसराकेँ चूमिकए फराक भ गेलि । रति केँ सबटा ओहिना मोन छैक ।

भारती कोनो बेजाए थोड़े कहने रहैक । गर्मी छुट्टीक बीचे रीजल्ट बहरएलैक । रति फर्स्ट डिविजनमे पास भेल छलि । डॉक्टर साहब पूछने छलथिन्ह...''की बेटी, जियोलोजी पढ़बें ? बर्दाश्त हेतौक तोरा कोइला-खानक ओ कारिख आ लोहाक खानक गर्मी ?''

.....'मौगी जखनि चानपर जाइए सकैत अछि तखन खानमे जाएब कोन कठिन छैक । आ ताहूपर हम पढ़ए जा रहल छी । प्रोफेशन नहि शुरू क' रहल छी, बाबूजी ।'' .....रति आँखि चमकबैत कहलकनि । डाक्टर साहेब निरुत्तर भ' गेल छलाह ।

रतिकेर नम्बरो नीक छलैक । मासक भीतरे राँची कॉलेजसँ बजाहटि आबि गेलैक । आ माय अपन एकाकीपना आ बाप अपन मनोरंजनक बिनु परवाहि कयने होस्टल पहुँचा एलखिन । मोन पहिने खिन्न भेलनि । किन्तु, पछाति खुशीओ... चलू, होस्टल गेलासँ आरामतलबी रति कने अपना पयरपर ठाढ़ हयब त' सीखत । माय-बाबूजीपर ओकर डिपेन्डेन्स त' कम हेतैक ।

आ से भेबो केलैक । पहिलेबेर माय-बापसँ दूर घरसँ बाहर । होस्टलक जीवन आ लगभग अपन मालिक अपने । तेँ जँ रतिकेँ उन्मुक्तता भेटलैक त' संगहि कने दायित्वबोधक अनुभूति सेहो पहिलेबेर भेलैक । किन्तु आओर जे किछु होउक राँची कॉलेजक परिसर ओकरा खूब नीक लगलैक । खूजल-खूजल वातावरण, शीतल बसात आ सामने मोराबादी ग्राउन्डमे पंक्तिबद्ध, सावधानक अवस्थामे ठाढ़ सैनिकक टुकड़ी जकां, हरियर कचोर युकलिपटसक उद्यान ओकर मनकेँ मोहि लेने छलैक । आ ताहूसँ बेसी नीक लगलैक ओकरा ओहिठामक एकेडेमिक वातावरण । एक-सँ-एक नीक विद्यार्थी—सब स्वस्थ दिमागी घोड़ा जकां एक दोसराक संग रेस में उतरि सतत् विजयी हेबाक आकांक्षी, प्रत्याशी ।

एहि मनोरम वातावरणमे दू वर्ष कोना बीति गेलैक तकर भान रतिकेँ तहिये भेलैक जहिया अंतिम टर्मिनल परीक्षा समाप्त भ गेलैक आ फार्म भरबाक बेर अएलैक। किन्तु, ओकरा की बूझल छलैक जे अगिला दू-तीन हफ्ता पछिला दू-तीन वर्षसँ बेसी महत्त्वपूर्ण होमए जा रहल छलैक।

सोमदिन छलैक। साँझमे रति होस्टलक हाता में ओहिना ओङघराएल छलि कि हाथमे केओ एकटा चिट्ठी द गेलैक। 'ई त' मायक चिट्ठी थिक।'...ओ तुरत चिट्ठी केँ फाड़ि ओत्तहि पढ़य लागलि। लिखने छलखिन...

बुच्ची,

पिछला, हफ्तामे तोहर बाबूजी जे रांची गेल रहथुन्ह से तोरे टा सँ भेंट करैले नहि। डाक्टर भूपेन्द्र बाबूक बेटा किशोरक प्रसंग मे डाक्टर साहेबसँ सेहो किछु गप्प भेलनि। लड़का तोरे संग पढ़ै छौ। चिन्हिते तँ हेबही। गोर-नार, कान्तिवान मुँह आ स्वस्थ देह। हमसबतँ जनिते छें, बिनु तोहर विचारे किछु निर्णय नहि लेबौ, यद्यपि तों हमर सभक निर्णयकेँ अस्वीकार करबें से सन्देह सपनहुँमे नहि अछि। डाक्टर साहेब, यद्यपि, तोहरबाबूकेँ कोनो आश्वासन नहि देलखिने किन्तु झुकाव हमरासब दिस छनि से बूझि पड़लनि। आखिर हमरासबके चाहबो की करी, खाइत-पीबैत सुखी-संपन्न घर छैक आ सब चीन्हल-जानल सेहो। आ हमरासबकेँ विश्वास अछि तों जाहि वातावरणमे पलल-बढ़ल छें ताहिरूपें तोहर देखभाल, मान-सम्मान आ बात-विचांर हेतहु। सुख आओर थिकैक की ?

समीर हमरा मोन अछि। ओ यद्यपि इंजिनीयरिंगमे एडमिशन ल' लेलक बी. आइ. टी. मे। किन्तु, के कहैए कतेक दिन लगतै। आ फेर इंजिनीयरकेर आइ-काल्हि मांगो कतेक छैक। तोरा ओकर चिट्ठी अबैत छौ कि नहि ?

खैर, ई चिट्ठी एहि आशासँ लिखैत छियौक जे तों अपन बुद्धि-विवेक, इच्छा-आकांक्षा आ अपन जीवनक पृष्ठिभूमिकेर ख्याल रखैत अपन विचार लिखबें। हम एहि चिट्ठीक संबंधमे तोरा बाबूकेँ नहि कहने छियनि।

नीकसँ खाइत-पीबैत छें कि नहि ?

दुलार,
चिट्ठीक प्रतीक्षामे,
तोरे,
माँ।

रतिक मोन खौंझा गेलैक...'मायओके इएह मौका भेटलैक। एखन फार्म

भरबाक अछि । परीक्षा अछि । कैरियरकेर सवाल अछि । किन्तु, माय एखनहुँ ओही धारणासँ ग्रस्त अछि जे लड़कीक कैरियर चूल्हे फूकब छैक !

किन्तु, फेर ओ पश्चाताप करैत अछि....''नहि नहि । से रहितैक तँ रांची पठाकए जियोलोजी पढ़यबाक की प्रयोजन छलैक । करछु-कौमुदी त' गामहुँमे सिखा सकै छल ओ ।''

करछु-कौमुदीक स्मरणसँ ओकरा जीहमे पानि आबि जाइत छैक....''बा, माँ केहन सिद्धहस्त अछि एहि कौमुदीमे ! ओकर बनाओल सिंघाड़ा आ अनरसा !! जेहने मीठ पाक बनाओत तेहने नोनगर ।'' आ एहीपर ओ कैम्पसहिमे ठाढ़भेल खोमचावलाकेँ बजाकए भूजाक एक पुड़िया लकए भूजा फंकैत अपन कोठली दिस विदा भ' गेलि ।

परीक्षाक दिन लगिचा गेल छलैक । सबेरे-सकाल भोजन-भाजन क'कए सब अपन-अपन पढ़ाइ-लिखाइमे लागि जाइत छल । रतिसेहो किताब ल' कए बैसलि त' नजरि पड़लै मायवला चिट्ठीपर । उठाकए फेर पढ़य लागलित' ओकर आँखि पुनः ओही पांतीपर आबिकए ठमकि गेलैक...

''खाइत-पीबैत सुखी-संपन्न घर छैक आ सब चीन्हल-जानल सेहो । आ हमरासबकेँ विश्वास अछि तों जाहि वातावरणमे पलल-बढ़ल छें ताहि रूपे तोहर देखभाल, मान-सम्मान आ बात-विचार हेतहु । सुख आओर थिकैक की ?'' .... एहि वाक्यपर आबिकए ओकर दृष्टि पुनः स्थिर भ गेलैक ।

ओ सोचैत अछि—ठीके, सुख आओर थिकैक की? प्रेम आ मान-दान त' आवश्यक छैक किन्तु, भौतिक सुखक बिना की ओ पूर्ण होइछ ? समीरत' ठीके बड्ड सीरियस अछि । ओकर स्पर्शमे ठीके असीम ऊष्मा छैक किन्तु, जेबी ? शरीर आ हृदयक ऊष्मा त' जेबीकेँ गर्म नहिएँ करैत छैक ! आ से नहि हेतैक त' छुच्छ हाथ आ खाली जेबी लोकक मोनहुँकेँ शून्यकए दैत छैक । आ तखनि की ओकर श्वासक ऊष्मा हमर हृदयकें संतुष्ट कए सकत ? माय त' ठीके कहैत अछि इंजिनीयरिंगकेर एखनि कोन प्रास्पेक्ट छैक ।

किन्तु, फेर एके बेर ओकरा लगलैक जेना अचानक केओ ओकरा एक सटका दागि देने होइक... ''तोंहू बड़ मतलबी छें । जे अपन हृदय तोहर आगां राखि देने छौक तकरा छोड़ि क्षणेमे तों ओकर दास भेल जा रहल छें जकरा तों ने चिन्हैत छही ने जनैत । जँ ओकर किछु परिचय छैक त' मात्र बापक डाक्टरी आ घरक ऐश्वर्य !''

एही गुन-धुनमे बोर भ' कए रति अंततः ओङघा गेलि आ अपन अनिर्णयतापर खौंझाकए पोथी एककात पटकि चद्दरि तानि पड़ि रहलि ।

किन्तु, निर्णयहीनता, ओङघी आ निन्न ओहि विचारक्रमकें तोड़ि कहाँ पओलकैक ।

परीक्षा समाप्त भ' गेल छलैक । रति गाम आएल छलि । एही बीच मे काफी दिनक बाद ओकरा भारतीक एकटा चिट्ठी एलैक... ।

रति,

तों त' ठीके बिसरि गेलैं । हमरा त' बच्चा अछि आ बच्चोकेर बाबू सेहो । घर अछि, आश्रम अछि आ तोरा ? आ कि किछु नव खबरि छै ? समीरक चिट्ठी अबै छौक कि नहि ? हिनकर नौकरीक एखनहुँ किछु ठीक नहि छनि । कओलेज करै छथि । दरमाहा ? दशतखत जतेकपर करैत होथि किन्तु, प्रिंसिपल आ सेक्रेटरीक ग्राससँ बाहर मात्र पांचे सौ अबैत छनि । तही ल कए निमहि रहल छी । तखनि हमरा हिनकर ई व्यवसाय पसिन्न अछि । दूटा हो वा चारिटा, जे क्लास हो तकर बाद फुर्सति । दिन अपन आ राति अपन । साँझ भिनसर सेहो अपने ! बुझलीही ! साँझक फुर्सति भेलासँ अरविन्दकेँ सेहो पढ़ा दैत छथिन आ भोर क' हमहू किछु सीखि लैत छी । विचार अछि एहिबेर अही काॅलेजसँ आइ.ए.क परीक्षा दी ।

तोहर हाथक चिट्ठी देखैले आँखि तरसैए । बुझने हेबही कमलीक विवाह सेहो ठीक भ' गेलै । वर बैंकमे नोकरी करै छै ।

तोरा गालपर एकटा चुम्मा ।

तोरे,

भारती ।

रति सोचैत अछि....."वाह, गै भारती । तों त' भगवान बुद्ध भ' गेलें । वाह, छौंड़ी ! वाह, फिलासफर ।'....ओ मोने-मोन हँसैत अछि ।...कतेक दिन आओर ? देखही । थोड़बे दिनक भीतर परिभाषा बदल' लगतौ जखनि परिवार बढ़तौ, खर्च बढ़तौ आ तंगैची लगतौ ।

नहि । हम एहि बातकेँ नहि मानै छी । माय ठीके कहैए...नीक रहन-सहन, मान-सम्मान आ चिंताहीनताक अतिरिक्त सुख थिकैक की ! आ रहबे करतैक त' की ? आब एहन कोनो नहि जे किशोरकेँ हम देखने नहि छिऐक, गप्प नहि केने छी । गोर-नार, कान्तिवान मुँह आ स्वस्थ शरीर त' ठीके छैक । आखिर माँ-बाबूजी हमर अनिष्ट कोना सोचताह !......ई सोचिकए ओ माय-बापक प्रति दुलार आ कृतज्ञतासँ भरि जाइछ ।

किन्तु, समीर ओकरा एखनहुँ बिसरल नहि छलैक आ ओ अपन निर्णयहीनताक स्थितिपर विजय नहि पाबि सकल छलि । किन्तु, किछुए दिनमे एकटा एहन घटना भेलैक जे ओकर निर्णयहीनताकेँ निर्णयमे बदलि देने रहैक ।

डाक्टर साहेबकेँ एक राति पेटमे दर्द उठलनि, आ तड़ातड़ि बमन । श्वास लेब मोसकिल । सब कहनि किछु नहि, अपच आ थकान थिक । किन्तु, गाड़ी तैयार भेल आ डाक्टर साहेब दरभंगा चल गेलाह । सब जांच-पड़ताल भेलनि । जांच-पड़तालक परिणामसँ स्पष्ट छलैक जे डाक्टर साहेबक अस्वस्थता अपच आ थकानक लक्षण नहि छलनि । डा. एन. एन. सिंह कहलथिन—''यद्यपि फ्रैंक इनफारक्सन नहि अछि, अहाँ अपनहुँ डाक्टरे छी, किन्तु ह्रदयमे इस्किमिया अवश्य अछि । तेँ खान-पानमे संयम आ चिंता-बेगरता बेसी नहि ।''

डाक्टर साहेब सोचलनि—''हमरा चिंता अछिए कथीक ! सुख-सुविधा त' एहिसँ बेसी नहिए चाही, तखन जिनगी-जानक कोन ठेकान । रतिकेँ ककरो हाथ लगा दिऐक अपना जिनगी अछैत त'.... ।''

रति त' सेहो दिमागक कमजोर नहिए छलि । बापक नव अस्वस्थताक खबरि आ ओकरासँ आँखि बचाकए माय-बापक खुसुर-फुसुर ओकरा ल काफी संकेत छलैक । तेँ ओ सोचलक.....'अनिर्णयताक ई स्थिति आब बेसी दिन ठीक नहि । हमरा आब निर्णय लेबहि पड़त । एहि पार वा ओहि पार ।'

आ एहि संगे ओकर माथ आ मगजमे शुरु भ' जाइत छैक संघर्ष : प्रेम आ विवाह आ विवाह आ प्रेमक बीचक तर्क-वितर्कमे ओ सोचैत छलि.....''समीरकेँ सेहो हम कतेक जनैत छिऐक । भेंटोत' संयोगेसँ होइत छले । आं ओकर परिवारमे ककरा की जनैत छिऐक ! माय-बाबू थोड़ेक जनैत छथिन, सेहो एहि दुइए-तीन वर्षसँ । किन्तु, किशोर आ ओकर पितासँ त' बाबूओक संपर्क पुरान छनि, मेडिकल कॉलेजक जमानाक । वरतँ खराब नहिए छैक से त' हम अपनहुँ देखिए नेने छिऐक आ ताहिपरसँ ई परिवार बाबूजी आ माँओकेँ पसिन्न छनि ।'

आ इएह तर्क-वितर्क ओकर अनिर्णयकेँ निर्णयमे बदलि दैत छैक ।

माय जखनि ई गप्प रतिक मुँहसँ सुनने छलथि त' हुनकर खुशीक ठेकान नहि रहलनि । डाक्टर साहेब सोचलनि....''आखिर ई त' सिद्ध भइए गेल जे नेनपनेटामे हमसब रतिक विश्वासपात्र नहि रहिऐक, आइओ छिऐक । खैर आदि नीक तँ अंतो नीक'' कहि डाक्टर साहेब नि:श्वास लेलनि आ मने-मन ईश्वरकेँ स्मरण कयलनि ।

आ से ठीके भेलैक । सबटा शुभ-शुभ सम्पन्न भ गेलैक आ रति अपन घर चल गेलि ।

किन्तु, आइ ? आइ एतेक वर्षक बाद रतिकेँ लगैत छैक, ओकर ओ निर्णय जे ओकर जीवन धाराकेँ मात्र सुख-समृद्धिक आकांक्षाक कामनाक कारण 180 डिग्री मोड़ि देलकैक, सर्वथा अनुपयुक्त छलैक । आरंभिक सुख-समृद्धि त' ओकरा ठीके

भेटलैक किशोरक साहचर्यमे । किन्तु की ओ भौतिक सुख-समृद्धि ओकर आत्माक भूख मेटा सकलैक, पति-पत्नीक बीच परस्पर आदर आ विश्वासकेँ स्थापित कए सकलैक ?

करबो कोना करितैक ? ठीके जहिया ओकर विवाह भेल रहैक तहिया ओ अपन मायक विचारसँ सहमत भ गेल रहए । किन्तु, आइ ? आइ जखनि ओकर आत्मा परिपक्व भेलैए, एहि विस्तृत समाज आ परिवारसँ पृथक भ' कए अपन मोनकेँ चिन्हलक अछि, अपन आवश्यकताकेँ, अपन इच्छा-आकांक्षाकेँ विवेकक तराजूपर जोखलक अछि त' ओकरा लगैत छैक जे तहिया ओ भयानक दृष्टि-दोषसँ पीड़ित छलि ।

कतेक कष्ट भेल रहैक ओकरा जहिया ओकरा समक्षे किशोरकेँ बाप कहने रहथिन....''हमत' पालि-पोसिकए घोड़ा बना देलिअह । पढ़ा-लिखाकए बी. एस-सी. करा देलिअह । किन्तु आबत किछु करह । कहिया धरि हमरा पर ओङठल रहबह ?''

रतिकेँ भेल रहैक धरती किएक ने फाटि गेलैक आ ओ ओहिमे समा जाइत । कारण किशोर त' लाज-संकोचक परिधिसँ बाहर छलाह । तथापि रतिक धैर्य नहि टूटलैक । ओहो दिन ओकर धैर्यनहि टूटलैक जहिया किशोरकेँ मेडिसिनक एजेंसी चलाएबाले बाप सम्पूर्ण पूंजी देब नकारि देने रहथिन आ तेँ किशोर रतिक गहना-गुरिया सेहो लगा देने रहैक आ तथापि व्यवसाय ठामहि बैसि गेल रहैक । किन्तु, आब ? धीया-पूताक भविष्यक प्रश्नपर रतिक तर्क-वितर्कसँ नरछिकए किशोर जखनि रतिक गालपर एक थापड़ लगा देलखिन त' रति एकरा सहि नहि सकलि । ओकर आत्म-सम्मान आ व्यक्तित्व ओकरा एहि नारकीय जीवनसँ सर्वदाकलेल स्वच्छन्द भए जएबाक लेल प्रवृत्त कए देलकैक आ तेँ ओ आबिगेल अछि रांची छोड़िकए । किशोरकेँ सर्वदाकलेल परित्याग करबाक निर्णय ल' कए, तलाकक, प्रक्रियाक आरंभिक औपचारिकता पूर्ण क' कए ।

माय झूर-झमान छथिन । बाप छथिन्हे नहि तेँ ओ एहि हर्ष-विषादसँ सर्वदाकलेल मुक्त छथिन ।

किन्तु, रति एहि लेल बेचैन नहि अछि । ओकर बेचैनीक कारण दोसर छैक ।

गत एक हफ्तासँ समीर पुनः एहीठाम अछि । ओकरा जखनि रतिक स्थितिक खबरि भेलैक त' दू-तीन दिन पूर्व हिम्मत क कए ओ सोझे आबिकए रतिक मायकेँ पूछि लेलकनि...'काकी, रति छथि ?'

......हँ । आउने । कहिया एलहुँ ?....कहैत रतिक माय हाक देलथिन....'रति' ?

......हँ ।

.....'चल जाउने अपने कोठलीमे हएत ।'-कहैत जखनि रतिक माय देखलखिन जे समीर रतिक कोठलीमे चल गेलाह त' ओ अंगनासँ टरि गेलीह ।

रति समीरकेँ अकस्मात् अबैत देखि धड़फड़ा गेलि । किछु आश्चर्य, किछु विस्मय, आ अन्तरमे सुसुप्त प्रेम जकां सब कथूक अनुभूति ओकरा एके बेर भ' उठलैक ।

......'अहाँ ?'

.....'अहाँ ने बिसरि गेलहुँ किन्तु, हम नहि ।' समीर मूड़ी झुकौनहि उत्तर देलकैक ।

रति मौन रहलि । पुन: समीरे मौन तोड़ैत कहलकै.......'अहांक लेक्चरशिपवला जौब सुनै छी निश्चिते अछि ?'

.......देखा चाही । अहां कतय छी ?

....पटना इंजिनीयरिंग कालेजमे ट्यूटरक पदपर । अहां यूनिवर्सिटी ज्वाइन करब कि नहि ?

..........किएक नहि । रति दृढ़ता सँ बाजलि ।

........चलू तहिया नहि त' आब त' बराबरि भेंट-घांट भइए सकत ।

रति मौन रहलि ।

किन्तु समीरकेँ ने ओतेक धैर्य छलैक आ ने ओतेक समय । जँ किछु आवश्यक छैक त' उपयुक्त मन:स्थिति ।

''आब त' दूनु गोटे एके परिसरमे रहब । हम त' भाग्यपर विश्वास नहि करैत छी किन्तु निश्चय पर अवश्य । हमरा ले त' अंही छी वा केओ नहि ।''

रतिकेँ भलैक जेना ओही दुपहरिया जकाँ समीर ओकर ठोर फेर चूमि लेलकैक । ओकर मुँह रक्तिम भ अएलैक आ देह ऊष्ण । कान झनझनाए लगलैक आ कनपट्टीक धमनी सभक स्पंदन स्पष्ट सुनाए लगलैक । ओ किछु बाजि नहि सकल । आश्चर्य, विस्मय, ग्लानि आ हर्षक सम्मिश्रण ओकर वाणी अवरुद्ध कए देलकैक ।

कनेक ठमकिकए समीर फेर बाजब आरंभ कएलक....''रति हम परसू जाएब । यद्यपि 'मौनम् स्वीकार लक्षणम्' कहैत छैक । किन्तु एहि घंसल-पिटल कहावतक सहारालए एहि समाजक कन्या सब पर जे अत्याचार होइत अएलैए तकरामे ने हमरा विश्वास अछि आ ने अहाँ अपन विचार स्पष्ट करबामे असमर्थ छी । तेँ अहांक निर्णयक प्रतीक्षा रहत ।''.....आ ई कहैत समीर घरसँ बहराए सीढ़ीसँ नीचां उतरि गेल छल ।

रति गत दू-तीन दिनसँ इएह सोचि रहल छलि । किन्तु आइ एहि जेठक दुपहरियामे जखनि निन्न नदारद छैक रति एकटा निर्णयपर पहुँचि गेल अछि । ओ पटियापर पड़ले-पड़ल एकटा कागतक टुकड़ी उठबैत अछि आ दूरमे पड़ल कलम कैं अपनादिस घीचि लीखैत अछि....

समीर,

ठीके प्रेमक हेतु ने कोनो ऋतु निर्धारित छैक आ ने कोनो बयस । लेकिन ताहूसँ बेसी जे हमरा आइ अनुभव भेल अछि ओ ई अछि जे सुख आ दु:खक बीच की अंतर छैक । गत पांच वर्षसँ भौतिक ऐश्वर्यक मरीचिकाक पाछू भुतिआइत हम दु:खी छलहुँ किन्तु आइ पतिक परित्यागकए सेहो सुखी छी । किन्तु, तथापि एहन कोनो कारण नहि छैक जे हमरा एहिसँ सुखकर जीवन वरण करबासँ विमुख करए । माय सेहो हमर विचारसँ सहमत अछि । हम अहींक संग पटना चलब । हमरा संग करए एहिबेर पछुआड़ द कए नहि अहां दरबज्जहिपर द कए आबी ।

—रति

रतिकैं लगलैक फेर कनेक बसात सिहकलैए आ ओ फेर ओत्तहि ओङघरा गेलि ।

❑❑❑

पसरैत अन्हार

हापा जम्मूतवी मेल जखन बड़ोदरा सँ खूजल तँ मूसलाधार वर्षा भऽ रहल छलैक। लोक तीतैत-भीजैत ट्रेन में चढ़ल तँ ओतहु हूलि मालि भऽ गेलैक। मुदा, क्रमशः जेना-जेना लोक केँ अपन-अपन बर्थ भेटैत गेलैक, सेट होइत गेल। थोड़बे काल मे भीड़क जे हूजूम छल से कमि गेल। लोक आश्वस्त भऽ गेल छल। हमहूँ ताधरि अपन साइड-लोअर-बर्थ पर बैसि कऽ भोरूका अखबारक गहन परायणमे लागि गेल रही। ट्रेन जे लगले हवाक संग गप कऽ रहल छल से ओकरो गति आब क्रमशः कम होमय लागल रहैक। मुदा हमरा तेँ की ? दिल्ली धरि जयबाक छल। बाटमे केओ सङबे नहि आ मध्यवर्ती स्टेशन सब पर ककरो अएबाक प्रतीक्षा नहि। ट्रेन में ओहुना सहयात्री लोकनि सँ अगबे राजनीतिक गप वा ताश खेलाएब हमरा पसिन्न नहिं। अखबारक संग नीक लगैए से अछिए। पत्नी हमर समाचार-पत्रक प्रेम के देखैत ओकरा अपन सौतिन मानै छथि। आ धीया पूताकेँ कतेक बेर कहैत सुनने छिअनि–जँ मन होअए जे दादा कोनो गप्पमे, रवि दिनक छुट्टी मे, कोनो दखल नहि देथि तँ भोरे टाइम्स, हिन्दू, एक्सप्रेस आनि चाहक सङे हाजिर कऽ दिअनु ! ओहो खुशी आ हमरो लोकनि।

मुदा, ट्रेन जहाँ कि ठमकलै कि एकटा बन्धु हमर दहिना दिसक सामनेक खिड़की लगसँ, बतर फनैत, अएलाह आ खिड़कीक बाटे मुड़िआरी दैत पुछलनि ''गोधरा थिकै की ?'' हँ। प्रायः हम अन्यमनस्क भावे उत्तर देलिअनि।–''जरलाहा रेलक डिब्बा तँ हेबे करतैक ?''

की एकाएक हमर भक्क टूटल। इएह तँ गोधरा थिकैक जाहिठाम सताइस फरवरी दू हजार दू केँ जे बर्बरताक बीजक पेंपी देलक सएह भरिए दिन, राति, सप्ताह आ मास मे एहन विशाल विषवृक्षक रूप लऽ लेलक जकर विषक असरि कतेको वर्ष धरि जनताक शरीर मे असह्य पीड़ाक कारण बनल रहतैक। मुदा जावत् हम किछु कहितिअइ दोसर दिस बैसलि एकटा महिला जे प्रायः एहि पीड़ाजनक अध्यायक भुक्त भोगी छलि अनायासे बाजि उठलि–''ओ जरलाहा डिब्बा नहिए छै एतऽ तँ की ? आब त' ओकर फोटो घरे-घर भेटत। चुनावक समय जे आबि गेलैए।'' हमर सहयात्री बन्धु

प्राय: एहि प्रकारक अनायास भड़ासक आशा नहि करैत छलाह । मुदा किछु कहलथिन नहि । मात्र ओहि महिलाकेँ वक्र दृष्टिएँ देखैत अपन सीट धरि जा कए बैसि गेलाह ।

मुदा हमरा मनकथा लागि गेल ।

1982 ई० मे दरभंगा मे रही । नहि जानि मुहर्रम वा सरस्वती पूजाक समय छलैक । शहरमे साम्प्रदायिक तनाव भऽ गेलैक । प्रशासन एकाएक कर्फ्यूक घोषणा कऽ देलकैक । हमरा लोकनिक इलाका हिन्दू बहुल छल । मुदा हमरा सभक डेरा जाहि मे हमर काकाक दोकान सेहो छलनि मे सेल्स मैन अख्तर महमूद हमरा लोकनिक गुरुजी आ तेँ गार्जियन जकाँ सेहो छलाह । जखन कर्फ्यूक एलान भेल रहैक, साँझ भऽ गेल रहैक । हमर काका जे सामाजिक कार्यकर्त्ता सेहो छलाह जा धरि घूमि टहलि कऽ डेरा आएल रहथि तँ बंद दोकानक फाँक सँ भालरि जकाँ कपैत महमूद साहेब केँ देखि हँसी लागि गेल रहनि । पूछलथिन—की महमूद ?

....मालिक, दंगा भऽ गेलैए । आब हम डेरा कोना जाएब ?

.....डेरा जा कऽ की करब ? आइ एतहि रहू । बौकू रोटी बनाओत । मुदा महमूद साहेबक भयाक्रान्त चेहरा मे कोनो परिवर्तन नहि अयलनि ।

.....मालिक दंगा छै । रायट ! हमर डेरा तँ उर्दू मे अछि । मुदा एतऽ सँ हम बाहरो कोना निकलब ।

मुदा काका महमूदक भावनाकेँ बूझि तुरते हुनका अपना संगे लऽ कएं घर तक पहुँचा अयलथिन । मुदा, आइ बीस वर्ष बाद.... ?

भक्क टूटल तँ हम ओहि स्पष्टवादी महिलाकेँ दोसर सँ बतिआइत देखलहुँ । हुनका दोसराति भेटि गेल रहनि । आ गप्पक विषय आ वाणीक वेदना एहन रहैक जे हमर कान ओम्हरे आकर्षित भऽ गेल आ पेपर केँ कात राखि हमहूँ हुनके लोकनिक गप्प सूनय लगलहुँ ।

........एकटा भूकम्प तँ बीति गेल । मुदा आब नहि जानि की की होएत । फेर चुनाव आबि रहल छै । फेर रेलक जरलाहा डिब्बाक फोटो गली-मुहल्लाक देबाल पर आ राजनीतिक कार्यकर्त्ताक छाती पर गोबरछत्ता जकाँ जनमि आएल छैक । पहिलुका दंगा तँ भूकम्प छलैक जरैत-ढहैत घर आङन सँ भगलहुँ तँ अपने प्राण धरि बाँचल मुदा आब जखनि घर-आङनहुँ चल गेल तँ बचएबा लेल तँ अपने टा जान अछि, अपने टा प्राण अछि ।'' कहैत महिला एकटा दीर्घ श्वास छोड़लनि ।

एना किएक कहैत छिऐक ? आब सब गप्प सेरा गेलैक । वर्ष दिन भऽ गेलैक । केहनो गहीर घाव होइत छैक, काल ओकरा भरि दैत छैक । संयोगक गप्प छिऐक जे एहन भऽ गेलैक से भऽ गेलैक ।

सामने बैसल महिलाक आँखिमे नोर आबि गेलैक । लागल जेना वाणी सेहो अवरुद्ध भऽ गेलैक । मुदा छल ओ आगिक तपाओल । अपन आँचर सँ नोर पोछि प्रकृतस्थ भेलि पुन: कहए लागलि–''हँ, हमरा सबकेँ तँ विश्वास नहिएँ छल कतहु एना भऽ सकैत छैक । बिहार केँ लोक बड़ पिछड़ल प्रान्त कहै छै, अर्थ आ शिक्षा दुनू सँ मुदा........ ।

हम कने साकाक्ष भेलहुँ । बुझाएल जे ओ महिला बिहारे दिसक छथि मुदा, आब प्रवासी भऽ गेल हेतीह । ओ कहि रहल छलीह ''हमरा लोकनि जखन नेना रही तँ गाम मे मुसलमानक टोल फूट अबस्स रहैक । ओकरा लोकनिक पानि नहि चलैक । ओ लोकनि इनारक चबूतरा पर नहि चढ़ए । मुदा, खेतक-जजातक कटनी-दउनीमे जखन अङनाघर जाए तँ ककरो बुझबामे नहि अबै जे ओ अछोप छी । सबके बाबू भइया, काका-काकीए कहि कऽ सम्बोधन करै । आ जखन मुहर्रम मे दाहा-तजिया निकलै तँ अवधारि कऽ जुलूस टोले-टोले घूमै । टोलबैया छौंड़ा सब जकर माय-बापक कबुला रहै से डांड़ मे घुँघरू-घंटी बान्हि, हाथमे लाठी, पेना लेने जंगी बनए आ 'हा हुसैन-हा हुसैन' करैत टोले-टोले बाना बंन्हने घूमय । एतबे नहि टोल परक मउगी लोकनि जाहिठाम दाहा राखल जाइ ताहि ठाम डोले-डोले पानि आनि कए दाहाक पएर पखारए आ भूमिकेँ पानि सँ पटाबय मुदा, जखन अपने मुहल्ला मे अपने पड़ोसिया केँ एक-दोसरक शोणित सँ माटि रङैत देखलिऐक तँ भेल, हे भगवान ! एहि देशक अदिन आबि गेल छै । आ जखन अपने समाज एहन भऽ गेल तँ कतए—जाएब कहैत महिला गुम भऽ गेलीह ।

....ठीके कहै छिऐ । दोसर बजली ।

.......ठीक कतहु नहि कही । हमरा लोकनिक गाम घर छूटि गेल । खेत-पथार रहल नहि । किछु घर-गृहस्थी मे बोहा गेल आ बांकी दर-दियादी मे बंटा गेल । गामघर मे कथुक द्वारा नहि रहलै । नौकरी चाकरीक अवसर नहि । व्यापार, दोकान दौड़ी लए पूंजी चाही । करितहुँ तँ की ? सब गोटे एतहि अहमदाबादमे आबि कए शरण लेने रही । आने सब लोक जे अपन इलाका सँ आएल छल तकरे जकाँ हमरो घरवला कपड़ाक कारखानामे काज शुरू केने छलाह । रहबाक ठौर नहि, नियामिकी काज नहि । दूटा बेटा सेहो छल । मुदा दिन धुरल । एतहि । घरो-आङन भेल, बाल-बच्चा सेहो सुधरल मुदा, आब किछु नहि रहल । किछु नहि रहल । हिचकैत, आँचर सँ आँखिक नोर पोछैत महिला बाजलि छलि ।

........की करबै, दिनक फेर छै । सब दिन एक रङ नहि रहै छै । दोसर महिला बोल-भरोस दैत बजली ।

.....हँ, दिन एक रङ नहि रहै छै। मुदा मनुखक जीवन बड़ा छोट होइत छै। हिम्मतो रहला पर सब किछु घूरि कऽ नहि अबै छै।

........ठीके, मुदा अहाँ अपने कहै छी, अहाँ केँ किछु नहि छल। सब किछु अपने बलें ठाढ़ कएने छलहुँ। फेर भऽ जाएत।

........नहि-आब नहि। एकबेर पहिनहुँ लागल छल—सबटा चल गेल छल। मुदा नहि जानि कोन ईश्वर, की नाम दिअनि, प्रतापे खुशी आपस आबि गेल छल। मुदा......

महिला पुनः अतीत मे हेरा गेलि आ बाजऽ लागलि—"हमर बेटाकेँ बड़ लौल रहै। फौज में भर्ती होएब। सब कहै कतए जएबें। सब सरि भऽ कऽ संगहि रहब। मुदा ओकरा हठ नहि छुटलै। मैट्रिक पास करिते भरती भऽ गेल छल। सुनै छिऐ फुटबॉल-हॉकी खेलनिहार केँ फौजी सब ताकि-ताकि कऽ लऽ जाइ छै। हमरो छौंड़ा फुटबालमे, लोक कहैत छल, अजगुत छल। हम तँ खेलाइत देखने नहि रहिऐक। सुनै छिऐक ओकरा एही गुणक कारणे नौकरीओ मे उन्नति भेटैत गेलैक। ताधरि परिवार नहि बसेने छल। महिलाक स्वर टूटऽ लागल रहैक। आवाज दबि रहल छलैक। मुदा ओ बाजिए रहल छलि। .....बरख तीनिएक तँ नौकरी केना भेल रहैक कि किदुन कारगिलक लड़ाई शुरू भऽ गेलै। हमरा लोकनिक छाती तँ फाटय लागल, मुदा हमर बेटाक तँ खुशीक हिसाबे नहि रहै। कहै जे एहन-एहन मौका तँ ककरो-ककरो भेटै छै। फौज में भरती भऽ कऽ लोक बुढ़ा गेल। पेन्शन चल गेल। मुदा लड़ाइ नहि देखलक। फौजक लेल ई अवसर भेटब गर्वक बात छै गे माँ। हमरा लोकनि कहुना मनके मनाबी। दिन राति राम-रहीमक ध्यान लगाबी।

एक दिन तार आएल—बेटा अस्पतालमे भर्ती अछि। बचबाक आस नहि। मुदा भगवान सुनलनि। दिन घूरल। ओकर प्राण बचि गेलैक। अपन जान अपटी खेत मे राखि अपन कंपनी लए लड़ल छल। बड़ नाम भेलै। यश भेलै। छब्बीस जनवरी केँ राष्ट्रपति ओकरा अपने हाथे इनाम देने छलथिन।

........तें त' कहलहुँ दिन एके रङ नहि रहै छै। दोसर महिला बजली।

ता ट्रेन नागदा-रतलाम पार कऽ गेल छल। ट्रेनक डिब्बा मे इजोत मिझाए लागल रहै। किंतु महिला लोकनिक गप्प हमरहु मनकेँ मथए लागल रहए। ठीके, मने अछि कोना हमरा लोकनि दरभंगा गंगासागर पोखरि पर छठिक भोरका अर्घ्य दिन जाइ। आ प्रसाद मांगि-मांगि खाइ। आ ताहिमे हमर रूम-मेट मुसर्रत हुसैन आगू बढ़ि-चढ़ि कऽ हिस्सा लिअए। संगे मिलि कऽ हमरा लोकनि होस्टल में सरस्वती पूजा आ मिलाद-उल-नवीक उत्सव मनाबी। मुदा कतऽ चलि गेल ओ सौहार्द्र। एहि बेर देखलिऐक

जाहि आबिद सुरतीक पिताक घर बंगाली टोलामे रहैक ओ आब घर बेचिकए उर्दू बाजार में एकटा प्लाट लेलनि । मनमे होअए लागल कि स्वतंत्रताक पचास वर्षक पछाति हमरा लोकनि एहि देशमे एक दोसराले 'घेंटो' आ 'कन्सन्ट्रेशन कैम्पक' निर्माण करब । की गाँधी-नेहरू-विवेकानन्दक परिकल्पनाक भारत इएह थिक, जतए हमरा लोकनि पूजा-स्थलक नीब खोदि-खोदि कए फैसला करब जे कतए मंदिर छल आ कतए मस्जिद । ठीक छै । मंदिर मस्जिद खोदि लैह मुसलमानक झंडा पर जे चान छैक आ चौठचन्द्र मे जाहि चानक पूजा करै छह ताहू पर आरि बन्हबह ! खूब मनमे गजैत रहह हिन्दू-छी आ मुसलमान मुदा जहिना एक देशमे बहैत नदीक जल कतहु....ने....कतहु एक दोसरा सँ मिलिते छैक तहिना सभ्यताक बहाव मे ककर शोणितक स्रोत कतय छैक से ताकब ओतबे कठिन जेना हिन्द महासागर मे गंगा-यमुना-सिंधुक पानिकेँ फुटकाएब । विचारक बहाव चलिते छल की ट्रेन फेर अंटकल तँ ध्यान टूटल । प्राय: कोटा छल । इम्हर महिला लोकनि गप्प करिते छलीह । पहिल महिलाक स्वर ऊँच छलनि । हुनक गप्पक स्वर सँ लागल जेना सत्ते देश पर साओन-भादवक मेघ जकाँ विनाशक भयानक छाया मंड़रा रहल होइ । ओ अनवरत बाजि रहल छलीह ।

........"हमर बेटा देशक दुश्मनसँ सीमा पर लड़िकऽ मृत्युक मुँह सँ घुरि आएल छल । मुदा अपने शहर ओकरा काल साबित भेलै । एतहि अहमदाबाद मे ओ अपने लोकक हाथे मारल गेल । कहिऐ दंगा थिकै । लोकक मति फीरि गेल छै । जुनि बहरो । मुदा ओ नहि मानलक । कहय, आजुक दिनमे दंगा कुर्सीक जननी थिकैक । धुर-जो, दुश्मनक मुँहसँ बाँचि कऽ आबि गेलहुँ । आब हमरा की होएत । दंगा आ एहि मुहल्लामे ! हम होमए देबै तखन ने...... ? लेकिन.....

महिला जे एतेक काल धरि धैर्य रखने छलि से हिचुकए लगलीह । हमरा और किछु सुनबाक आवश्यकता आ बुझबाक जिज्ञासा नहि छल । ट्रेन द्रुतगति सँ चलल जा रहल छल....जै जै काली ! जै-जै अली !

जनता ट्रेनमे नि:शब्द छल । देशे जकाँ बाहर भयानक अन्हार पसरि आएल छलै ।

'घर-बाहर' मे प्रकाशित

शिवचंद

'शिवचंद !'—नामक पुकार भेलैक।

यावत् हम ओहिसँ पहिलुक रोगीक केस-फाइल देखिकए कात कएलहुँ, अगिला रोगी कोठलीमे आबि सामनेक कुर्सी पर बैसि चुकल छल।

'शिवचंद ?'—फाइल पर लीखल नाम पढ़ैत हम पूछलिऐक।

.....'जी।'

आँखिक रोगी देखैत-देखैत हिस्सक भऽ गेल अछि, दृष्टि सबसँ पहिने चेहरे पर जाइए। कारण, हमर रोगीसभक मूल रोग भले जे किछु होइक किन्तु, शिकाइत तँ ओ सभ आँखिएक लऽ कए अबैत अछि–ककरो मोतियाविन्दु, ककरो कालामोतिया, ककरो डेऱ आँखि तँ ककरो नोराइत उठल आँखि। किन्तु, हमर आगू बैसल रोगीक चेहरा पर जे हमरा अकस्मात् आकृष्ट कएलक ओ किछु नवीने छल–शिवचंदक ललाटक दहिनाभाग ऊपर दिस बेस पैघ चन्द्रमा आ तकर ऊपर, पेटमे, ताराक खोधा। आश्चर्य भेल। भगवान शिव तँ चन्द्रशेखर अवश्य छथि किन्तु, चाँद-ताराक एहन चिह्न हिन्दू धर्मावलंबीक सूचक तँ नहिएँ। आ सत्यतः हम अपन जिज्ञासा रोकि नहि सकलहुँ। पूछलिऐक—'नाम शिवचंद आ माथपर चांद-तारा ! मुसलमान थिकह ?'

शिवचंद हँसए लागल। किन्तु, किछुए क्षणक पश्चात् गंभीर होइत बाजल—'सरकार, हिन्दू-मुसलमान की कहू, मुदा एही खोधाक दुआरे हमर जान बँचल अछि तेँ एकरा बचाकए रखने छी।'

—'अच्छा ?'

—'जी ! आबक लोककेँ कहबैक तँ के पतिआएत ? मुदा हमर गप्प तहिओ लोकक पतिअएबा जोगर नहि रहैक।' एतबा कहैत शिवचंद अपन स्मृतिक संसारमे हेरा गेल आ ओकर कथा आरंभ भऽ गेल रहैक—तहिया हिन्दुस्तान-पाकिस्तानक आंदोलन आ देशक बँटवाराक समय रहैक। हमरा लोकनि तँ नेना छलहुँ। तेँ किछु बुझबाक ज्ञान-प्राण नहि छल। हमरालोकनिक घर एखनुका हरियाणाक महेन्द्रगढ़ जिलाक एक गाममे छल। हमर जेठि बहिनक बिआह एखनुका पंजाबक पछबरिया

सीमालगक एकटा गाममे भेल रहैक । हम बराबरि बहिनक ओतए जाइत रही । हमर बहिनक पड़ोसिनक पति रेल इंजनक ड्राइवर रहैक । हमर बहिनक पड़ोसिन आ ओहि ड्राइवरक बेटी, फरजाना, जे हमर बहिनेक संगतुरिआ रहैक, केर विवाह एकटा मुस्लिमबहुल इलाका, मलेरकोटला नामक गाममे भेल रहैक । हमर बहिन आ फरजानामे बड़ प्रीति रहैक तें ओ हमरा जानसँ बढ़िकए मानय । तें हम जखनि कखनहुँ बहिनक ओतए जाइ मौका पबिते जखनि-तखनि ड्राइवरक संग इंजनमे बैसिकए फरजाना दीदीक ओतय चल जाइ । आब दिन-दुनियामे की होइ छलै हमसब की बुझितिऐक ।

मुदा एहिना एक दिन मौज-मस्तीमे ट्रेनमे चढ़ि मलेरकोटला जा कए फरजाना दीदीक घर पहुँचलहुँ तँ ओहि दिन ओहि गाममे हिन्दू-मुसलमानक बीच भयानक दंगा-फसाद बाझल रहैक । तें, दीदी त' हमरा देखिए कए डेरा गेलि ।

पूछलक—'तों एतय ? आब कोन ठेकान जानो बँचतहु कि नहि ।' हमरा त' किछु बुझबामे नहि आएल । नेने रही । हम तँ जहिना पहिने खेलाइत-धुपाइत जाइत रही, तहिना ओहू दिन गेल रही ।

.......'तोहर तखनि कतेक वयस छलह ?'

.......'जी, जोड़ि ने लिऔक । एखनि तिरपन बरख छै । अगिला बरख पेलशन जेबै ।'

जे किछु । शिवचंद आगू कहए लागल—''दीदी हमरा अङना लऽ गेलि आ अन्दर लऽ जा कए घरक भीतर नुका देलक । मगर अलबत्त कही सरकार, नहि जानि कोना खबरि लगलै, हाँज-क-हाँज लोक ओकरा दुआरि पर जुमए लगलै । कहै—हिन्दूक बच्चा घरमे नुका कए रखने छें । बहार कर !'' मुदा धन्न कही सरकार, अलबत्त जीबटवाली जनानी छलि ओ । परदाक तरे सँ सबसँ लड़ि गेलि । ओकर अपन बेटा, जे बरख चारिएक रहै, तकरा सभक आगू आनिकए पटकि देलकै आ कहलकै—'हँ, अछि हमर घरमे हिन्नूक बच्चा । मुदा देबौ किन्नहु नहि ! तोरा सबकेँ बच्चेक जान चाहिओ ने ? जब्बह कऽ दै जाही एकरे, जब्बह !'

घरसँ बहरएबासँ पहिने हमरा तँ ओ भुसकांड़मे नुका देने छलि ।

फरजाना दीदीक हिम्मत देखिकए पहिने तँ सब गुम्म भऽ गेलै । मुदा पछाति बड्ड घमर्थनिक बाद गामक नंबरदार ओकर ससुरकेँ कहलकै—'जे भेलै से भेलै । मुदा एखनुका समय-सालमे ई मोनासिब नै । तें जेना हो तेना एहि लड़काकेँ फौरन रवाना करू ।'

एतबा कहैत शिवचंद भाव-विह्वल होमए लागल । बाजल—'हजूर, बुझू ओहि दिन हमर दोसर जनम भेल । राता-राती दीदी हमर केश-टीक कटा अपने हाथे माथ

पर चांद-ताराक खोधा पाड़ि देलक आ अधरतिए अपन बापक संग घुरती गाड़ीक इंजनमे कोइलाक बीचमे बैसाकए आपस विदा कए देलक ।'

हमर नजरि देवालपरक घड़ी दिस गेल । अढ़ाइ बाजि चुकल छलैक—'जाह एखनि भोजन कऽ लैह । फेर हेतै गप्प ।'—कहैत हम शिवचंदकेँ इनडोर वार्डमे विदा कएल । मुदा कतेक दिनधरि ई विस्मयकारी कथा हमरा अभिभूत केने रहल तेँ ओहि बीचेँ जे दोस्त मित्र अभरलाह सबकेँ ई कथा सुनौलिएनि ।

एहि घटनाक पछाति शिवचंद अपन इलाज लेल मासावधि हमर वार्डमे छल । ओहि दौरान हमर कतेक मित्र लोकनि हमर वार्डमे आबि शिवचंदक मुँहेँ ओहि विस्मयकारी कथाकेँ पुन:-पुन: सुनलनि आ ओकर सत्यतक परीक्षाक हेतुए ओकरासँ प्रश्न-उत्तर कएलनि । ओहि संशयी व्यक्ति लेल जनिका एहि वृत्तांत पर अविश्वास होनि, तनिका जिज्ञासा-शांति लेल एतबे कहब पर्याप्त हएत जे यद्यपि शिवचंदक कथा पुरान भऽ गेल छैक किन्तु शिवचंद अपन पुनर्जननीक मधुर-स्मृतिकेँ जोगओने एखनहुँ अपन यूनिटमे तैनात अछि । किन्तु, हमरा जखन-जखन शिवचंदक मुँह आ ओकर माथपर चांद-ताराक खोधा मोन पड़ैए हम बेर-बेर ओहि उदारमना वीर जननीकेँ नमन करैत दुर्गा सप्तशतीक निम्न श्लोकक स्मरण करै छी—

विद्या समस्तास्तव देवि भेदा: स्त्रिय:समस्ता सकला जगत्सु ।
त्वयैकयापूरितमम्बयैतत् का ते स्तुतिस्तव्य परापरोक्ति: ॥

भारती मंडन
अंक—नौ

अन्वेषणक अंत

नवजात शिशुक 'चेंहों-चेंहों' सँ सोइरी-घरक समीपक नीरवता हठात् टूटलै। जे भीतर छल, ताहि मे सँ केओ नेना कें अलो-मलो, केओ नेनाक माय सँ हँसी-ठट्ठाक प्रयास आ केओ प्रसूतिक परिचर्या मे लागि गेल—अपन-अपन वयस आ संबंधक अनुकूल। बहरी सँ बैसल-बैसल उदित पूछलक, ''माय भौजीकें कोन बच्चा भेलै ? माय खौंझायल मने बाजलि, ''हमरा अंगना ले' वैह हड़हड़ी बज्र ! फेर बेटीए ! फेर बेटीए !! भगवानक हाथ जेना पुरुखक साँच पड़िते नहि छनि।''

रीता मेडिकलिया विद्यार्थी अछि—पाँचम सालक। तें विद्यार्थी की डाक्टरे ने बुझू। बीतलै साल, भेलै परीक्षा कि डाक्टर। किंतु, परिवार कें—आ लगै छै ताहू सँ बेसी सर-समाज कें ओकर डाक्टर हेबा सँ खुशी जे हेतै ताहि सँ बेसी चिंता छै ओकर विवाहक। जे शुभचिंतक छै से कनेक सहानुभूति सँ हरिबाबू सँ पूछैत छै, ''की हरिबाबू, कतौ गोड़ी बैसल कि नहि ?''

जँ हरिबाबू-विवशताक चुप्पी सधने रहैत छथि तँ लोक स्वगत शुरू भ' जाइछ, ''औ बाबू, आइ-काल्हि शुद्ध-बाध छैहे अगम-अथाह। बूढ़-बुढ़ानुस कोनो बेजाय थोड़े कहने छै जे कुमारि बेटी मरय, तँ सात कुलक पाप टरय। औ बाबू पहिलुका गप बड़ साधल होइत छलै।''

जे कनेक कुच्चड़ से पुछतै, ''की श्रीमान्, अहू बेर कतौ कथा लगैत छै कि नहि ? शुद्ध तँ बीतल जा रहल छै।'' दोसर टीपताह, ''हँ दिन कतौ बैसल रहतै।'' जे कने विखाह से परोक्ष मे कहतै, ''की बजताह, बड़ शेखी छलनि जे परफेसर छी, नीलांबर मिश्र पाँजि अछि। औ चटैत रहू-धो-धो क'। बेटी अजगि भेल जाइत छै आ कहैत छै किदन गेल भड़ौड़ा आ....'' आदि आदि।

किंतु रीता सबटा बच्चे-जकाँ मूक भ' सुनैत रहैत अछि। ओकर दुनियाँ दोसर छै। मिजाज छै दोसर किंतु, दुःख-क्लेश, शीत-ताप, मान-अपमान, प्रशंसा-कौचर्यक अनुभव सँ अनभिज्ञ तँ नहिए अछि ! सबटा घोंटि लैत अछि। गर्मीक छुट्टी मे गाम आयलि अछि। मोन लगैत नहि छै, किंतु बापक इच्छाक मान..... ।

चिट्ठी लिखने रहथि एहू बेर, ''करपूरिया आम तोरा बिना कोना खायल जायत। तोरा मोन नहि हेतौ—छोटे मे तों हाथ सँ छीनि लैत छलें; कतबो खयने मोन नहि भरैत छलहु। एहि बेर बाबाक रोपल दशहरी सेहो असांध्ये फड़ल छै।''

रीता बापक एहि दुलार कें अस्वीकार नहि क' सकैत अछि। कतेक दुलार करैत छथि बाबू ! नेनपन तँ बिसरि गेल छै किंतु जतेक मोन छै ताहि मे ओकर शैशवक नायक बाबूए....सभ सँ नीक बाबू, सभ सँ नीक प्रोफेसर, सब सँ निडर-निर्भीक। आ ताहू सँ बेसी-सभ सँ बेसी दुलार ओकरे करैत छथि। ई सभ गप यद्यपि एकटा नेनाक सहज मानसिकता छलै कहियो, किंतु, की ओकर छाप आइयो ओकर मानस पटल सँ मेटा सकल छै ? नहि ! कहियो मेटाइयो नहि सकैत छै।

.......गाम मे केओ सखी बहिनपा नहि छै। गप ककरा सँ करत। छोट-पैघ जे भौजी छथि तनिका लोकनि कें कच्चा-बच्चा, घर-अंगना, चूल्हि-चिनबारक अतिरिक्त जँ कथूक फुर्सति, तँ प्रतिवर्ष एक एकटा प्राणी भारतवर्षक जनसंख्या मे जोड़बाक। जँ हँसी-ठठ्ठाक समय भेटैत छै तँ एक्के बात, ''की, यै रीता दाइ मेडिकलक किछु गप्प कहू।'' अर्थात् मेडिकल मे पढ़निहार छौंड़ा-छौंड़ी कें स्वच्छंदताक लाइसेंस भेटल छै। अहाँ तकर कतेक उपयोग करैत छी, आदि-आदि। रीता खौंझाइयोक दाँत देखेबाक औपचारिकतापूर्ण करैत अछि।

किन्तु मोनक गप के बुझतै ? तें ओकरा ओ स्वयं भोगैत अछि। ओ अपन संत्रास कें स्वयं जीबैत अछि। आइयो ओकर कान मे ई गप्प पड़लै—हमरा अंगना में वैह हड़हड़ी बज्र !

बज्र माने बेटी ! माने गराक घेघ ! जानक जंजाल ! प्राणक सौदा !

ओ सोचैत अछि—ई देश ओ नहि भ' सकैछ जतय 'यत्र नार्यस्य पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः' आदर्श कहल जाइ छै।

बेटीक बियाह हठे हेतै नहि, जँ नहि हेतै तँ नाना प्रकारक गलंजर उड़तै, ''बूझल छह कि नहि, जगदीश बाबू, जे पंडित कहबैत छथि, हुनकर बेटी कें... ।'' रहस्यमय विराम ल' ओ ठमकत, ''हौ पछिला बरख जे बियाह भेलै ! विवाह होइते लगलै पेट फूलय—अपच्च आ बेथा। ल' गेलनि डाक्टर लग—जनानी डाक्टर ! जँचलकै तँ कहि देलकै सटीक कथा—'पेट बियाहक बाद सँ नहि दू मास पहिनहि सँ फूलै छनि।' करता की ! माथ पिटलनि, कपार झँटलनि। मुदा की लाभ ? अंत में विवाहक साते मासक बाद दर्द शुरू।''

''बियाह नहि भेलै तँ खराप, भेलै तँ खराप। केहन छै ई समाज !'' रीता सोचैत अछि।

रीताक बाप सेहो बड़ दौड़लाह । कोन-कोन दिशा नहि गेलाह । जूत्ता खिया गेलनि, मुदा एहि अन्वेषण कें पाँच वर्ष भ' गेल । सफल नहि भेलाह ।

रीता कें मोन छै । छोट मे लोक कहै आमक कोइली हाथ में ल' क'—'हे कोइली, हे कोइली, रीताक बियाह कोम्हर ?' आ जें कि कोइली हाथ सँ छिटकि क' कोम्हरो गेल, लोक हँसि देलक—'रीताक बियाह ओम्हरे ।' ओ सोचैत अछि किंतु बाबू तँ आब कोनो दिशा नहि छोड़ने छथि । जतय वर भेटै छनि, घर नहि । घर भेटै छनि तँ वर नहि । जाहि ठाम दुनू भेटैत छनि ताहि ठाम ताड़क गाछ सँ ऊँच, समुद्र सँ बेसी गहींर माँग । तखनि तँ ने राधा के नौ मन घी हेतनि ने राधा नचतीह । प्रोफेसर छथि, कोनो तालेवर तँ नहि ।

रीता कें अपन पिसिऔत बहिनक दू साल पहिलुका बियाह मोन पड़ि अबैत छैक । घरो नीक । वरो नीक । किंतु, माँग ? भगवानेक इच्छा । माँग किछु नहि, आदर्श विवाह । अखबारो में छपल छलै तकर खबरि । ग्रन्थालय प्रकाशनक डायरीओ मे छपल छलै आदर्श विवाह करओनिहारक लिस्ट मे अनीताक श्वसुरक नाम । किंतु, गुड़क मारि तँ धोकड़े जनैत अछि । सभ व्यवस्था हेबाक चाही फिट-फाट । बरिआती डेढ़ सय । रहब तीन साँझ । छी जातिवाला, किंतु भोजन हेबाक चाही विन्यस्त आ 'कॉन्टिनेन्टल' । केओ 'स्कॉच' पीताह तँ केओ भाङ । किनको प्रमेह छनि, तँ चीनी कम चाहियनि, तँ केओ डाइटरी सप्लिमेंट पर छथि । किनको ब्लड-प्रेसरक शिकायत छनि तें नोन कम खयताह, तँ केओ लो-बी. पी.क'. शिकार छथि तें दिन में तीन बेर नोनक शरबत पीताह, आदि आदि । माँग किछु नहि किंतु विदाइ मे चाही ब्रेसलेट धोती । बरिआती हमर स्टेंडर्ड छथि, तें चाहियनि फर्स्ट क्लासक रिटर्न टिकट ।

अर्थात मेडिकलियाक भाषा मे कन्यागत भेल मुर्गा वा मुर्गी वा ताहि जातिक, जकरा कानि क' वा गाबि क' अंडा देबैक छै—जखन कहबै तखने ! बर्छीक नोक पर !

रीता मने-मन बड़ तमसाइत अछि, एहि समाज पर, एहि जाति पर आ एहि नोच-खसोटक विधि-व्यवहार पर । ई सभ सोचि क' ओकरा जेना ठीके मोन ओकिया लगैत छै एहि समाजक वीभत्सता पर !

तखने ओकरा मोन पड़ैत छै साल-डेढ़-साल पूर्वक गप्प । हँ, करीब, वर्ष डेढ़ेक-भेल हेतै जे ओकर भेंट भेल रहै सलीम सँ । गोर-नार आ आकर्षक युवक । ओ ओहि समय लगले पी.एम.सी.एच. सँ ट्रांसफर ल' आयल रहय । कालेज मे भेल रहै एकटा गीत-नाटिका, राधा कृष्णक प्रेम पर आधारित । गोआरक घर मे पालित कृष्ण आ अभिजात्य राधिकाक प्रेम । किंतु एहि नाटकक पछाति ओकरा एकटा तेसरे

दृष्टि खुजलै । ओ नेनपन मे सुनल नचारी आ कल्हुका सुनल राधा-कृष्णक रासक गीतक विवेचना कर' लागल । नचारी मे तँ सभ दिन सुनलक, 'भङिआ मोर जगत् सुखदायक दु:ख ककरो नहि देल', 'गौरा तोर अङना' आदि-आदि । अर्थात् एहि सँ जे चित्र उपस्थित होइत छै से छै जे वर (शिव) गंजेरी छथि, भङेरी छथि, रमता योगी छथि बहता पानि छथि, किंतु, गौरी तैयो बताहि छथि हुनका पर । किंतु, राधा जँ कृष्णक बलजोरी पर, हुनकर 'फ्लर्टिंग' पर रूसितो छथि तँ कृष्ण बौंसितो छथिन, तेँ जँ प्रेम मे लेपटायलो रहैत छथि, तँ अंधभक्त जकाँ नहि । तेँ ई वर-कन्याक समता, मिलान स्वतंत्र व्यक्तित्वक परिचायक थिक । किंतु, ओकर मोन छोट भ' जाइत छै ई सोचि क' जे मिथिला मे नचारीए किएक प्रसिद्ध अछि । पार्वतीए किएक आदर्श छथि ! जे से.....

सलीम ओकरा एक दिन पूछने रहै, ''अहाँ राधाक चोरा-नुका क' कृष्ण सँ भेंट करब आ स्वेच्छा सँ वर कनियाँ चुनबाक अधिकार केँ कोन दृष्टिए देखैत छियै ?''

''प्रशंसाक दृष्टिए ।''

''हँ, एकरे कहैत छैक हिपोक्रेसी । मिथिलाक नारी ! सोचत किछु, गीत ककरो गाओत आ करत किछु तेसरे ।''

''मिथिलाक कएक टा नारी केँ अहाँ लग सँ चीन्हैत छियै ?''

''चिन्हबाक प्रक्रिया में छी'', कटाक्ष सँ सलीम उत्तर देने रहै, ''काले-क्रमे विचार बदलियो सकैत छी, जँ तेहन उदाहरण भेटत ।''

रीता बिहुँसि दैत अछि ।

चिन्हबाक ने मात्र प्रक्रिया शुरू भेल रहै, बढ़िते गेलै । पहिले कहियो काल आ बाद मे बेस नियमित जकाँ, क्लास टा मे नहि होस्टलहुँ मे रीता केँ सलीम सँ गप्प करबाक, परिचित हेबाक, लग हेबाक मौका भेटलै । लेडीज हॉस्टल तँ सलीम जाइत छल अपन 'बहिन' आयशाक भेंट करय; किन्तु ओ मात्र बहाना छलै । से रीता कालक्रमे बूझ' लागल छलि ।

आइ अनायासे सलीम फेर मोन पड़ि आयल छै । रीता कौलिक संस्कार, बापक स्नेह सँ आबद्ध अछि, तेँ सामाजिक बंधन तोड़ि सलीमक संग जिनगी भरिक संबंध बनेबाक सोह नहि आयल छलै एखन धरि । किंतु ओकर मोन आब बदलि रहल छै । पछिला मास मे ओ 'टाइम्स ऑफ इंडिया' में मिथिलाक वैवाहिक समस्या पर एकटा प्रखर लेख लिखने छलि । जकर जवाब में कतेक उत्साही मैथिल युवक सभ प्रशंसा-पत्र पठौने छलै । किंतु, जखनि ओही युवक सभक दुआरि पर रीताक बाप विवाहक कथा ल' क' गेलाह, तँ सटक् सीताराम !

ई सभ सोचि क' रीताक मोन खिन्न भ' जाइत छै। ओ सोच' लगैत अछि। ओहि समाजक अधोगतिक आसन्न छाया पर, जतय बैंक में कमाइत क्लर्कक माँग भ' जाइत छै पैंसठि हजार—एक लाख-डेढ लाख किंतु बैंक किरानी छौंड़ी कें के पूछै-ए, डाक्टरनीओ बनि गेला सँ ओकर परिवार कें ओकर विवाहक दहेजक मद मे कोनो रिआयत नहि कयल जाइत छै। समाजक एहि पसँगाह तराजू पर ओकर आत्मा हूंकार क' उठैत छैक।

आइ ओकरा मोन मे फेर वैह गप्प हौड़ि रहल छै। छुट्टी मे गाम अयबा सँ पूर्व सलीम कहने छलै, "यद्यपि हमरा एखनि कोनो तेहन आवश्यक नहि, किंतु नीक लड़कीक आइ-काल्हि ततेक कमी छै जे आब.... ।"

"ई गप्प अहाँ हमर अपमान ले' कहलहुँ अछि की ?" रीता कटाक्ष केलकै।

"अहाँ हमर मुँहक गप्प छीनि लेने छी, किंतु एसगरि मे जँ कोनो युवतीक एना प्रशंसा कर' लगलियै तँ भ' सकैत अछि ओ हमरे लम्पट बूझि बैसय।"

सलीमक संग एहि वार्तालापक स्मृति सँ रीताक सर्वांग एकाएक गुदगुदी सँ भरि अबैत छै आ ओ पूर्णिमाक चन्द्रमा जकाँ बिहुँसि उठैत अछि। किंतु, तुरते ओकर मोन खिन्न भ' जाइत छै।

........कतेक सुंदर रहै नवीन। गोर-नार हृष्ट-पुष्ट। सुदर्शन ! रीताक जेठकी बहिन माधुरीक ओ नेनपनक दोस्त। लीची, आम, लताम, तेत्तरि आ बैरक गाछ तरक दोस्त। जहिया नवीन गाम सँ गेल छल मधु बड़ खिन्न भेल रहय। किंतु नवीन पार्वतीक देवदासक विपरीत कलकत्ता सँ पढ़ि-लिखि अपस आबि गेल छलै। कलकत्ता सँ एला पर एक-दू दिन धरि जखनि देखा-देखी भेलै तँ दुनू संकोचे चुप रहलि। मुदा अंततः जखनि एक दिन पोखरि सँ माधुरी नहाक' आबि रहल छलि नवीन टोकिए देलकै, "कोनो बेजाय नहि विद्यापति सद्यःस्नाताक सुधिए पर अपन हृदय कें कविता बनाक' बहा देने छलाह। हम तँ स्नानक पश्चात्‌क बालिका पर मुग्ध छी।"

माधुरी मुँह दूसि क' भागि गेल रहै।

किंतु नवीन बाज नहि आयल। आमक गाछी मे दू दिनक पछाति जखनि भेंट भेलै तँ नवीन अपना कें रोकि नहि सकल। कहल, "मधु" ?

माधुरी ठमकि गेल रहय। छाती धड़कैत, नाड़ी तेज आ श्वास-प्रश्वास त्वरित !

"मधु, कनियाँ-पुतरा सँ तँ आब काज नहि चलतौ। तखनि तँ.... ।"

"धुर जो, तोरे सँ। के करतौ ?" कहैत मधु फेर मुँह दूसि क' भागि गेल रहै।

चौअनिया सूत्र छै छौंड़ी हँसल, तँ फँसल। बस कलकतिआ छौंड़ा ! नव शिक्षा,

नव सामाजिक मूल्य आ प्रोफेसर साहेबक प्रगतिशीलताक प्रशंसक । सोझे साँझ मे पहुँचि गेल प्रोफेसर साहेब लग ।

"कक्का, कक्का !"

"की भेलह ?"

"कक्का हम...हम मधु सँ, मधु सँ..... ।"

"आएँ !" हरिबाबू चौंकि उठलाह मुदा अपना के सम्हारैत कहलनि, "बैसह, बैसह । कतेक दिन पर अयलह । आम तँ खा ल' । कोना की पढ़ैत छह ?"

आ भ' गेलै वैह मधु आ नवीनक प्रेमक अंत । पढ़ल छलै किंतु, नौकरी नहि करैत छलै । सुंदर छलै किंतु, जाति नहि । सुखी छै, किंतु, बाप किरानीए । नाना जमींदार छलाह तें की, बाप भनसिया छलनि आदि-आदि धारणाक दास प्रोफेसर साहेब वर्षक भीतरे, जावत, दोसर बेर नवीन गाम आबय, मधुक विवाह क' देलनि । कतय, कोना, की, से रीता अपन मानस पटल पर स्पष्ट देखि रहल अछि ।

छुट्टी बीति गेलै । रीता पुनः कालेज आबि गेल अछि । परीक्षा खत्म भ' गेल छै । आइ भोरे बाबूक चिट्ठी आयल छनि—

"पलामू परसू गेल रही । सहरसा 15 तारीख धरि जायब, सोचै छी ।....."

अर्थात् फेर वैह अंतहीन अन्वेषण, आदि-अंत विहीन कुंठा आ समस्त परिवारक संयुक्त संत्रास । आ ओहि आगि में भट्ठी जकाँ धधकैत रीता !.......

........सलीमक परिचय आइ-काल्हि दोस्तीक सीमा सँ बढ़ि रहल छै । आइ सलीमक दोसर चिट्ठी आयल छै—

रीता,

हमरा ने माता छथि जे बिगड़तीह; ने पिता छथि जिनकर कोपक हमरा भय हो । ककर संतान छी, से बूझल नहि अछि । सलीम नाम, मुसलमान जाति—के देलक सेहो मोन नहि अछि । किंतु हमर-अहाँक जाति एक्के अछि—डाक्टरी । मिशन एक्के अछि—रुग्ण-स्थग्न आ आर्त केर पीड़ा-निवारण । ई सभ अहाँ सँ छिपल नहि अछि । मुदा हम सभ आ ई समाज अनकर दुःख की हरतै ! जँ हमरा लोकनि एक-दोसराक दुःख नहि बाँटि सकैत छी ? की अहाँ मात्र राधाकृष्णक प्रेमी चुनावक स्वतंत्रताक प्रशंसके टा छी की अनुयायी सेहो ? हम उत्तरक प्रतीक्षा मे छी । अहाँ केँ विश्वास दिआब' पड़त जे हम ओहि दिन जाहि नारी सँ भेंट केने रही ओ साधारण नहि, विचार आ व्यवहार में अति विशिष्ट अछि ।

हम काल्हि भोर में आयब अहाँ के संग ल' जयबा ले' । अहाँक निर्णयक प्रत्याशा मे ।

सस्नेह,

सलीम ।

रीता टेबुल पर राखल पैड कैं लग घीचि कलम उठबैत अछि—

.....बाबू,

.......अहाँक एहि अन्वेषणक कतहु सीमा हेबाक चाही । मुदा से एहि समाज मे संभव नहि । हम आब एहि सीमा कैं तोड़ि चुकल छी । विश्वास अछि अहाँ हमर निर्णयक औचित्य कैं स्वीकार करब । आब अहाँ सहरसा नहि जाउ । अहाँक अन्वेषण समाप्त भ' गेल अछि ।

सादर अहींक,

रीता ।

दोसर दिन रीता जखनि बैग बन्न क' होस्टलक दोमहला सँ नीचाँ आयल, सलीम ओत' रिक्शा लेने ठाढ़ छलै । रीता रिक्शा पर बैग रखैत सीट पर बैसि गेल आ सलीम कैं कहलकै ''आबहुँ तँ संग बैसू ।''

अंतिका

अप्रैल-जून, 2001

सरिपहुँ ?

टी० वी० पर 24 घंटा न्यूज चैनल सभक आरंभ भेला सँ एके समाचार घूरि-फिरि कए भरिदिन ततेक बेर अबैत छैक जे मोन अकच्छ भ' जाएत । मुदा ताहिसँ की ? ओकरा लग जएह समाचार रहतैक सएह ने देत । समाचार चैनल छिऐक किने, समाचारक कारखाना तँ नहिए जे समाचारक उत्पादन करत । तखनि एतबा अबस्से भेलैए जे समाचार माध्यम सब मे जहिया सँ हेडलाइन आ मुखपृष्ठ सँ ल' कए 'एडिटोरियल' धरि प्रायोजित होबए लगलैए, जकरा साधन आ खगता छै, अपना केँ समाचारक हिस्सा बनबैमे कोनो कोर-कसरि नहि छोड़ैए चाहे वो टूथ-पेस्ट वा व्हिस्कीक कम्पनी हो वा राजनेता अथवा कारॅपोरेट जगतक बादशाह ।

मुदा आइ भोरहि सँ जे छवि बेर-बेर समाचार चैनल मे टी. वी. पर आबि रहल अछि ओ थिक एकटा, कठहँसी हँसैत, विगत हफ्ताक अपहृत डाक्टर आ हुनकर परिवारक । काल्हि धरि जाहि परिवारक ई हालत छलैक जे मुँह मे धान दिअनु तँ लावा भ' जाएत तनिका लोकनिक चेहरा पर भकरार हँसी आइ जेना सिहरहारक फूल जकां मुँह सँ झड़ि-झड़िकए पथार लागल छनि । प्रशंसाक पात्र छथि तँ मात्र अनामा सामाजिक कार्यकर्त्ता । कारण हुनकहिं सहयोगे डाक्टर साहेब मुक्त भेल छथि ।

''मैं बहुत 'खुश' हूँ''—डाक्टरक पत्नी आह्लाद आ कृतज्ञता सँ लबालब भेल कहैत छथिन—''जो लोग ले गये थे और छोड़ दिये हैं मैं उनको बहुत 'आशीर्वाद' देती हूँ ।''

.......कौन थे, कहाँ ले गये थे ?

........कैसे बताएँ । हमको तो जबसे पकड़े आंख पर काला पट्टी बांध दिया था ।—डाक्टरक आह्लादक स्वर ।

..........छोड़ने के टाइम मे तो देखा होगा ?

......नहीं, झलफल हो गया था न ?

......लेकिन सुना था आपका अपहरण दिन मे दो बजे हुआ था ।

......हां, लेकिन मुंहवा पिछहिंसे न तोप दिया था । कैसे देखते ?

......लेकिन डाक्टर साहब आप तो कार मे....... ?

पत्रकारक प्रश्न पूरा नहिञे भेल रहनि ताबते हुनकर पत्नी डेन पकड़िक' भीतर घीचि लेलखिन ।

.....'चलिए भीतर । पंडितजी पूजा पर बैठे हैं ।'

बड़ा अजगुत अछि बिहारक अपहरणकर्त्ता सब । बड़ नीक लोक । 'कोई तकलीफ नहीं दिहिस ।' 'कोई मांग नहीं ।' केओ पाछू सँ कहलकै—''कुटमैती मे नोत खियाब' ले गेल हलई ।'' आ चारू कात सँ ठहाका गूंजि उठलैक ।

.........अँए हौ, नीक लोक छै, तकलीफ नै दै छै । किछुओ मांगो नहि तखनि ल' किएक जाइत छै ? एक व्यक्ति पूछलखिन । हँ, मिथिलांचल में किछु दिन जोआर आएल रहैक । शुद्ध-बाधक समय में कुमार लड़का सबकेँ जबर्दस्ती पकड़ि क' ल' जाइ आ विवाह करा दैक । मुदा आब तँ सेहो बन्न भ' गेलैए । लोक बूझि गेलै-ए जे जँहि-तँहि सँ बान्हि-छानिक' वर केँ आनि बियाह तँ करा सकै छिऐक मुदा नौकरी कतऽ सँ दिएबैक । ताहिले तँ आखिर दिल्ली-पंजाब-सूरत-कोचिन-बम्मै-बंगलोरहि जाए पड़तैक । बिनु नौकरीक बहु केँ खोओतैक की ? तेहन चन्सगर आ सुखितगर परिवारक रहितै तँ अहिना बौआइत गाम मे गाछ-बिरछी, हाट आ पसीखाना मे हाथ लगितै । तैं आब तँ अपहरण-विवाह तँ छोड़ू बेरोजगार वर केँ पैदार-वर जकां कथा धरि नहि अबैत छैक । आ लोक सेहो अग्र सोची भ गेले । सरिपहुँ अल्ट्रासाउन्ड अलबत्त आएल-ए । बेटा-हेतै कि बेटी ताहि ले ने भगता ने जोगी 'फेको पैसा आ देखो तमाशा ।' तखनि कोन ठेकान बियाह-दान करबितै ?

.........कहैत दोसर गोटे चुप्प भेलाह तँ चेहरा पर मुस्की छिटकि आएल रहनि । एकरा अपहरण क' कए के अपन बेटी केँ गरदनि काटत ? भरिघर धीया-पूता छै । के ओ टिपलकै ।

मुदा अहि सब प्रश्न-उत्तर केर कोन काज ? सब निरर्थक ! बढ़ियाँ गप्प छै । अपहरण होइत छै, मुदा किछु मंगै नहि छै, किछु कहै नहि छै । तखनि चलैत रहओ ई खेला । एकटा विद्यार्थी वर्ग में गप्प-सप्प होइत रहए । ओहि मे सँ केओ मखौलिया रहए, कहलकै—''हँ यौ, कोनो नुकशान नहि । अहिना क्रीड़ा जगत मे सेहो माछ फंसएबाक एकटा खेल होइत छै । बंसी पाथि कए नदीक किनार पर बैसल रहू । माछ बोर खाएतै । तरैला डुबतै । अहां बंसी क डोरी केँ नहूं-नहूं घीचू । माछ ऊपर करू । छटपटाहट माछ केँ देखू, नापू, जोखू, जाति नोट करू आ पुनः नजाकतसँ माछ केँ बंसीक नकुसी सँ छोड़ाक आपस पानि मे द दियौक । माछ केँ नुकशान नहि आ अहांक मनोरंजन ।'' आ पुनः सभक ठहाका एकाएक गूंजि उठलैक ।

मुदा ई अपहरण बंसी खेलएनिहारक ओ खेल नहि रहैक जाहि मे माछ बझौनिहार स्वयं माछ कें जीवन दान दैत छथिन । दोसर दिन पटनाक सब समाचार पत्रक मुख पृष्ठ पर एके खबरि—

''सामाजिक कार्यकर्त्ताओं की सहायता से डा. शंभू सिंह अपहर्त्ताओं के चंगुल से रिहा ।' आ सब टी.वी. चैनल पर पुन: एके छवि जनतांत्रिक दलक अध्यक्षक हँसैत छवि—

''कहा था न, कल तक छूट जाएँगे । विरोधी लोग तो कहता है 2002 में 300 अपहरण हुआ है । लेकिन बतावे न कौन घर नहीं लौटा है ?''

सत्ते बात । दोहाई सरकार के । अपना ओहिठाम जखनि रामराज्य छै तखनि तँ हम कहब पुलिस-बलक संख्या कम क'कए सरकारक आर्थिक स्थिति में सुधारक महत्त्वपूर्ण स्कोप छैक । आ किएक नहि ? एखन धरिक एतेक सुखांत अपहरणक एकोटा ट्रॉफी पुलिस कें भेटलै-ए ?

मुदा अध्यक्षजीक हँसैत छवि देखि कए कृतिकाक माय कें आंखि मे नोर आबि गेलनि । मोने-मोन कुहरए लगली । सत्ते, लोक कें पकड़ि कए ल जाइत छैक आ आदरपूर्वक आपस छोड़ि दैत छैक । घर में चोरि होइत छैक, डकैती होइत छैक मुदा किछु वस्तु नहि ल जाइत छैक । हुनका मोन पड़ि अएलनि तीन वर्ष पुरान अपन घरक चोरि ? डकैती ? वा किछु नहि ? बारह बजे राति मे एकाएक कोठली मे दू गोटे सँ आबि कए माए-बेटी दूनूक मुँह जांति देने रहनि । जे मोन भेलैक, केलकनि । नहि जानि कतेक काल धरि । घरवला ओहिदिन कतहु गेल रहथिन से ओकरा सबकें कोना बुझना मे अएलैक से नहि जानि । भोर जखनि भरि मोहल्लाक लोक जुटलनि तँ सब एके गप्प पूछनि ?

.........की वस्तु सब ल गेल ?

की कहितथिन । सबकें एके जवाब देथिन की कहू ? 'चोरि-डकैतीक वस्तु कि भेटै छै ? हमरा सबकें की होश अछि । कृतिका तँ मुर्दा भेलि पड़लि अछि आदंके ।'

पुलिसो आएल रहनि । अपन खानापूरी केलक । बड़ जिरह केलकनि । की सब ल गेल । की कहितथिन ? मोने-मोन सोचथि—'की ल गेल आ की कहबै ?' जे गेल, से गेल । आब कहुना समाज मे मनुक्ख जेकां तँ रही । मुदा कृत्तिका द' सोचिकए रहि नहि होइन ।

जखनि पुलिस बड़ जिरह केलकनि तँ कहलखिन—'हमरा कि लिखा-पढ़ी अबैए । साँझ धरि जखनि अपने औताह तँ लिस्ट बनाक' थाना पर द औताह ।'

मुदा ओहिसँ आगू बाजि नहि भेलनि । भोकारि पाड़िकए कानए लगलीह ।

मुहल्लाक थानेदार केँ किछु दिनक पछाति लोक कहैत सुनलकनि–बालेसर मिसिर के घर में था क्या, जो ले जाता । ठीकेदारी करता है न । लगता है, आया डराने-धमकाने तो कहिन जो डकैती हो गया ।

सत्य वचन ! हुनकर ल'की गेल रहनि ? व्यभिचारक एहि घटनासँ जँ एकटा बच्चाक मोनपर दगनीक पक्का दाग सदाक लेल उखड़ि गेलैक तँ की ? ककरो देखै मे अओतैक ? ई गप्प मोन मे अबिते कृत्तिकाक मायक हृदय आओर विदीर्ण होबए लगलनि । सोचय लगली, चोरि डकैती तँ पहिनहुँ होइत छलैक मुदा चोरिक नामे एहन निर्धिन काज । आ के जानए आब कतेक आन लोकक घर मे एहन चोरि होइत छैक, समाज मे आओर कतेक लोक हमरे जेकां ठोर सीने कुहरि रहल अछि । जे – से ।

मुदा सुखांते सही, एहिबीच मे अपहरण आ सामाजिक कार्यकर्ताक प्रयासक आख्यान मोटामोटी प्रतिदिने छपैत रहैत छैक । आ तेँ, आब भले लोक एहिसब घटना सँ विचलित नहि होअए । भोर मे जखनि लोक अखबार कीनैए आ एहन समाचार पर नजरि जाइत छै तँ कनिएकाल ले सही, चाहक दोकान पर, चौक पर, मंदिरक चबूतरा पर किछु काल ले चर्चा अबस्से होइत छै ।

तेँ जखनि डा. शंभू सिंहक रिहाईक खबरि लोक पुनः पेपर में देखलक तँ कंकड़बागक साईंबाबा मंदिरक चबूतरा पर फेर वएह गप्प शुरू भ' गेलैक । अपहरण आं सामाजिक कार्यकर्त्ताक पक्ष-विपक्ष, व्यंग आ सीरियस । मुदा एकटा वृद्ध बड़ी कालसँ चबूतराक कोनपर बैसल गप्प सूनि रहल छलाह । लगै-ए, कतहु गाम सँ किछु दिन ले पटना आएल छलाह । सबटा गप्प बूझल नहि रहनि तेँ बहस मे भाग नहि लेलनि । मुदा जखनि अनेक बेर 'सामाजिक कार्यकर्त्ताक' चर्चा भेलैक तँ रहि नहि भेलनि—स्वर ऊँच करैत बजलाह—''बाऊ कतए नुकाएल रहै छथि ई कार्यकर्त्ता लोकनि, भरि दिन । हमर विचारें जनता हिनके लोकनि केँ गोहारिकरए । सरकार बुते तँ हेतैक नहि । केहन बढ़िया होइतैक जँ सड़क-नहर अस्पताल-बिजुली आ बेरोजगारी-भूखमरीक समस्या सेहो ई लोकनि अपने हाथ मे ल कए समाधान करितथि ।''

........चबूतरा पर एकबेर फेर ठहाकाक गूंज मे बुढ़ाक स्वर बिला गेलनि । हुनका बुझबा मे नहि एलनि जे कहीं हुनकासँ किछु गलती तँ ने कहा गेलनि ।

❑❑❑

आब कोनो दुविधा नहि

गामसँ जतए कतहु जाइत छी—पूब, पच्छिम, उत्तर, दक्षिण—जाएब समस्तीएपुर बाटें होइत अछि। कारण, वएह छैक रेलक बाट। आ समस्तीपुरक बाटमे प्रत्येक बेर मुक्तापुर, तखनि रूक्तापुर अर्थात् समस्तीपुर जं. आउटर सिगनल आ फेर समस्तीपुर जं.।

पहिने जतेक बेर समस्तीपुर जाइत रही किछु वयस आ किछु मनोभावत: रूक्तापुरक एहि स्थलपर सहयात्री सभक संग हँसी आ टीका-टिप्पणीमे भाग ली वा कखनहुँ ट्रेन जल्दी पकड़बाक रहएतँ मोन खौंझाए वा उद्विग्न आ चिंतित भ जाए। किन्तु, आब से नहि। आब एहि स्थलपर अबिते जखनि बूढ़ी गण्डकक स्थिर, हरिअर आ संकीर्ण धार पार क कए रेलपटरीक एककात एकटा विशाल सेमेटरी आ दोसरकात दूर चल जाइत गण्डकक बाँधकें देखैत छी तँ एकेसंग मधुर-स्मृति आ गहन वेदनाक अनुभूति होइत अछि।

गण्डक नदीक पछबरियाकातक बाँधपर द'कए जे बाट उत्तरदिस जाइत छैक तकरासँ प्रथम परिचय 1965 ई. में भेल छल। तहिया अपनहुँ नेना रही। एकटा आओर गप्प-तहिया अपन गामसँ एतेक दूर पहिले बेर आएल रही। सेहो बहिनकसंग, दुरगमनिया कनियाक भाइ बनिकए। संग मे लाल बहिनक संग ओझाजी आ खबासनी ढोढ़ियामाय सेहो छलि। ओहि रातिक निर्मल इजोरियामे शान्त-शीतल नदीक काते-कातेक बाट मोनकें मुग्ध क' देने रहय। ओकर बाद पुन: कतेकबेर ओहिबाटे आएल हएब। पहिने अनकासंग, फेर असगरे। किन्तु जतेकबेर आबी लाल बहिनमे व्यवहार-परिपक्वताक किछु-ने-किछु परिवर्त्तन—जे विवाह-दुरागमनक पछाति मिथिलांचल वा सबठामहिक बेटीमे अबैत छैक—देखबामे अबैत छल। प्रत्येकबेर ओ पहिनेसँ बेसी स्नेहशील आ गंभीर लगैत छलीह; कतेक बेर तँ लगैत छल, लाल-पीअर साड़ीक नाकधरि घोघवाली ई कनियाँ की सत्ते हमर ओएह लालबहिन थिकीह जे कनैलक बीआले झगड़ा ककए मासधरि हमरासँ नहि बजलीह ? ई वएह सुशीला छथि जे ठेहुनधरिक फ्राक पहिरने अटट दुपहरियामे कनैल आ करजनीक बीआ बिछबामे व्यस्त रहैत छलीह ? ई वएह छथि जे, अपन कापी-किताबपर, हमर मास्टरीक ठप्पाक

सबूतमे, हमर दस्तखत देखि हमरा दादाक सामने अपराधीक रूपमे ठाढ़ कयने रहथि। नहि, विश्वास नहि होइत अछि ? सत्ते, विवाहक पछाति हठात् लड़की सभक व्यवहारमे केहन कायाकल्प भ जाइत छैक ! आश्चर्य लगैए। प्रत्येक बेर एहि बहिनक सासुरक यात्राक पछाति लगैत छल जे कुमारि सुशीला विवाहक पछाति घघरी-सलवार-फ्राकक संग हठात् अपन नेनपनक स्वभावहुँकेँ छोड़ि कोनो आने व्यक्तित्वक जामा ओढ़ि नेने रहथि। किन्तु ई सब विगत भ गेल छैक। तथापि जतेक बेर घूरि-फीरि कए एहि बाटें कतहु जाइत छी हुनकर अनेकानेक छवि आँखिक आगां नाचि जाइत अछि आ हृदयमे वेदनाक समुद्र हिलकोर मारए लगैछ आ हुनकर स्मृतिक अनेकानेक खण्ड सागरक गर्भमे विलीन द्वीप सब जेकां बिसरल अतीतमे सँ एकाएकी देखार होमए लगैत अछि।

एहिबेर एहिबाटे हमर यात्रा, नौकरीसँ इतर, कतहु आनठाम अछि। कन्यादानक जोगाड़मे छी। भतीजी पांखुड़ धरि भ गेल छथि। किन्तु, कतहु तेहन कथा नहि। कोनो ठोसगर संपर्क नहि। भाइ पाइ-पैसाक जोगाड़ सेहो केने छथि, व्यवस्थो द सकैत छथिन। किन्तु, कतहु वर भेटनि तखन ने ! वर भेला डूम्मरिक फूल आ कनियालोकनि मडुआक दोबरि ! तथापि भाइ कहैत छथि—'जखनि टाका देबैक तखन कत्तौ किएक करब।' ठीके आजुक मैथिल वर मंगनीक बड़द तँ थिकाह नहि जे दांत नहि गनबनि ! जखनि टाका लेबे करताह तँ कान्हपर हर-पालो सेहो लादिकए जोतबाक इच्छा होइत अछि। कारण, ई ओ जमाना तँ नहि जे जहियासँ लाल बहिनक तेरहम वर्ष चढ़ब शुरू भेल रहनि मायक आंखि कमलाक धार भ गेल रहैक—कखनहुँ उमड़ल तँ, कखनहुँ संकीर्ण मुदा, अनवरत प्रवाहित ! कहथिन...."कतहु विवाह भ जाइक, अन्न-वस्त्रक तकलीफ नहि होइक; वर लुल्ह-नाङर, लुच्चा-लफांड़ि नहि होइक। अपन घर जाथि आ हमर चिंता दूर हो।"

अर्थात् गरीब लोक, साधनहीन परिवार, अन्नवस्त्रक प्राप्तिकेँ भाग्य नहि मानए तँ आओर की ! आखिर सुख-सुविधाक कोनो एत्ता छैक !

अस्तु, थोड़े प्रयाससँ एहि आषाढ़मे सौराठ सभासँ दादा वर ठीक क' कए अनलनि आ घुरती बैशाखमे सुशीलादाइ बियाहिकए सीता बौआसिन बनि सासुर बसि गेलीह। झगड़ो खूब होइत छल मुदा हुनकर दुरागमनमे हम कनलो खूब रही। तथापि भरोस एतबे रहए जे हुनकर दुरागमनमे संग हमही गेल रहिअनि।

किन्तु, आइ हुनकर मृत्युक चौदह वर्षक पछाति मोन पड़ि आएल अछि सन् 1978 इसवीक 18 मार्च, फगुआक दिन ! संपूर्ण शरीर, मुँह-कान, हरिअर-लाल-पीअर रंगसँ रंगल छल। धुरखेलक पछाति घरमे सूतल छलहुँ। तावते डाकपिउनक

सबूतमे, हमर दस्तखत देखि हमरा दादाक सामने अपराधीक रूपमे ठाढ़ कयने रहथि। नहि, विश्वास नहि होइत अछि ? सत्ते, विवाहक पछाति हठात् लड़की सभक व्यवहारमे केहन कायाकल्प भ जाइत छैक ! आश्चर्य लगैए। प्रत्येक बेर एहि बहिनक सासुरक यात्राक पछाति लगैत छल जे कुमारि सुशीला विवाहक पछाति घघरी-सलवार-फ्राकक संग हठात् अपन नेनपनक स्वभावहुँकेँ छोड़ि कोनो आने व्यक्तित्वक जामा ओढ़ि नेने रहथि। किन्तु ई सब विगत भ गेल छैक। तथापि जतेक बेर घूरि-फीरि कए एहि बाटें कतहु जाइत छी हुनकर अनेकानेक छवि आँखिक आगां नाचि जाइत अछि आ हृदयमे वेदनाक समुद्र हिलकोर मारए लगैछ आ हुनकर स्मृतिक अनेकानेक खण्ड सागरक गर्भमे विलीन द्वीप सब जेकां बिसरल अतीतमे सँ एकाएकी देखार होमए लगैत अछि।

एहिबेर एहिबाटे हमर यात्रा, नौकरीसँ इतर, कतहु आनठाम अछि। कन्यादानक जोगाड़मे छी। भतीजी पांखुड़ धरि भ गेल छथि। किन्तु, कतहु तेहन कथा नहि। कोनो ठोसगर संपर्क नहि। भाइ पाइ-पैसाक जोगाड़ सेहो केने छथि, व्यवस्थो द सकैत छथिन। किन्तु, कतहु वर भेटनि तखन ने ! वर भेला डूम्मरिक फूल आ कनियालोकनि मडुआक दोबरि ! तथापि भाइ कहैत छथि—'जखनि टाका देबैक तखन कत्तौ किएक करब।' ठीके आजुक मैथिल वर मंगनीक बड़द तँ थिकाह नहि जे दांत नहि गनबनि ! जखनि टाका लेबे करताह तँ कान्हपर हर-पालो सेहो लादिकए जोतबाक इच्छा होइत अछि। कारण, ई ओ जमाना तँ नहि जे जहियासँ लाल बहिनक तेरहम वर्ष चढ़ब शुरू भेल रहनि मायक आंखि कमलाक धार भ गेल रहैक—कखनहुँ उमड़ल तँ, कखनहुँ संकीर्ण मुदा, अनवरत प्रवाहित ! कहथिन....''कतहु विवाह भ जाइक, अन्न-वस्त्रक तकलीफ नहि होइक; वर लुल्ह-नाङर, लुच्चा-लफांड़ि नहि होइक। अपन घर जाथि आ हमर चिंता दूर हो।''

अर्थात् गरीब लोक, साधनहीन परिवार, अन्नवस्त्रक प्राप्तिकेँ भाग्य नहि मानए तँ आओर की ! आखिर सुख-सुविधाक कोनो एत्ता छैक !

अस्तु, थोड़े प्रयाससँ एहि आषाढ़मे सौराठ सभासँ दादा वर ठीक क' कए अनलनि आ घुरती बैशाखमे सुशीलादाइ बियाहिकए सीता बौआसिन बनि सासुर बसि गेलीह। झगड़ो खूब होइत छल मुदा हुनकर दुरागमनमे हम कनलो खूब रही। तथापि भरोस एतबे रहए जे हुनकर दुरागमनमे संग हमही गेल रहिअनि।

किन्तु, आइ हुनकर मृत्युक चौदह वर्षक पछाति मोन पड़ि आएल अछि सन् 1978 इसवीक 18 मार्च, फगुआक दिन ! संपूर्ण शरीर, मुँह-कान, हरिअर-लाल-पीअर रंगसँ रंगल छल। धुरखेलक पछाति घरमे सूतल छलहुँ। तावते डाकपिउनक

स्वर सुनबामे आएल । उठिकए बहार भेलहुँ तँ ओ हाथमे एकटा तार देलनि । हिन्दीमे लीखल छलैक—'सुशीला दिवंगत' ! देखिकए किछु नहि फुरल । दुब्बर-पातर छलीह किन्तु रोगाहि नहि । प्रजननक वयस छलनि किन्तु आसन्नप्रसवा नहि छलीह । एहि बीचमे एहि इलाकामे हैजा, फौती, अंधड़-बिहाड़ि नहि आएल छलैक । तखनि एना ?

खैर, जहिना छलहुँ तहिना विदा भ' गेलहुँ । लहेरियासराय स्टेशनपर एकटा मालगाड़ी लागल भेटल । चढ़ि लेलहुँ । जावत समस्तीपुर पहुँचलहुँ मुनहारि सांझ भ' गेल रहैक । सलमपुर पहुँचैत-पहुँचैत तँ गाम निसबद्द भ गेल रहैक । बहिनक दरबज्जापर पहुँचलहुँ तँ ओझाजी भोकारि फाड़िकए कानए लगलाह । कनबाक कारणसँ अभिज्ञ दूटा टुअर नेनासब सेहो बापकेँ कनैत देखि झौहरि करए लगलैक । हमरा किछु बुझबामे नहि आएल । किन्तु, मौनकेँ तोड़ैत ओझाजीक गौंआ आ पड़ोसी मुनीन्द्र मिश्र कहलनि—की कहू, सीता बौआसीन देहमे आगि ने लगा लेलथिन । बच्चासब बँचि गेलैक सएह एकलाख । सबतँ ओही घर मे ने रहैक ।'

हम क्रोधकेँ रोकैत पूछलिअनि—'आ एतनीटा अंगनामे एतेक लोक किछु क' नहि सकैत छलनि ! डाक्टर-वैद ककरो सहायता किएक नहि ?'

पंडितजी, ओझाक पिता हँफैत बजलाह—'जावत् केवाड़ तोड़लहुँ तावत कि जान बँचल रहनि । हमतँ अपने नाड़ी देखलिअनि-शान्त, स्थिर, स्पन्दनहीन ! हमरातँ जेना देखिकए लकबा मारि देलक ।'

हमरा आओर किछु पूछबाक धैर्य नहि छल । पूछलिअनि—

'कतए छनि हुनकर चिता ?'

'गंडकीक किनारपर, पीपरक गाछक ओहिपार ।'—केओ कहलकैक ।

आ हम सभक प्रतिवाद करैत ओहि रातिमे सोझे नदीक किनारपर अएलहुँ आ मिझाएल चितामेसँ एक चुटकी छाउड़ ल'कए माथमे लगाओल—'हे लाल बहिन, हम आखिरीबेर अहांक गाम आएल छी । एकबेर गला मीलि लिअए । अहांक संग शैशव आ नेनपनक कतेक स्मृति जोड़ल अछि, कतेक मोन पाड़ब । हँ सत्ते, मोनतँ ओकरा पाड़ी जे बिसरि सकैत अछि ! अहाँ कोना बिसरब हमरा ।' हम आंखिक नोर पोछलहुँ आ चोट्टे गामक बाट धयल ।

काल्हि सांझुकपहर सतगामाक हरखू बाबूक ओतए गेल रही । बेटा छथिन एम० ए० पास, परफेसर । देखबा-सुनबामे नीक । गप्प-सप्पमे ठेसगर । माथपर तीन-चारि बीघा जमीनो-जंथा छनि । परिवार केहन छनि हमरा नहि बूझल । गाम अएलहुँ त' भाइ कहलनि—

'बाउ, हरखूबाबूक बेटापर सरिताक कथा लगैत छैक । पटि जाएत तँ कए लेब । पैसा-कौड़ीक व्यवस्था जहांधरि संभव कयने छी । अहां नीक पद पर छी । व्यवहार कुशल आ वाकपटु सेहो छी । एहिबेर अहीं जाउ ।'

भाइजीक इच्छाकेँ हम टारि नहि सकलिअनि । दहेज लेब वा देब हमरा विहित नहि । तेँ एहि प्रथामे साधक बनब हमरा ग्राह्य नहि । किन्तु, परिस्थितिवश एहिमे हम सानल गेल छी ।

एहीक्रममे काल्हि सांझुकपहर जखनि हरखूबाबूक ओतए बैसल रही तखनि गप्पकजे क्रम चललैक से हमरा पसिन्न नहि, किन्तु भाइक विवशताक परिप्रेक्ष्यमे सबकिछुक संग समझौता !

'डाक्टर साहेब अपने कतेक कमाइत छिऐक ?—हरखू बाबूक एकटा पड़ोसी पूछलनि ।

'पुरुखक कमाइ आ माउगिक वयस पूछब शिष्टाचारक विरुद्ध छैक तथापि एतबा अवश्य जे स्वाभिमानक निर्बाहले अपन वेतन पर्याप्त अछि ।'—हम कहलिअनि ।

'हम वेतन नहि पूछल अछि । ओ तँ पानक डंटी थिक ।'

'तँ पान की थिक ?'—हम खौंझाइत पूछलिअनि ।

हरखूबाबूक पड़ोसी फँचाड़ि तँ छलाहे संगहि निर्लज्ज सेहो । आगू भाषण जारी रखैत बजलाह—'पान आ सुपाड़ी जेहो, मुदा बिहारे सरकारक वेतनक बल पर परफेसर जमाय करए चलल छी, डाक्टर साहेब ?'

'तँ की अहांक विचारें परफेसर जमाए करबाले डाक्टरी छोड़ि डकैतीक व्यवसाय शुरू करबाक चाही ?'—हम प्रश्न केलिअनि । किन्तु ओ कतए हारि मानैवला छलाह—

'से तँ नहि किन्तु दरमाहासँ आइ-काल्हि लोककेँ पेट भरिते नहि छैक कुटुम-कुटुमैती की करत । की औ हरखूबाबू ?'—कहैत फेर टिपलनि ।

हरखूबाबू सहमतिक मुद्रामे नहुँ-नहुँ मूड़ी डोलबैत बजलाह—

'खैर तकर तँ कोनो गप्प नहि । मुदा कालीक माएकेँ बड्ड मनोरथ छनि जे हमरो पुतहु मोटरपर आबए । हमरो घरमे बाजा बाजए । फ्रिज गनगनाए । बिनु बरखे टी० भी०क इन्द्रधनुषक रंग भरिघर छिटकए । किन्तु, हमरो किछु सिद्धान्त अछि । हमहूँ तँ आखिर जयप्रकाशक सम्पूर्ण क्रान्तिक वीर छी ! इमरजेन्सीमे जहल गेल छी ।'

हमरा किछु हुबा वापस आएल । किन्तु, हरखूबाबू जखन फेर बाजब शुरू केलनि तँ भूमिकाक असली अर्थ बुझबामे आबए लागल । कहए लगलाह—'यद्यपि

हम पत्नीक एतेक अंधभक्त नहि छी तथापि हुनको तँ बेटापर अधिकार छैन्ह । माये छथिन्ह । हुनका ई कोना देखल जेतनि जे सब दिआदिनीक घर भरल-पूरल छनि आ सोनपुरवालीक घरमे किछु देखबायोग्य नहि छनि । ताहिमे जँ कनिया संवेदनशील भेलीह तँ...... ।' हरखूबाबू कहब जारी रखलनि—एही सभक कारणे गोपालजीक पुतहु पिछला वर्ष माहुर खाकए प्राण त्यागि देलखिन ।'

सुनिकए हमर माथ घूमय लागल । हम कहलिअनि......'हरखूबाबू रतिगर भ गेल छैक । हमरा डाकबंगला पहुँचैत बेसी बिलंब भेल तँ मेस स्टाफकें व्यर्थ जागल रहए पड़तैक । तें आज्ञा होअओ । भोरमे पुनः..... ।'

किन्तु रूममे वापस अएलहुँ तँ भरिदिनक यात्रा आ तनावक बावजूद निन्न नदारद । सांझुक पहरक घटना बेर-बेर हमरा मोन पड़ए लागल । स्वगत सोचए लगलहुँ—.....सरितासन सुशील आ सोझमतिआ आ सुसंस्कृत कन्या बसि पओतैक एहि सासुरमे । तहियाक गप्प आओर रहैक । दादा निरस्त छलाह, माय हताश छलीह । तें मात्र अन्न-वस्त्रक कामना छलैक । की जानि तें लाल बहिनक आब स्मृतिएटा शेष अछि । ई सब सोचिते रही कि नहि जानि कखनि कने आंखि लागिगेल । आंखिक आगू देखैत छी कनेक धूमिल जकां भेल स्थिर सरिताक छवि । हम ध्यानस्थ भ' कए ओहि छवि दिस संज्ञा केन्द्रित क' कए चिन्हबाक प्रयासकरए लगलहुँ । ठाढ़ नाक, पैघ-पैघ आंखि, 'गोल-गोल गाल, गोरि, अस्तव्यस्त केश आ चेहरापर नेनाजकां मृदु भाव—ई के थिकी ? सरिता ? नहि-नहि ई तँ लाल बहिन थिकीह !....

'लाल बहिन अहां एतय ?'

'हँ बौआ, अहां बिसरि गेल हएब । हम कोना बिसरब अहां कैं । कतए गेल रही ? कथा-वार्ता, सरिताले ? मोन अछि बौआ, हम कहने रही, विवाह-दानमे घर जरूर देखब । हम तकरे मारल रही ।'

हमरा देहमे जेना हठात् बिजुलीक एकटा सशक्त धारा प्रवाहित भ' गेल छल । हम धड़फड़ाकए चौकीसँ उठि ठाढ़ भ' गेलहुँ । आ यंत्रवत् बाजय लगलहुँ—'हँ, हमरा मोन अछि ! अहांक कहल टारब, आ हम ?'

क्षणमात्रेमे जेना भक्क खूजि गेल । तुरते टीसन आबि वापसीक ट्रेन पकड़ि लेलहुँ । एखनि ट्रेनमे बैसल-बैसल लाल-पीअर छीटक साड़ी पहिरने नवकनिआ लाल बहिनक छवि पुनः आंखिक आगां प्रतिबिंबित भ आएल अछि ।

कर्णामृत
अक्टूबर-नवम्बर, 2003

एकटा 'एक्सटेन्डेड' हनीमून

मनु कैं पछिला वर्ष मोन पड़ैत छनि :

अहमदाबाद जं. सँ सोमनाथ एक्सप्रेस खूजल रहैक तँ रातिक करीब दस बाजि चुकल रहैक । जनवरी मासक अंत भ' रहल छलैक तथापि बसात मे कने सर्दी रहै, कनकनी नहिं । मुदा एतबातँ अबस्से जे एकटा ओढ़ना चाही । आ चलती गाड़ी मे खूजल खिड़की बाटे अबैत बसात । तँ अनेरे जाड़क अनुभूति कैं जगजियार कएन रहै छै । तेँ मुसाफिर सब बेरा-बेरी खिड़की सब कैं बंद कए ओढ़ना में घसमोड़ब शुरू केने जा रहल छल । ओइ डिब्बा में क्रमशः अन्हार पसरि आएल छलैक, मुदा मधु कैं निन्न नहि आबि रहल छलनि । पुछलखिन—

....सूति गेलहुँ ?

.....नहि, एखनहि तँ ट्रेन खुजलै-ए । तखनि तँ सुतबाकबेर भइ-ए गेल छैक आ डिब्बा अन्हार छैक तँ गबदी मारने छी ।

.....सएह सोचै छी, एहिबेर सोमनाथहिंक दर्शन ।

....हँ, मुदा सोमनाथहिं टा किएक ? समुद्र आ सौराष्ट्र, पोरबंदर आ प्रभास-पाटन गामक संग द्वारका, ओखा बंदरगाह सेहो देखि लेब । सुकठिक वणिज आ पशुपतिक दर्शन । एकटा आओर हनीमून ! —कहैत मनु कैं हँसी लागि गेलनि जे अन्हारक अछैतो मधुकैं बुझबा मे आबि गेलनि ।

....किएक ने ? हनीमून आओर होइत की छै ? खनहन मोन आ दू गोटेक अनुकूल सामीप्य ।

मुदा अन्हराएल बोगी' आ रतिगर बेर में आन यात्रीक निन्नमे बाधा ने होइक तेँ गप्प-सप्प ओत्तहि ठमकि गेलैक । मुदा मनुक मोन मे स्मृतिक पन्ना धड़ाधड़ि उनटए लगलनि । बीस-वर्ष पुरान मधुक छवि हठात् आंखिक आगां मूर्त भ' अएलनि, आ मनोभाव ओत्तहि पहुँचि गेल रहनि, मधुक तहियाक छवि पर ।

ताबते ट्रेन एकटा झटकाक संग हठात ठमकल रहै आ मनु खसैत-खसैत सम्हरल छलाह ओहिना जहिना बीस वर्ष पहिने भेल रहनि—

.......हमहूं सब कतहु नीकठाम हनीमून ले जायब ।

....हँ ।

....कहियाधरि, कतेक दिन मे घूरब ? हमरा तँ आगू परीक्षाओ अछि ।

....जल्दीए । मुदा घूरब किएक ? अहां कें केहन लागत जँ हनीमून कहिओ खतमे ने होअए ?

...बुड़बक !—आ हँसैत-हँसैत मधु लोट-पोट भ' गेल रहथि आ मनु क्रमशः चिंता निमग्न ।

कहै छै कनिए धानक बगिआ बनै छै ?

कोना हएत गुजर, कतए हएत बसर ? आ कहिआ जाएब हनीमून । आ की हेतैक मधुक सेहंताक । मनुक मोन ठीके खिन्न भ' गेल रहनि । सोचलनि हनीमून ले चाहिऐक की ? दूटा मनुक्ख, आ अनुकूल मनोभाव । मुदा लोक अनेरे हनीमून ले एकटा काल्पनिक छवि बनौने अछि जाहिमे टाका खर्च होइक आ संग मे शिमला-मसूरी-कुलु-मनाली-उटी-नीलगिरिक नाम । ई सोचिते मनुकें ठीके तामस चढ़ए लागल रहनि—'अमीरन केर हरमजदगी' ...सोचलनि—हनीमूने हेतैक तँ अपने इलाकाक अनचिन्हार ठाम मे लोक किएक ने जाएत । रांची, नेतरहाट आ नालंदा ? मुदा मनक गप्प मनहिं । विचार शृंखला दिस सँ भक्क टूटलनि तँ मुग्धा अभिसारिका जकां बेसुध, निन्न पड़लि मधु पर दृष्टि पड़लनि आ अनेरे मोन आनंद आ आमोद सँ भरि आएल रहनि ।

फेर मोन पड़ए लागल रहनि—शिमलाक 1988क यात्रा । फरवरीक मास रहैक वा मार्चक । कनिएँ मेघ आएल रहैक आ दू चारिटा बुन्नी पड़लैक आ एकाएक छोट-पैघ पाथरक बरखा सँ सम्पूर्ण माल, रिज आ समीपक घाटी उज्जर भ' आएल रहैक । संग आएल दुनू नेना, कतबो कहलखिन, केबाड़ खोलि बाहर भागि गेल रहैन । मम्मी, मम्मी, 'स्नो फॉल' । माल पर अवस्थित होटल ग्रैंड केर विशाल खिड़की बाटे माल आ रिज दिस मंत्रमुग्ध भेलि मधु प्रकृतिक पसाहिन सँ सजाओल शिमला कें देखि रहल छलीह त' पाछू सँ अनचोके मे आबि भरि पांज पकड़ैत मनु कहने रहथिन—

.......मधु, अहां हमर जीवनक संजीवनी छी आ हृदयक—

......'एंड्रेनलीन' कहैत दुनू गोटे समवेत ठहक्काक संग एकाकार भ' गेल रहथि ।

मधु पछाति कहलथिन—'ठीके, शिमला देखबाक बड़ उत्साह छल । दार्जिलिङ्ग केर 'बतसिया लूप' आ टॉय ट्रेन तँ देखल छल मुदा शिमला—'क्वीन ऑफ हिल्स',

ब्रिटिश इंडियाक ग्रीष्मकालीन राजधानीक ततेक वर्णन पढ़ने रही जे एतय आबिक' बड़ पुरान मनोरथ पूर्ण भ' गेल ।

मनोरथ पूर्णक स्मरण आ आत्मसंतोषक चद्दरिक सुखमय आवरणक पसरिते मनु केँ सेहो निन्न आबिगेल रहनि ।

भोरमे जखनि निन्न खुजलनितँ एकटा तेलुगुबंधु गिरनार हिल्सक लेल रेलवे स्टेशनक पुछारी क' रहल छलाह । व्यक्ति व्यवसायसँ डाक्टर छलाह आ रूचिएँ यायावर । निश्छल भावें अपन उद्गार प्रकटकरैत बाजि रहल छलाह—

निआरिकए लोक कहाँ घूमि पबै-ए । कखनहुँ टाका नहि, तँ कखनहुँ छुट्टी नहिं । आ कखनहुँ जखनि दुनू संगरहै छै कोन ठेकान स्वास्थ्य आ मनोभाव संग नहिं दैत छै । तेँ जखनि जतए मौका लगै-ए देखि लै छी ।

महाशय कतहु व्यवसायगत सभा-सम्मेलन मे आएल छथि ।

सोमनाथ एक्सप्रेस करीब 8.30 बजे वेरावल पहुँचल रहैक । छोट सन स्टेशन आ कनिएकटा कस्बा । इलाका पहिने जूनागढ़ राज्यक अंग छलैक । राजा अपने, आ प्रजाक किछु हिस्सा मुस्लिम समुदायक छलैक तेँ सोमनाथक ज्योतिर्लिङ आ धामक सामीप्य रहितहुँ टिपिकल तीर्थस्थल जकां पंडा-पुरोहितक गिद्ध-समूह नहि । गुजरात पर्यटन विभागक गेस्ट हाउस 'तोरण' लगहिमे छलैक आ समुद्र तट, फिशरीज इन्स्टीच्यूट आ समुद्रतटीय लाइट हाउसक ऊँच आ कारी-उज्जर इमारत सड़कक दोसर कात, मुदा लगहिं आ आंखिक सोझे छलैक । आसपास मे बिड़ला व्यापार समूहक कोनो कारखाना छलैक प्राय: । तेँ कॉलोनी, गेस्ट हाउस आ मंदिर सेहो ।

तोरण गेस्ट हाउसक सादा मुदा ऐल-फैल आ साफ-सुथरा परिसर मधु केँ नीक लगलनि । सामनेक समुद्र-जलधि-मे अजस्र पानि छैक मुदा गाछ-वृक्ष आ हरिअरिक कमाप्ति, आ भूमि मरुभूमि जकां बलुआह । मुदा नगरीय कोलाहल, भीड़, गंदगी आ भागदौड़ सँ दूरी आ मनुक सामीप्य सँ मधुक मोन सामनेक समुद्रहि जकां हरिअर कचोर भ' आएल रहनि । कहलखिन—

........वर्ष मे एकबेर एहन स्थान मे एबाक चाही । मोन मे खूब मरहम लागत ।

.......आ निर्मल वायु सँ 'डी टॉक्सीफिकेशन' सेहो ।

.....सत्ते । वायु तँ अपन इलाका मे सेहो नीके छैक मुदा एतेक सुविधा नहि ।

.....आ हनीमून ले एतेक एकान्तो नहि !

एतबे मे खानसामा बाबूभाइ चाहक ट्रे आ टैक्सीक अयबाक सूचना ल'कए उपस्थित भेल छलाह । दालि-भात मे मूसलचन्द ! मनु मने-मन सोचलनि । मुदा पूर्व

निर्धारित कार्यक्रमक बंधन । दुनू गोटे चाह पीबि निकलि देलनि । आइ सोमनाथहिक दर्शन । टैक्सी चललाक पांच मिनटक भीतरे वेरावलक कस्बा पाछू छूटि चुकल छलैक । सड़कक एक कात बबूर-कींकरक कटांह जंगल झाड़ आ दोसर दिस दूर क्षितिज तक पसरल अरब सागर । मनु कैँ लगलनि जेना जीवनक दार्शनिक परिदृश्य सुख-दुःख, सौंदर्य आ विद्रूप—एकहिठाम, बाटक दुनूकात, मूर्तिमान भ' आएल छलैक ।

मधुक आंखि सागरक सौंदर्य सँ विमुग्ध भ रहल छलनि तँ मनुक मोन मे विगत जीवनक कांट सब बाटक कातक बबूरक गाछ सब जकां बेराबेरी प्रकट भ' रहल छलनि ।

सोचए लगलाह मधु सन संगिनी । मुदा हम ? की द सकलिअनि ? जहिया परिवार छोटे छल तहिआ कहिओ कमला-कोसीक मारि सँ ढहल-ढनमनाएल घर-अङनाक घरहट-मरम्मति, परिवार-परिजनक बेगरते, परेशान रहैत छलहुँ । फेर बाल-बच्चा, माता-पिता आ मुलुकक तरद्दुद । मुदा कहिओ बेचारी मोन मलिन नहि केलनि । मनकथाक धरोंहि लगले छलनि कि एकाएक टैक्सी ठमकल रहै ।

.....की श्रीमान् ? कतए हेड़ाएल छी ? लौटि आऊ ! कहैत मधु हँसए लागल छलीह ।

....कतहु नहि ? मनु अपन मनोभाव कैँ नुकएबाक असफल प्रयास करैत बजलाह ।

.....इएह थिकाह सोमनाथ । गाम प्रभास-पाटन ।

टैक्सीवलाक एलान !

छोट सन गाम । सीमित आबादी । बलुआह मटमैल भूमि आ दूर क्षितिज तक पसरल समुद्रक छाती पर गौरवे अगराइत हजारो छोट-पैघ नाओ, धाव, मोटर बोट आ व्यावसायिक जहाज । मने कहैत हो, बड़ गौरव छह, बड़ अथाह छी, बड़ विशाल छी मुदा करबाक छह भिड़न्त ? तँ करह हमरा सँ ! हिम्मत अछि ते ने छाती पर दालि दरड़ैत छिअह ।

ओहने विशाल, मनोरम आ दूर तक पसरल समुद्र देखिकए मनु कैँ पुनः पछिला वर्षक यात्रा मोन पड़ि आएल छनि । आ संगहि अनेक वर्ष पुरान कचोट—'हमहूँ सब कतहु नीक ठाम हनीमून ले जाएब ।'

मनु सोचैत छथि आब तँ बरखे-बरख नीक ठाम जाइत छी—कखनहुँ बंगलोर, कहियो बनारस, कखनो बदरिकाश्रम तँ कखनो बड़ौदा ।

मुदा हनीमून ? उड़ीसा तटक कछोर पर बसल सूर्यमंदिरक दुआरि पर बैसल मनु कैं इएह सब गुनधुन वर्त्तमानक हर्ष सँ दूर भूत केर विगत विवशताक विषाद मोन पर भादवक मेघ जकां अन्हार पसारि देने छलनि ।

तावते फेर वएह व्यंग्य—

की श्रीमान् कतय हेड़ाएल छी ? लौटि आउ !

आ मधु भभाकए हँसए लागल रहथि ।

मनु केर अन्यमनस्कता अझक्के मे मधु पकड़ि नेने रहथिन । तें साकांक्ष होइत कहलखिन—

कतहु नहि । इएह, कतेक नींक छैक ई सूर्य मंदिर । विशाल परिसर, ऊँच चबूतरा, अप्रतिभ रथ आ विशाल पहिया सब । संगहि सबल आ गतिमान अश्व । मुदा सबसँ जे नीक लागल ओ तँ अजगुते छैक— मंदिरक चबूतराक पक्खा पर बनल अजस्र आ विभिन्न नमतीक मूर्ति सब, जकर चेहरा पर एतेक शताब्दीक पछातिओ, हर्ष-विषाद, भय-आमोद, घृणा आ प्रतिशोध, अभिसार आ आनन्दक भाव अएना जकां झलकैत छैक ।

.........ठीके त' कहैत छी । तें छिऐक ई हनीमून ले आइडियल पड़ाव ।

........हनीमूनले तँ ठीके लोक एतए अबिते हएत ।

.....आ हमरा लोकनि की क' रहल छी ?

....हँ, हमरा लोकनि तँ घूम-ए आएल छी । भ्रमण पर ।

.....बुड़बक ! आन आएल अछि हनीमून ले आ हमरा लोकनि घूमए आएल छी । किन्हु नहि । इहो हमरा लोकनिक हनीमूने थिक । एक्सटेन्डेड हनीमूनक एकटा आओर पड़ाव ! आ दूनू गोटे हँसैत-हँसैत लोटपोट होबए लागल रहथि !

❑❑❑

भूमि

एहि बेर नहि जानि हुनका कोन जिद लागि गेलनि। 'गामहिं जायब'क रट जे शुरू केलखिन से छुटलनि नहि। के ने बुझओलकनि—

'दाइ गाम मे मोनहु खराप हेतनि तँ एक गिलास पानिओ के देतनि। एखनि पटने चल जाथु बौआ लोकनि दशमी मे गाम औथिन तँ पटने बाटे ने जेथिन। चल जैहथि।' मुदा नहि। एकेठाम जिद रोपि देलखिन।

ओहि समय मे मईक मास छलैक। देवघर मे बेटीक बियाहक जुटान रहैक। एतेक भयानक गर्मी आ 'लू' मुदा हिम्मत क'कए वा अनका सभक भक्तिक बलें दाइ सेहो पटनासँ वैद्यनाथ धाम धरि पहुँचल रहथि। एक तँ करतेबता, बेटीक बियाह, आ दोसर बाबाक भक्ति, जेकरो जेबाक हिम्मत नहि होइक सेहो गेलाह।

मुदा आब देवघर आबिओ कए दाइ कँ बाबाक दर्शन करबाक पैरूख कहां ?

आब जेतीह गामहिं। जीवनक प्रथम पचास वर्ष मे प्राय: सिमरिया घाटहि धरि गेलि छलीह, कुमारिए मे सेहो। तकर पछाति आओर कतहु कहां।

'एहि फंद सँ फारकति भेटैत तखन ने कतहु जैतहुँ।

आ सेहो सहजहिं होइत छैक। मुदा पछाति दाइ कतए-कतए ने गेलीह। बनारस-इलाहाबाद सँ वैष्णोदेवी धरि। मुदा आब एहि बेर रामेश्वरम् जएबाक प्रलोभन सेहो गाम जएबाक धुनि सँ मोन बहटारि नहि सकैत छनि। 'बाऊ आब कतहु ने।'

"गाम सँ दरभंगा जाइत छी से मोन निप्राण जकां भ' जाइए।"

आ से ठीके। कतहु नहि होइन। एम्हरूका टेन तँ सत्ते 'नरक मे ठेलमठेला'क कहावत कँ चरितार्थ करै-ए। ओहि मे छउड़ा-माड़रि धरि पस्त भ' जाइ-ए तँ बूढ़-बुढ़ानुस कतय सँ ठठथु।

जे किछु।

मुदा गाम जएबाक दाइक हिक कँ बूझब मोसकिल नहि। कहथिन 'जहिआ एहि गाम मे आएल रही तहिया संऊसे तँ जंगले रहै। लोक कहै जे सांझ होइते गाछी मे

हेंज-क-हेंज राकस बूलए लगै छै। छोट छलहुँ। अङना सँ बहरएबाक रेवाज तँ छलैक नहि जे अपने आंखिए देखितिऐक। तेँ जे सुनिऐ, ततबे बुझिऐ। भानस-भात ले जारनि-काठी ओरिअबै ले लुटनी अबै छलि, ओहो तँ हमरे वयसक छलि, मुदा दोसराति तँ हुए। कहुना भूत-प्रेत-राकसक डर कैं भगाबी।

तहिया सँ एखनि धरि आब पक्की सड़क, बिजुली आ टेलिफोन सेहो छैक—दाइ एत्तहि छथि।

शहर-बजार सँ आब केओ अबै छथि तँ गाम मे एकदिन, दू दिन बस। ओकर पछाति जी कहां टिकै छनि। कहै जेताह बाप-रे, एतय रहि कए करब की ? एक-दू दिन एहि अङना-ओहि अङना करू। तकर पछाति ? मुदा सम्पूर्ण जीवन मे दाइ कैं गामक जीवन 'स्लो' त जाए दिऔक 'फास्टो' नहि 'जेट-सेट' लगैत छलनि। कहैत छलखिन 'होइए दिन राति मे चौबीसे घंटा किएक पच्चीस-छब्बीस घंटा होइतैक।' सेहो ठीके।

जाहि प्रकारक हुनक जीवन छलनि तकर गति सँ केओ आउट ऑफ पेस भ सकैत छल।

भोरे वा अहल भोरे, प्राय: भोरूकवा तारा उगबहु सँ पहिने, उठैत छलीह। आ डिबिआ लेसि बेरूक पहरक बनाओल तूरक पीर आ चरखा ल' कए बैसि जाइत छलीह। भोर होइत-होइत जतेक किछु सूत काटि पबैत छलीह बस वएह छलनि चौबीस घंटाक प्रत्यक्ष आर्थिक संचय। ओहू दिन मे केओ-केओ चरखा धरैत छल सामाजिक आन्दोलनक हथियारक रूप मे आ केओ आर्थिक उपार्जनक सुलभ स्रोतक रूपें।

दाइ ले चरखा आर्थिक उपार्जनक स्रोत मात्रे छलनि। ई तँ भेल भोरहरबाक रूटीन। दिन भरिक नियमित काजक बोझ तँ फूटे। मुदा तकर अतिरिक्तो दाइ किछु समय अनकोले बंचा लैत छलीह। जखनि हरवाह-चरवाह आ खवासिन दुपहरिया मे एक निन्न मारि देहक ठेही उतारैत छलि दाइक चारू कात भरि टोलक माउगि-मेहरि लुधकल रहैत छलि।

तहिया कमौआ सब 'कलकत्ता' कमाइ ले जाइत छल। मुदा टेलिफोन तँ रहैक नहि। गाम-घरक सर-समाचार चिट्ठी-ए सँ जाइत छलैक। सब दिना गप्प भेल तँ 'पोसकाट', टाका पैसाक 'अरजेन्टी' भेल तँ बेरन (बैरंग) आ आंग-स्वांग भेल तँ तार। मुदा तार लिखिनहार आ पढ़निहार गाम मे छलैक कतए ? तार अएबाक खबरिए लोकक छाती कैं तेना धड़धड़ा दैत छलैक जे हरिमोहन झाक औपन्यासिक पात्र तारक नामे सुनिकए तेना ने हनुमान चालीसा पढ़ए लागल रहथि जे हनुमान 'कुमति निवारि'

सँ 'सुमति निवारि कुमति केँ संगी' भ' गेल रहथि। जे किछु।

अस्तु। दाइ चिट्ठी लिखबा मे दुपहरियाक निन्न तँ गमबैत छलीह मुदा सम्पूर्ण नारी-समाजक (कारण सब कमौआ तँ बाहरे रहैक) आदर आ उपकार-भावक पात्र बनैत छलीह। बौआसीन हिनकर लिखल चिट्ठी 'मारल नहि जाइत छैन। हड़ाक द' पहुँचि जाइत छै।'

एतबे नहि लोक इहो कहैक 'बुआसीन औषध बिरो' सेहो बूझै छथिन। 'छरपा के गलफुल्ली जे भेल रहै वएह कहलखिन दर्दमेदाक छाल पीसिक लगबै ले। तेहन ने छुटलै जे फेर घूरि क नहि भेलै।'

सब मिलाकए दाइक छोट सन संसार छलनि, झंझटि अपार छलनि, मुदा समाजक उपकार करबाक संतोषक छोट-छोट मेघक टिक्कर जीवनक विसंगतिक निरंतर-अकाल रौद सँ क्षणिक छाहरि जकां अपूर्व तृप्ति दैत छलनि। इएह सब छलैक प्राय: गामक जीवनक संतुष्टि। ततबे नहि बहुतो गोटे ऐतिहासिक अयाचीए जकां 'सवा कट्ठा बाड़ीक साग' सँ गुजर करैत छल। आ' सबसँ जे बड़का गुण छलैक ओहि जीवन मे से छलैक बड़का-बड़का सामाजिक-आर्थिक खाधिक कमी। वा कहू सामाजिक खाधी तँ छलैक जाति-वर्गगत मुदा आर्थिक अन्तर मे थोड़-थोड़ दूरी। बेसीओ छलैक तँ गुजर तँ चलैत छलैक सब केँ।

तेँ दाइ केँ मोन पड़ैत छनि छियासठिक बाढ़िक बादक अकालक। धीया-पूता एक लेखे जिद रोपि देने रहथिन्ह। 'बाढ़िघर अङना के धाङि देने अछि। खेतपथारक वएह हालत छैक। दाइ की रहब गाम मे ? छैक की एतय ?'

दाइ केँ बड़ तामस चढ़ल रहनि। कहलखिन 'ई गप्प आइ नहि पूछू। अहां लोकनिक जे ई काया अछि एतहि जनमल एतहि बढ़ल आ एतहि जखनि फौदाएल तखनहि अपन-अपन कनरी काटि क' दिल्ली-दरभंगा जाइ गेल छी कि ने। एतुका माटि मे कनकजीर आ कतरनी नहि तँ अल्हुआ-मडुआ तँ उपजै छै। आरू, खम्हारू, केसौर, करौना तँ होइ छै, कि ने। जाइ-जाउ अहां सब। कतहु रहू, आनन्द रहू। हम एत्तई रहब, एही माटि मे जे उपजत काटि-कूटि आ कोड़ि कए खाएब।

जहिया मोन हो, पलखति हो अबै जाएब, भरि आंखि देखब बस वएह भेल हमर संतोष। सब निरूत्तर भ गेल रहथि। मुदा पछाति दाइ सबतरि गेलीह। दाइक उक्ति एहि बेर ओतेक प्रखर तँ नहि, प्राय: वयसक असरि आत्मविश्वास पर पड़ल छनि। मुदा अनिर्णयक घून एखनहु हुनकर सांखुसन निस्सन दृढ़ निश्चय केँ फोकिला नहि केने छनि।'

अस्तु। जेतीह गामहिं। 'समाज छै ने ! एहन काज पड़त तँ देखल जेतैक।'

समाज कतबो बदलि गेल होइक मुदा समाजक बल दाइ कें एखनहुँ छनि।

माताक एहि जिद पर ककरो तामस चढ़लनि आ किनको मोन तीत भ' गेलनि। केओ कहलखिन—

'माता एकटा गप्प कहै छी, एसकर मे रहब, अस्वस्थ भ' जाएब, अहाँकें कष्ट भ' जाएत से हमरा सबके नीक लागत ?

'........'

'आ किछु भ' जाएत एसकर मे तँ अयशो लोक हमरे लोकनि कें देत'।

'.........'

'तें सोचल जे एक बेर ई गप्प बुझा दी।' जेना माता कें ई सब बूझल नहि होइन—नतिनी सिखाओल बुढ़ दादी कें।

निर्विकार भावे माता सबटा सुनैत रहलीह। चेहराक भाव सँ निरपेक्ष, अविचल आ अडिग।

हम माताक चरण स्पर्श करैत छिअनि—'जाइत छी।'

'..........'।

एहिबेर 'पहुँचि कए चिट्ठी लिखब वा फोन कए देब' केर निवेदन वा आदेश नहि। आंखि मे नोर नहि। माता प्राय: गंतव्य पर पहुँचि गेल छथि।

तहिया मइक मास रहैक।

अगस्त मास मे सबके सूचना भेलनि। दाइ दुखीत छथि। डाक्टर 48 घंटाक समय देने छनि। आश्चर्य, असमय सर्दी-बुखार। खोखी-कफ आ बोखार तँ हुनका प्राय: प्रत्येक जाड़ मे होइते छलनि। मुदा दाइ कहथिन 'ई हमर जीवनी थिक।' शुरू मे तँ नवारी-ए मे भेल छल। सब कहए 'थाइसिस' थिकनि। ई छुटै छै। मुदा हमर बाबू कहथि 'इ हमर सबसँ बेसी भागमंत बेटी छथि।' हिनकर अंत एखनहि हेतनि ?' आ सएह देखू 88 वर्ष तँ बीति गेल। हँ, अहांक बाबा जरूर, सुनै छिऐक, कहने रहथिन 'जाथु जे होइन।' बौआ कें दोसर विआह करा देबनि। विआह मे तँ खर्च भेले छल। आब श्राद्धोमे जे लागत। देह लगा कए मारब।'

ठीके गप्प। बिकौआ छलाह। बिआहक अर्थ आमदनी। जेठ भाइ अठारह टा बिआह केने छलखिन। मुदा अपनहुँ तँ छ: टा केनहि छलाह।' जे किछु, मुदा आब एतबा तँ तये जे तहिया दाइ कें थाइसिस नहि छलनि। नहि तँ नब्बेक पड़ाव धरि कोकनल फेफड़ा कहां संग दितनि। एहिबेरक रोग सँ दुर्बल शरीर शक्तिविहीन भ' रहल छनि, मुदा संज्ञाओ स्मरण ओहने प्रखर। मुदा एहिबेर दाइ जेना अविचलित

छथि । बेरा-बेरी गामक सब आबि-आबिक' देख जाइत छनि ।

'दाइ मोन केहन छनि ।'

'............'

'दाइ किछु चाहिअनि ?'

किछु नहि । जुनि पूछू । हमरा किछु खेबाक लालसा आ देखबाक सेहंता बांकी नहि अछि ।

'.........'

'दाइ शुभंकर बौआ कें नहि देखलखिन ।'

'अहां सब कें देखै छी कि ने'—दाइ परिवारजनक मोहक बंधन तोड़ि चुकल छथि आ अपन गंतव्य पर पहुँचि चुकल छथि ।

'दाइ पानि पीथिन ?'

'भूमि पर द दिअ ।'

भूमि पर दितहि दाइ भूमिवत भ' गेलीह, । आंखि खूजल आ श्वास स्थिर, दृष्टि दूर आकाश दिस केन्द्रित । शरीर शीतल, संज्ञाशून्य आ प्राणहीन ।

दाइक जिद्दक आब अर्थ लगैए । अपन भूमिएले आफन तोड़ने छलीह, अपन भूमि भेटि गेलनि ।

❑❑❑

गाम के परनाम

चुहचुहिआक चुह-चुह सुनिते पूर्णिमाक आंखि खूजि गेलैक । ओ चुपचाप पएर मारि बिछाओन पर सँ उठि बहरएबाक नेआर करए लागलि तँ मोहन बांहि पकड़ि अपना दिस लेलकैक—

....एखनि कतय ?

....धुर, पह फटतै आब ।

मोहन कतेक दिनक बाद गाम आएल छल । कहलकै—

हमरा लोकनि केँ कए दिन एना निन्न टुटै-ए ? जागल रहै छी तँ थाकल । उठल रहै छी तँ मोन चिन्ता बेगरता सँ भरल । कने काल एहिना पड़ल रहू ने ।

...आ छाउड़ गोबर, घास-भुस्सा, चूल्हि-चिनबार के करतै ? आब हमरा आउरक वएह वयस अछि !

....तँ की भ' गेलै—आब ? —मोहन कहलकै ।

सोन-चानी नहि, एक ठोप तेल आ एक चुटकी सब दिन भेटौ तँ दाइ बौआसीन सँ कोन कम लगबें !

पूर्णिमाक मोन आह्लादें भरि ऐलैक । कहलकै—चुप रहू कने, सुन्दरी उठि जाएत तँ सबटा लल्लो चप्पो धएले रहि जाएत ।

....अहांक नूओ बस्तर फाटि गेले'—मोहनक हाथ पूर्णिमाक फाटल आडी मे बाझि गेल छलै—'एहि बेर अहां ले नूआ-बस्तर पहिनहि कीनि लेब ।'

.....अनेरे । बुढ़ियाक नूआ आ सुनरीक फराक कतए सँ अओतैक ?

.....हँ, सुन्दरी कतेक दिन सँ लौल करै छले । भगवानक अकवाल रहलनि तँ ओकरा गामक इस्कूल सँ आगुओ पढ़ेबे करबै । मुदा एखनि कने तोहीं पढ़ि ले ।' कहैत मोहनक मोन आमोद सँ भरि आएल छलै ।

पूर्णिमा केँ भोरहरबाक ई सान्निध्य बड़ सोहाओन लगलैक आ ओ क्रमशः समर्पित होइत गेल ।

भोरे निन्न टुटलै तँ पहिने छाउड़-गोबर काढ़लक आ तखनि घैल ल'कए इनार पर आएलि। इनार मे डोल खसबितै कि इनारक शान्त आ अएना जकां चमकैत सतह पर अपने बिम्ब पर नजरि पड़लै।

कनेक बिहुँसलि।

गोल-गोल गाल पर कनेक लाली छिटकलै। मुदा कारी-उज्जर केश राशि पर नजरि पड़िते मोने-मोन बाजलि—धुर, झुट्ठे ठकैए मनसा।

फेर मौगी-ए क' मोन ! मोने-मोन भेलै—कोनो बेजाओ तँ नहि कहै-ए। सोना-चानी आ भरि देह कपड़ा-लत्ता रहितै तँ हमरा आउर दाइ-बौआसीन सँ कम किए होइतिऐ ! गिरहत आ मालिक तँ अनेरे मीठ-मीठ बोल नहि बजैत रहै छल।

फेर कने लजाएलि—धुर, अनेरे। अनकर जनी-जाति एहिना नीक लगै छै सब केँ। मुँहझौंसा मनसा सब।

पूर्णिमा एहेना मने-मन गुन-धुन करिते छलि कि रसियारीवाली पूछलकै—

इनार मे मुड़िआरी देने की करै छही ? मनसा तँ अङना मे बाट तकैत हेतौ।

पूर्णिमा चट-पट घैल भरलक आ बिहुँसैत विदा भेलि।

बेर-बसात भेलैक तँ मोहन सेहो टोलपर गेल। सब टोलक नोकरिहासब पंजाब, अलीगढ़, सूरत, दिल्ली, बम्मै सँ दसमीक छुट्टी मे गाम आएल छल। फौजी-मलेटरी सब सेहो गाम आएल छल। पलटनिया फौजीक दारू पर सब तहिना लुधकैत अछि जेना जिलेबी-अमिरती पर बिढ़नी-पचहिया। जे किछु। मोहन केँ बान्धहि पर मोचन भेटि गेलै। मोहन पूछलकै—की हौ, मोचन भैया, एहि बेर पूजा कोना की भ रहल छै ?

.....पूजा की हेतै, तो सब कमा क' एलेहें, जोर लगबै जाही सब मिलिकए। नीके हेतै। तोरा, बस, पांच टा नमरी लगतौ।

.....आहि रौ बाप ! हमरा सँ पाँच टा नमरी। लैह ने फौजी-सिपाही सँ, पैकार-व्यापारी सँ। हम तँ रिक्शा घीचै छी। नीके रहलहुँ तँ बेस नहि तँ जहां भेल जर-बोखार, कि भेलै हैरताल-बन्न कि काजो बन्न आ मुँहों बन्न।

मोचन आगू किछु नहि कहलकै।

...मर बैंह, ताड़ी पीबै मे आखि नै लगै छौ ? बुधना दपटि कए कहलकै तँ मोहन के जेना बकारे बन्न भ' गेलै। मुदा कनके ठमकि कए कहलकै—

रौ सुन्दरी केँ इस्कूल मे देने छिऐक ओकरो फीस, किताब, कपड़ा, लत्ता चाहिऐ।

....कोनो बेजाए नहि । नीके करै छें ।

मुदा आब तँ इस्कूलक खोपड़ीओ नै छै । मास्टर अबितो हेतै तँ बैसतै कतए ।

मोहन कें मोन भेलै कहै तँ लगबह ने जोर एहिबेर इस्कूलेक खोपड़ी ठाढ़ भ जाए । मुदा किछु कहि नै भेलै । मोहन, सत्ते, गामक हवा देखि कए अपन अङने आपस आएब उचित बुझलक ।

अङना आएल तँ पूर्णिमा मुँह लटकौने देहरि पर बैसल छलि । कहलकै—भगवान गेलखिन माथ पर आ अहां मुँह मे पानिओ नहि नेने छी ।

.....आइ कोनो रिक्शा घीचैक अछि । फेर मोहन कने लग आबि कए कहलकै—सुन, टोलबैया सब पूजाक बेहरी मे पांच सए रुपैया मडै छौ ।

.....तँ द अबिऔ । ओकरा सबके आओर कोनो काज छै । एखन बेहरी असूलत आ भरि बरख मखड़त ।

.....कने आस्ते बाज । अनेरे सब कोनटा लागल गप्प सुनैत रहैए ।....अच्छा लाउ, जे अछि । आइ नहिएं नहाएब तँ की हेतै ।

पूर्णिमा घरक भीतर जाकए भात आ अरिकोंछक झोर काढ़ए लागलि आ मोहन ओत्तहि ओसारा पर बैसि गेल । फेर पूर्णिमा जखनि थारी आनि कए आगू क' देलकैक तँ मोहन सुआदिसुआदि खाए लागल । कहलकै—अहां नोनहु भात उसीनिक आगां राखि दैत छी तँ मोन तिरपित भ जाइ-ए । आनठाम केहनो किछु एहन दीव कहां होइ छै । मोन तँ बड़ होइए जे हमरो लोकनिक जनी-जाति संगहि रहैत मुदा ल कत जाएब । अपने असगर तँ रिक्सहि पर सूति रहलहुँ, कतहु पड़ि रहलहुँ.... ।

.....की हेतै ? एहिठाम गाम डेबिकए हमरा आउर रहै छी तँ गुजर तँ चलिए जाइ-ए । पूर्णिमा बोल-भरोस देलकै ।

.....हँ, गुजर तँ चलिए जाइ-ए मुदा इहो गुजर कोनो गुजर छिऐक । परसू सरजुगक पुतहु रद्द-दस्त सँ मरि गेलैक । एहि गाम मे केओ एकटा गोटी देनिहार नहि भेटलै । बजार पर सँ डाक्टर अनिते से विभव नै छलै..... ।

हमरा लोकनि जै लोभे बाल-बच्चाकेँ छाऊड़-गोबर, हर-फार नहि करए देलिऐक तेकरोहाल देखिते छिऐक । बच्चा बुतरू ने काजे सीखलक आ ने पढ़बे-लिखब होइ छै ।

ई कहितहिं मोहन कें सहजहिं मोन पड़ि अएलैक ओकर बाबा कंटीर आ बाबू पंचमनि कुम्हार । केहन सुरेबगर घैल-पातिल, कोहा-कराही, लाबन-धूपदानी बनबै छलै बाबू । राजा सल्हेसक तँ एहन घोड़सबार सब बनबै छलै बाबू जे दरभंगा-मधुबनी

सबतरि बिकाइत छलै । राजा सल्हेसक मूर्तिक स्मरण सँ मोहन केँ दिल्ली मोन पड़ि अएलै । ओत्तहु तँ बिकाइत छथि राजाजी । संगहि मोन मे कचोट सेहो होबए लगलै—आइ जँ ओहो सीखल रहैत तँ ई हाल होइत । मुदा बीतल गप्प । मन-क-बात मनहि रहओ । मोहन सोचलक—बाबुओ तँ किछु सोचिए कए हमरा सबकेँ हाथ सँ माटि सानब नहि सिखौलनि । हँ, हुनकर मनोरथ पूर नहि भेलनि तँ ककरा दोख देबै । खैर, मोहन भरि पेट भोजन केलक आ अपनहि ओसार पर भरि निन्न सूतल ।

मुदा दोसर दिन जे बखेड़ा उठलै तँ सबहक निन्न उड़ि गेलै; भरि गामक । सभक मुँहें एक्के गप्प-गाम मे गोलैसी भ' रहल छैक । छउड़ा सब कहै छै, छागर अपनहि कटै जेतै पूजा मे । तै पर सँ पाइ-पैसा ले विभेद । नाच-नटुआ ले ऊपरा-ऊपरी । मुदा सभक चिंता एके छै कोनहुना पूजा शुभ-शुभक' पार लागि जाइक । छागर-पाठि केओ काटौ भगवती तँ एके छथिन । मुदा छउड़ा सब अड़ल छै । यावत् फैसला नै हेतै भसाओन ले केओ भगवतीक चाल मे सहारा नहि देतनि । कहै छै कि तँ, हमरा आउरक छागर भगवती केँ पटि नहि हेतनि तँ चाल सेहो पुजेगिरि अपनहि उठाबथु !

गामक गोलैसी सँ मोहन क्षुब्ध अछि । एहन झंझटिया महाल मे के सटि कए जाए । मोने-मोन कहलक—धुर, जे काटौ छागर, आ जे उठाबए चाल । ऐ खुष्टम्-ख्याल सँ हमरा लोकनि केँ की ? हमरा लोकनि तँ बेहरी-ए टा दैत छिऐ । विचार त्तँ केओ पूछै-ए कहां । मुदा रहि नै भेलै । तेँ जखनि ई गप्प ओ मोचन केँ कहलकै तँ मोचन कहलकै—की पूछतह विचार ? सब बरख तँ पूजा दस गोटेक बाते-विचार सँ होइत छैक ।

......से तँ ठीक । मुदा एकटा गप्प कहिअह हौ मोचन भैया, एहिगाम मे पहिने पूजा तँ नहिए होइ छलैए तँ कि कमला माइ गौआँ के बचा कए नहि रखने रहथिन । बड़नी, भेलै पूजा शुरू मुदा आब मारि-फसाद जँ शुरू हेतै तँ के सटि कए जाएत पूजा लग ? हमरा तँ बड़ डर होइए हौ मोचन । सुनलिऐ-ए बरख पांचेक होइछै, करणपुर मे, पूजहि मे, अपने मे जे खून-खुनामए भेलै से एखनहु केस मोकदमा चलिते छै । आ लोकक जान गेलै से फूटे । ऐ सँ तँ सब सहुलियत सँ रही हौ भाइ । हँ, एकटा गप्प आओर । हम एहि बेर पांच टा नमरी नहि द सकबह । सुनरीक माए केँ सबटा नूआ बस्तर रूती-पतन्ना भेल छै । छौंड़ीओ लौल करै-ए आ मास्टर केँ बाकी छै फूटे । बिनु लेने-देने कहां दूइओ आखर सीखबै छैहौ भाइ । आ मोहन दू टा नमरी बगुलीमे सँ निकालि कए मोचन केँ देलकैक । मोचन दुनूटा नमरी केँ तहिया कए अपन बुगली मे रखलक आ कहलकै—मीता एकटा गप्प कहिअ ? मनोरथ ककरा ने होइ छै, मुदा कएकटा जन-मजदूरक बच्चा केँ हाकिम बनैत देखलहक-ए एहि इलाका मे । तोरो

बाबू इस्कूलक लोभे वासन गढ़ब नहि सीखए देलखुन आ आइ तोहों रिक्से झीकै छह। आ चलह हमरा सब तँ भेलहुँ पुरान मुदा डोमा चमार एखनहुँ ढोले पीटै-ए आ पूजा मे चरणोदक दूरे सँ लै-ए। दुर्गा मंदिरक ओसारा पर बैसि कए ढोल कहां बजलैए एखन धरि ? आगू संक्षेप करैत मोचन कहलकै—मीता बड़ समय लगतै बदलै मे, हमरा सब की जीबैत रहब तामे।

मोहन कें मोचनक गप्प सुनिकए ठकमुड़ी लागि गेलै। मोहन कें अन्यमनस्क देखि मोचन कहलकै—तों बैसह मीता, हम चलै छिअह। ब्राह्मण भोजनक बेर भेल जाइ छै। हम तँ, जाबे ब्राह्मण भोजन नहि हेतै, पानि नहि पीअब। की करू, परो साल हम कहै गेलिअनि हमरा छोड़ि दिअए मुदा सब एक लेखे कल जोड़ि लेलनि—मोचन कामति, एहि बेर पार लगा दिऔ, सिकरेटी तं अहां बनिऔ एहिबेर। इ कहैत मोचन उठि कए विदा भेल आ मोहन ओत्तहि अखरे चौकी पर अङपोछा ओढ़िकए पड़ि रहल। किन्तु, निन्न नहि भेलै। सोचह लागल—ठीके, दुर्गाजीक मंदिरक ओसारा पर ढोलिआ कहां बैसै छै। चरणोदक तँ, सरिपहुँ, डोमा दूरे सँ लै-ए। मुदा दिल्ली आ बम्मैमे तँ एना नहि छै। मुदा मीता ठीके कहलक—बोनिहारक बेटा हाकिम कहां बनै छै। जे किछु...।

मोहन केर पेट भरल छलैक आ अपन दलान पर हाथ पएर पसारिकए पड़बाक मौका बहुत दिनक बाद लागल छलैक तँ कनिए बसात सिहकलै कि मोहन कें आंखि लागि गेल रहैक। जावत् घोल-फचक्का सूनिकए मोहन उठिकए बैसले छलैक कि पूर्णिमा सेहो अङना सँ बहरएलैक।

....की भेलै ?

....लगैए, कोनो झंझट भेलैए पूजा मे।—मोहन कहलकैक—देखै छिऐ बढिकए।

....अनेरे, कथी ले जाएब अहि फसाद मे। हमरा आउर कें कोन जे कपार फोड़ाएब।

.....थम्ह कने। हमरा देखए दे।' कहैत मोहन आगू बढ़ल।

दुर्गास्थान लग पहुँचल तँ देखैए जे दू दल मे चिकरा-चिकरी भ रहल छैक आ किछु गोटे दुनू कें शान्त करबा मे लागल अछि—

अहां सब कें शोभा दै-ए एना विवाद करै छी। —मोचन कहै छलै—'सब गोरे मिलिएक तँ पूजा करै जाइ छी।'

मुदा दुनू दल मे कोनो मिलान संभव नहि छलैक।

गामक लोकक विचार जे गुगुलिया नाच होइक । एतुका लोक केँ वएह नीक लगै छै । मुदा शहरू छौंड़ा-माड़रिक विचार जे अपनहि नाटक करी; भीडिओ-टी. वी. चलाबी । जँ चन्दा जमा होअए त मुजफ्फरपुर-पटना सँ किछु 'आने' आबए ! मुदा बड़ घमर्थनिक पछाति छौंड़े-माड़रि जीतल । मुदा ततबे नहि ओ लोकनि घरे-घर घूमिक' पांच-पांच सौ टाका आओर सब घर सँ चन्दा उगाहबाक मंसूबा बनौलक । माने मुर्ग मुसल्लम खाएब तँ टाका तँ लगबे करत । जे किछु । मुदा दोसरे दिन मोहन केँ सेहो तकर तगेदा आबि गेलै । माने

मोहन केँ किछु नहि फुरलै । की कहै, की नहिं ।

राति मे जखनि भरि गाम नि:शब्द भ गेलै तँ पूर्णिमा खाटक पौथान लग बैसिक' मोहनक घुट्ठी जांतए लगलै तँ मोहन केँ बुझबा मे एलै जे आब बच्चा बुतरूओ निन्न भ चुकल छलै ।

कहलकै—हम काल्हिए दिल्ली चल जाएब ।

.......आ पाबनि ? एलौं कथी ले—पूर्णिमाक गरा बाझए लगलै ।

....से तँ ठीके मुदा आब हम नहि आएब ऐ दसगर्दा-पावनि-पूजा मे । भगवान-भगवती ओतहु छथिन ।

आ मोहन भोरे ट्रेन पकड़ि दिल्ली आपस चल गेल ।

❑❑❑

देशी साहेब

भीषण ज्वालाक समान रौद । बूझि पड़य जेना सूर्य पोखरि-डबराक जलकेँ सुखा शीघ्रे छुट्टीपर जाय चाहैत छथि । सामनेक दलान पर द जायवला रस्ता टूटिकय तेहन भ गेल छल जे पैदल वा साइकिल सदृश सवारीसँ जायवला आदमी बूझय जे सत्ते स्वर्गक रस्ता बड्ड कठिन छैक ।

आइ नगरपालिकाक वार्डकमिश्नरक निन्न टूटलनि । आ सड़कक मरम्मति शुरू भेल । देखैत छिऐक सैकड़ो मजूरा ओही रौद में इंटा फोड़ि रहल अछि आ रोड़ाकेँ अपन घामसँ भिजा-भिजा तृप्त करैत अछि । माने ओ कहैत हो—बड़ रौद छैक कने ठण्डा लैह ।

ई हमर कर्तव्य थिक जे थाकल रौदायलकेँ ठण्डाबी । जे श्रान्त आ गरमायलकेँ ठण्डाकय जुड़बैत छैक भगवान अबस्से ओकरो जुड़बैत छथिन । एहि तरहक अनेक विचार मोनमे उठय लागल । की भगवान सत्ते ओकरा जुड़बैत छथिन जे सालभरि खेत-खरिहान आ बान्ह-पोखरिपर रहि धनिकक कोठि भरि दैत अछि तथापि साल भरि एक सांझ उपासे कए भगवानकेँ प्रसन्न करैत अछि । लगैत अछि हुनको न्यायक तराजूमे पासङ छनि । तेँ शम्बूककेँ तपस्याक पुरस्कार स्वरूप ओकर गरदनि उतारि लेलथिन ।

एहिना मनकथा लागल छल कि ओहीमंहक एकटा छौंड़ा-आबिकय पुछैत अछि कतेक बेर भेलै, मालिक ?

....साढ़े दस ।

ओ छौंड़ा पूछि लेलक आ चल गेल । परन्तु हमर समक्ष नहिओ रहैत हमरा मानस-पटल पर प्रश्न चिह्न बनिकए ओ आबए लागल । ओकर वाक्यक अन्तिम शब्द बारम्बार बड़ीकाल धरि प्रतिध्वनित होइत रहल । हमरा ओ मालिक किएक कहलक ? हम ओकर मालिक केहन ? एतेक दिनसँ प्रचण्ड रौदमे घामसँ नहाइत रहैत अछि, की हम कहिओ एक गिलास पानिओ द कए तृप्त कयलिऐक अछि । ओ कहलक कतेक बेर भेलैक ? एहि वाक्यक भिन्न-भिन्न अर्थ मोनमे आबए लागल । कखनो होअय जे ओ ई तँ नहि कहि रहल छल जे कतेक बेर भ गेलैक आ रौदमे खटैत भूखले छी आ

अहां.... । कखनो फेर ठीक विपरीत अर्थ मोनमे आबय । की ओकर संकेत वाक्यमे ई भावतँ नहि नुकायल छलैक जे नेतासभ द्वारा कतेक बेर ई गप्प भेलैक जे गरीबीक अभिशाप हटतैक आ हमरो सभकेँ भरिपेट अन्न आ पांचहाथ वस्त्र भेटत । मुदा फल की भेलैक ?

एवं प्रकारे विचारक एकटा जेना धर्रोहि लागिगेल आ बेरा-बेरी मोनमे अबैत आ जाइत रहल, मुदा निर्णयपर नहि पहुँचि सकलहुँ जे संकेतक की अर्थ भेलैक ।

तावते एकटा सज्जन एकाएक आबिकय कुर्सी पर बैसि गेलाह ।

.....प्रणाम । ह-ह, की प्रचण्ड रौद अछि ।

अभिवादनक उत्तर दैत हम पूछलिअनि—'कतय गेल रही ?'

.....नहि, कतहु गेल नहि रही ।

जेना-तेना हमर ध्यान ओहि महानुभावक प्रभावशाली चेहरापर पड़ि गेल । किन्तु, संयोग छल, ओहो घुमा-फिराकए वैह गप्प शुरू कयलनि । कहए लगलाह—ई देखैत ने छी अहींक रोडकेँ सोचल जे कम्मो पाइ भेटय तँ ठीक करा दी । अहां सभक तकलीफ नहि देखल जाइत अछि । मुदा की कहू—रोडतँ पांच दिन पहिनहि बनि गेल रहैत से ई जन सभक देह चोरयबासँ तंग छी । आओत आठ बजे आ बारहे बजे सँ हाँफय लागत—पाड़ा जकां ।

'भूखल छी । कपार जरैए । कने ठंडाय दिअ ।'

'असलमे बूझलने फल्लां बाबू'—ओ अपनाकेँ बना-बना अभिनय क' कहए लगला—'एकर सभक नैतिक पतन ततेक भ' गेल छैक जे दसबेर पानिए पीयत, दम्म मारत, मूतत, हगत । सब काजेक बेरले रखने रहत ।'

हिनक गप्प बूझि पड़ल जे देहकेँ बेधि देलक आ देह जरि गेल । मोन मे भेलजे ई साक्षात जनताक रक्तपायी होथि । कारण पानक रक्तिम लालीसँ ठोर आ किछु दाढ़ीक अंश सँ एहने भासित होइत छल । तथापि गप्प टारैत कहलिअनि—'रौदो बड़ छैक ।'

मुदा ओ अपन भाषण जारी रखलनि—'आइ जे हमरा अहांक ई हालत अछि से किएक, एही लोकक खातिर किने । सब जमीन-जथा बांटि दिऔक गरीबमे । जमीन्दारी दए दिऔक । मुआवजाओ दूधक डाढ़ी भेटत । केहन ई जमाना अयलैक ।....ओ जोर द कए कहए लगलाह....जे हमर बाप-पितामहक सामने पनही पहीरि नहि अबैत छल से आब मोटरपर चढ़ि ओसारा लग पहुँचि जाइत अछि आ बेधड़क कुर्सी पर आबि बैसि जाइत अछि ।

जखन बूझि पड़ल जे गप्प करैत ओ पूर्ण भावावेशमे आबि रहल छथि तँ हमरा मनकें रोकैत-रोकैत रोकि नहि भेल । आखिरीमे दाबल आगि धधकि उठल । कहलिअनि—कने आब हमरो गप्प सूनि लिअ । एखन अहांक साहेबी गेल कहां अछि ? ओकरा संगे रोडपर माटि फेकए पड़त ! ओ अहांसँ कोन गुणमे निम्न अछि ? अहां ओकर कमाइक लाखो रुपैया खाइत छी, मुदा ओ ? बड़ नैतिक स्तरक गप्प करैत छी। स्तर अहांक उच्च होयबाक चाही कि ओकर ? अहां ओकर कमाएल खाइत छिऐक कि ओ अहांक खाइत अछि ? अहांक खेत कैं अपन सोनितसँ पटबैत अछि आ पबैत की अछि ? खखाह धान आ आना दर सूदि पर रुपैया, मारि-गारि आ जन्मक बहिखत । कहियौक जे बाभन हर नहि जोतए किएकतँ खेत जोतबा मे दम्म सेहो लगाबए पड़ैत छैक । मुदा हांकि दिऔक रौद बसात आ बरखामे । ऊपरसँ डंडा दैत चढ़ि लिअ सांग-सायुध आ चल जाउ जहन्नुममे । किन्तु किछु कहत ओ बड़द ? आब बड्ड भेल । कोनो कोठाक ऊंचका महलपर अनधिकार बहुत दिन रहलाक बाद ओतएसँ अपने मोने उतरि जाउ नहि तँ लोक ठेलिकए खसा देत । चूर-चूर कए देत । मांटिपर अवशेषो दृष्टिगोचर नहि होएत । देखैत रहिऔक जकरा अहां बड़दोसँ बत्तर बूझैत छिऐक सेहो बाजत । आ बाजत तँ ओकर बाजब ज्वालामुखी सिद्ध होयत आ अहांक सब धन-ऐश्वर्यकें जराकए सुड्डाह कए देत ।

कनेक सोचू—ई तँ परम्परा अछि जे 'परोपदेशे पांडित्यं'—

आ ई शब्द कहि हम विराम लेलहुँ कि ओम्हरसँ शब्द आयल—'बाबू, अंगरेज साहेब गेलैक किने तँ हमर गिरहते आउर कें देशी साहेब बनाकए चल गेलनि !'

मिथिला मिहिर
2-7 सितम्बर, 1979

जखन बूझि पड़ल जे गप्प करैत ओ पूर्ण भावावेशमे आबि रहल छथि तँ हमरा मनकें रोकैत-रोकैत रोकि नहि भेल । आखिरीमे दाबल आगि धधकि उठल । कहलिअनि—कने आब हमरो गप्प सूनि लिअ । एखन अहांक साहेबी गेल कहां अछि ? ओकरा संगे रोडपर माटि फेकए पड़त ! ओ अहांसँ कोन गुणमे निम्न अछि ? अहां ओकर कमाइक लाखो रुपैया खाइत छी, मुदा ओ ? बड़ नैतिक स्तरक गप्प करैत छी। स्तर अहांक उच्च होयबाक चाही कि ओकर ? अहां ओकर कमाएल खाइत छिऐक कि ओ अहांक खाइत अछि ? अहांक खेत कें अपन सोनितसँ पटबैत अछि आ पबैत की अछि ? खखाह धान आ आना दर सूदि पर रुपैया, मारि-गारि आ जन्मक बहिखत । कहियौक जे बाभन हर नहि जोतए किएकतँ खेत जोतबा मे दम्म सेहो लगाबए पड़ैत छैक । मुदा हांकि दिऔक रौद बसात आ बरखामे । ऊपरसँ डंडा दैत चढ़ि लिअ सांग-सायुध आ चल जाउ जहन्नुममे । किन्तु किछु कहत ओ बड़द ? आब बड्ड भेल । कोनो कोठाक ऊंचका महलपर अनधिकार बहुत दिन रहलाक बाद ओतएसँ अपने मोने उतरि जाउ नहि तँ लोक ठेलिकए खसा देत । चूर-चूर कए देत । मांटिपर अवशेषो दृष्टिगोचर नहि होएत । देखैत रहिऔक जकरा अहां बड़दोसँ बत्तर बूझैत छिऐक सेहो बाजत । आ बाजत तँ ओकर बाजब ज्वालामुखी सिद्ध होयत आ अहांक सब धन-ऐश्वर्यकेँ जराकए सुड्डाह कए देत ।

कनेक सोचू—ई तँ परम्परा अछि जे 'परोपदेशे पांडित्यं'—

आ ई शब्द कहि हम विराम लेलहुँ कि ओम्हरसँ शब्द आयल—'बाबू, अंगरेज साहेब गेलैक किने तँ हमर गिरहते आउर कें देशी साहेब बनाकए चल गेलनि !'

मिथिला मिहिर
2-7 सितम्बर, 1979

हम नीकें छी

आइ भोर ओ घर बाहड़ैत छलि । अकस्मात् ओकर नजरि चौकीतर एक कोनमे पड़ल एकटा पुरान पोस्टकार्डपर पड़लैक । ओहि पुरान चिट्ठीकेँ उठाकए उनटाकए देखलकैक तँ आंखि भरि अएलैक आ ओ पोस्टकार्डकेँ छातीसँ लगा लेलक । हाथक बाढ़नि आ घरक गदौस एककात राखिकए अपन स्मृतिक संसार में हेड़ा गेलि ।

ठीक सालभरि पहिनेक गप्प छलैक । तहिया घरमे सब हँसी-खुशी छलैक । ओहो दिन ओ भगवानक नाम लैत उठलि छल । उठिते हाथमे बाढ़नि ल' कए अंगनामे आएलि आ आंगन बहाड़ब शुरू केनहि छलि कि अंगनाक एक कोनपर, कचनारक गाछपर कोनो चिड़ैक मरल गेल्हपर नजरि पड़लैक । अहा ! बगड़ाक बच्चा छलैक । प्राय:शीतमे ठिठुरि गेल छलैक । मायक आत्मा ! एके बेर कचोटि उठलैक । ई अदना सन क्षुद्र जीव ! प्रकृतिओक कोपक शिकार इएह ।

दिन उठलैक । बुढ़िया घरे-घर जाकए नाति-नातिनकेँ उठओलक— 'उठ-उठ भोर भेलैक । एतेक बेर धरि केओ सूतए । भोरका सुरूजक किरण आ बसात आयु आ फुर्ती बढ़बैत छैक ।'

धीया-पूता सब उठि गेलैक । केओ पैखाना करए आ केओ छाउर ल कए दांत मांजए भागल । बुढ़िया सेहो अपन काजमे लागि गेल छलि । चूल्हि-चिनवार भ' गेलैक तँ ओ फूल तोड़ए चललि । फुलडालीभरि फूल तोड़लापर ओत्तहि दतमनिले अढ़ूलक एकटा मूड़ी तोड़ए लागलितँ एकटा गिरगिट माथहिपर खसि पड़लैक । बुढ़िया अन्यमनस्क भए गेलि, नहि जानि ई कोन अशुभ भवितवक सूचना थिक ! अंगना आएलि । हाथक तोड़ल दतमनि एककात राखि एक चुरुक गंगाजल माथपर ल लेलक ।

बेर उठि गेल छलै । बेरा-बेरी धीया-पूता सब जलखै-पनिपियाइ कयलक । इस्कुलिया सब नहाएल, खएलक आ इस्कूल चल जाइ गेल । किन्तु बुढियाक मोन जेना थीर नहि भेलैक । मोन रहि-रहिकए खुटकिते रहलैक–हे भगवान, तोंही जनिहह । जखनहि सब धीया-पूताक अछैत एहि दुनियासँ चलि जाएब तखने, जीवन सफल

बूझब। देखैत छिऐक कोना छनमे छनाक भ' जाइत छैक। सड़लाहाक बेटा चलिते-बूलैत छलैक। ने घर लेलकैक, ने दुखीत पड़लैक। हर जोतिकए अएलैक आ कहलकैक—माय गै, पेटमे दरद करैए। मायक छेगाएल मोन आओर डेरा गेलैक। कहलकैक—ता ई गरम पानि पी ले। हम अबैत छिऔक कोइलीकेँ बजौने बड़ नीक ससारैत छैक। कनेको जँ असान हेतौ तँ सांझंखन दूटा गोटी मुसलमना डाकडरसँ मंगा देबौक, आ झटकिकए कोइलीकेँ बजाबए दौगलि। मुदा बिच्चहिमे सोनमाकेँ दूटा झाड़ आ एकटा रद्द भेलैक आ माय जावत् वापस आएलि बेटा मुँह बाबि देने रहैक। बैसले-बैसल बुढ़ियाकेँ मनकथा लागि गेल छलैक।

ताबतहि बहरीमे जेना कोनो हलचल भेलैक। बुढ़िया दौड़िकए बहरी आएलि तँ देखलकैक जे मारिते लोकसब तिनबटिया दिस दौड़ल जाइत छलैक। 'हे भगवान, ककरा की भेलैक! तखनहि ओकर नजरि दरबज्जापरक सुन्न चौकीपर पड़लैक।' बुढ़ा सेहो बूझि पड़ैए ओम्हरे गेलाहे।—बुढ़ियाक छातीतँ धक्क भ' अएलैक। हुलुकिकए बान्ह दिस डेग उठओलक तँ कोंढ़ जेना आओर उनटय लगलैक। बान्हपर लोकक मिस्स पड़ैत रहैक। ओहीमेसँ खसैत-पड़ैत अबैत एकटा मुँहपर ओकर आंखि गड़ि गेलैक। बुढ़ियाक आंखिक आंगा तँ जेना अन्हार भ अएलैक। ओ ठामहि बैसि गेल—बाप रे, ई तँ ओकरे बेटा हरिनाथ छलैक!

मायकेँ देखिते बेटा जेना आओरो बताह भ' गेलैक। कहलकैक—

'माय, यदुनाथ डाका द देलकौक!

गप्प कहैक नहि रहलैक। घंटाक भीतरे भरि गाम मे घोल भ' गेलैक—यदुनाथ मरि गेलैक। भगवाने जानथि की भेलैक। शनिए दिनतँ चिट्ठी आएल छलैक—'दसमीमे तँ नहि आबि सकलिऔक। बेस, सुनराक बिआह जँ अगहनमे भेलैक तँ अबस्से आएब।'

घरक कोनेमे बैसल-बैसल सम्पूर्ण अतीत जेना ओकर आंखिक आगां नाचि गेलैक। आंगनमे ताबत कोनो खोज भेलैक। मझिली पुतहु तकैत अएलैक—'माय की करए लगलखिन? डोमिन छठिक कोनिया आ पथिया ल' कए बैसल छनि।'

बुढ़ियाक भक्क टूटि गेलैक। आंखिक नोर आंचरसँ पोछि लेलक आ कहलकैक—चलू अबै छी।

घरक बाहड़नकेँ एककात टारि देलकैक आ उठिकए कोठीक कान्हपर राखल पौतीमेसँ एकटा दुटकही आ एकटा अठन्नी बहार कए घरसँ बहरा आएलि आ कोठलीक जिंजिर चढ़ा देलकैक। अंगना आबिकए डोमिनकेँ पाइ द देलकैक आ छोटकी नातिनकेँ कहलकैक—'सबटा कोनिया-पथिया-सूप-चङेरी समेटिकए ल' ले

आ पोखरिसँ धो आन' कहैत भनसाघरमे चलि गेलि ।

भनसाघर सँ बहराएलि तँ एकहाथमे जलखैक छिपली आ दोसर हाथमे पानिक लोटानेने छोटका नातिकेँ जलखै देबए दरबज्जापर चलि गेलि । छओड़ाकेँ जलखै द कए बुढ़िया ओत्तहि बैसि गेलि । मुदा काजक चिंता आ आश्रमिक बेगरतो आइ ओकर मोन बहटारि नहि सकलैक ।

ओकरा अपन बेटा मोन पड़ि अएलैक । ओहो अहिना इस्कूलमे पढ़ैत रहैक । जाहिल इलाका । भरि पंचकोसीमे एकटा इस्कूल । भयावह कमला नदीक मारुख पुलकेँ पारकरैत भरि टोलक चटियासब संगे ओकर नेना एक भोर इस्कूल जाइत छलैक आ मुनहारि सांझ, दीप लेसैकाल घूरिकए आंगन अबैत छलैक ।

ने कहियो मारि ने झगड़ा, टोना ने टंटा । इस्कूलसँ आबि बेटा नित्तह इस्कूलक दिनचर्या आ पढ़ाइ माएकेँ सुनबैत छलैक आ मायक छाती सूपसन ! हे बिदेसर, हमर ई बेटा जँ पढ़ि गेल तँ एहि कलरनीक सब दु:ख दूर । आ से बिदेसर सूनि नेने रहथिन । लेकिन आइ तँ बेटाक कत्तहु नामो नहि छैक । किछु जँ बंचल छैक तँ गाछीक माटिमे मिझड़ाएल बाकुटभरि छाउड़ !

पछिला तेरह बरखसँ ओकर बेटा सरकारी नौकरीमे छलैक । जखन सरकारेक नौकरी तखन कोन ठेकान । कखनहुँ दरभंगा, कखनहुँ पटना, कखनहुँ पूर्णियाक वनखंड तँ कखनहुँ रांची-हजारीबागक पहाड़ी भूमि । मुदा ठीक पंदरहमा दिन एकटा पोस्टकार्ड...'माय हम कुशल छी । तों चिन्ता नहि करिहें । कोनो कष्टक काज नहि । हम खूब प्रसन्न छी । किसुन कोना अछि ? आब तँ काका-बाबा अबस्से कहैत हेतैक ।....बाबू कोना छथि ? आदि-आदि....।' आ बिनु नागाक मसमा दिन मनिआडर सेहो अबस्से अबैक । आ मायक मोन गद्‌गद । कहै....कत्तहु रह खुशी रहै जो । भगवतीकेँ सएह कहैत छिअनि । भगवान आओर कोनो धन-सम्पत्ति नहि देलनि तकर कोनो दु:ख नहि । नवारीमे इएह अरजलहुँ । बुढ़ारीमे कहुना भगवान निबाहि देथि ।....सएह बुढ़िया हरिनाथक माए जखनि-तखनि बजैत रहैत छलि । मुदा जे हेबाक छलैक से भेबे केलैक ।

समय कत्तहु बैसल रहलैए । हरिनाथक मरनो आब बरख डेढ़ेक भ' गेलैक । एकटा बरखिओ बैशाखेमे भ' गेलैक । मुदा चौकीकतरमे पड़ल पुरान चिट्ठी....'माय हम नीकें छिऔक, तों चिन्ता नहि करिहें' घाव पर पड़ल पुरान खोइंठीकेँ फेर नोचिकए राखि देलकैए ।

□□□

किछु पुरान गप्प, किछु नव गप्प

बड्ड पुरान गप्प छैक । ऊँचका डीहपर बुढ़ी मोसम्मातक हवेली रहनि । तहिआक बाल-बिआह...शिशु कनिआ आ बूढ़ वरक....केर शिकार रहथिन । सन्तानमे दूटा बेटी रहथिन । बिआहल, सुखी-सम्पन्न, धनवान । दुनूकेँ भरि घर बेटा-बेटी रहनि । नाति-नातिन रहनि आ खेत-पथार रहनि । किन्तु, मोसम्मात मायक बेटी भेने दुनू बहिन सम्पत्तिक हिस्सेदार रहथिन आ हुनकर बेटा लोकनि दिआद जकां । आ लोक जखन दिआद हएत तँ दिआदी किएक नहि हेतैक । गाछीक पगुरी-पगाठ, बाड़ीक भाटा-मूर, आ पोखरिक इचना-पोठी किएक ने भाग अंकुर लगतैक, बाँट-बखरा हेतैक ? आ सत्ते गप्प, जखनि सदातनिए सँ भ' अएलैए 'सूयग्रेण न दातव्यं बिना युद्धेन केशव: ।' तै परसँ बड़के भाइ बैमान भ' गेलाह तऽ हम कतेक इमान देखाउ । तेँ वएह भेलैक जे सदातनिसँ भ' अएलैए : पहिने चूल्हा-चौका फुटाओल गेल । तखनि कोठा-कोठली बँटाएल । अङनामे सेहो टाट लगलैक । किन्तु दलान ? दुनू गोटे मुँहपुरुख छलाह । दरबज्जापर पहीने बैसाड़ होइत छलनि । कहिओकाल भरि-भरि राति किरासन तेलक मशाल-ज्योतिमे छकड़बाजी नाच सेहो होइत छलैक । तेँ दलानतँ दुनूकेँ चाहिअनि, किन्तु साझी नहि । कहै छैक साझी बहु नीक, साझी वस्तु नहि नीक । तै परसँ साझी दलान ! किन्हु नहि ! दुनू भाइ खूब बजै छलाह, गुम्हड़ै छलाह, जनमत जुटबै छलाह किन्तु जाहि पंचैती मे दलान साझी रखबाक फेसला होएतैक से कबूल नहि हेतनि, एहि विन्दुपर दुनू पक्ष एकमत छलाह । तेँ झगड़ा, रगड़ा आ शीत-युद्धक कोनो सीमा नहि छलैक । तखनि घर फूटए आ गमार लूटए । से गौआँसब मौज करैत छल, जकरा थोथी छलैक ।

आखिर सब किछुक अंत अबैत छैक । समयक योगदान चाही । अगिला बाढ़िमे बलानमे बड़ बाढ़ि अएलैक । भरिगाम डूबि गेल रहैक । गामक कतेको बान्ह टूटि गेलैक । कएक आङनमे मोनि फूटि गेलैक । भीतकघरतँ कतेक खसल, कोनो ठेकान नहि । संयोग एहन जे एहिबेर मोसम्मातक झगड़हुआ दलान सेहो खसि पड़लनि । किन्तु कमलामाइ झगड़ाकेँ कोना बहाकए ल जेतीह । आब झगड़ा उठलैक दलानक बड़का बरीपर । कहाँदन बूढ़ा अपने कतहु बाहरसँ मंगबौने रहथिन ओ साखुक बरी । निस्सन ।

ओकर काज तऽ सबके हेतैक जे दलान बनाओत। आ दलान तँ बनतैक दू टा। तखनि बरी दू टा अओतैक कतए सँ। तेँ जखनि फैसला नहि भ सकलैक तखनि मामिला कोर्ट-कचहरीमे पहुँचलै। गौआँ सबले फेर भोज जगलैक, रोजी बढ़लैक। जकरा जेम्हर सुतरलैक दुनू दलमे बँटल आ दरभंगा-मधुबनीक आवाजाहीमे लागल। किन्तु ओ सबतँ जे भेलैक-से-भेलैक। एखनहुँ धरि जे गप्प गामक बूढ़-बुढ़ानुसकेँ नहि बिसरलैए ओ छैक एकटा कौतूहलकारी स्मरण—कएक वर्षधरि जखनि मोकदमा चललैक तखनि जा कए भेल रहैक फैसला। तहिआ ने मोटर छलैक ने हवा गाड़ी। अंग्रेज साहेबसब खड़खड़िया-पालकीपर चलैत छल आ गाम अएलापर, कहाँदन, उख्खरि पर बैसैत छल। ओहोदिन गोरा साहेब खड़खड़ियापर आएल रहैक। दुनूभाइकेँ तँ हतास नेने रहनि। मुदा, बाबू कहने रहथि, अजगूते भेलैक। साहेबा गामक कोतबालकेँ कहिकए कन्टीरबा कमारकेँ बजौलकै, अङरेजिआ फीता ल कए अपने हाथें बरीकेँ नपलकै आ आरी ल' कए बरीकेँ बीचो-बीच दू टुकरी कटबाकए चल जाइत रहल ! ककरो मोन नहि छैक दुनू भाइ जखनि दलान बन्हलनि तँ ओ बरी ककरो काज अएलनि कि नहि।

एकटा आओर खीसा लोकसबकेँ मोन छैक—फुद्दी बाबूकेँ चारिटा बेटा रहथिन—साधो, माधो, नागो आ भागो। फुद्दी बाबू जखनि मरि गेलाह आ बेटालोकनिमे बाँट-बखरा शुरू भेलनि तँ डीह चारि भाग भेल। खेत-खरिहान, गाछी-बिरछी, पोखरि-झाँखरि सबमे जरीब खसल। नापी भेल। आरि-धूर पड़ल। सब भाइ अपन-अपन डीह-डाबरक सीमा-शरहद केलनि, टाट-छहरदेबारी देलनि, घर बन्हलनि, दलान बनौलनि। किन्तु, भगवती ककरा घर जयतीह ताहिपर बखेड़ा ठाढ़ भ' गेल। कहै छैक भगवतीक स्थापनामे पाँच नदीक पानि, हथिसार-घोड़सार आ राजाक डीहक आ आओर पाँच गामक माटि आ नहि जानि आओर की की रहैत छैक। आ तखनि जा कए होइत छनि भगवतीक प्राण-प्रतिष्ठा। सुनै छिअनि फुद्दीबाबूक पितामहे, जे स्वामी लक्ष्मीनाथ गोसाइक चेला रहथिन ओहि भगवतीक स्थापना कएने रहथिन। तेँ हुनकर संततिमे सबठाम धन-धान्य आ सुख-समृद्धिक बरखा होइत रहलैए चारि पुश्तसँ। तेँ ओ भगवती जकराघर जएथिन तकरा कमएबाक कोन काज ? तें भगवती तहिआ झगड़ाक जड़ि भ गेलीह। बेचारा नागो आ भागोतँ अपनाकेँ छोट बूझि ओहिमे नहि पड़लाह। मुदा, साधो बूझथि जे ओ जेठ छथि तेँ धनमे भले जेठांस नहि भेटनु, भगवतीतँ हुनके घर औथिन। किन्तु, माधो कहलथिन.....'भगवती ! ओ हमर हिस्सावलाघरमें स्थापित छथि। ककर मजाल थिक जे भगवतीकेँ ल जयबाक नाम लेत। दोहाइ गोसाउनिकेँ शिर काटि लेबैक !

बेचारे साधो देह लगाकए मारलनि। भगवती टस-सँ-मस नहि भेलीह !

ओ तँ भेल इतिहास, खीसा, पुरान गप्प । किन्तु, आब ?

आब किछु नव गप्प........

एहिबेर बड़का काकाक श्राद्धमे गाम गेल रही । पूरा गाम बदलि गेलैए । वा कहू किछु नहि बदललैए । पूछब बदलि गेलैए ? तँ, हँ । बदलि गेलैए माने गामक बान्हपर खरंजा द देलकैए । उलुआ पाकड़िलग पान-बीड़ी-सिकरेट....लोक कहै छै गाँजा आ दारू सेहो.....केर दोकान खूजि गेलैए । बीच टोलपर टेलिफोन-पीसीओ सेहो खूजल छैक । जे-से......

जँ पूछब नहि बदललैए ? तँ, हँ । पोखरिक मोहारपरक पुरातन इस्कूल छै किन्तु, चटिआक अभावमे मास्टरलोकनि आनन्दमे छथि । संस्कृत पाठशालाक भवन तऽ नहि जानि कहिआ ध्वस्त भ' गेलैक आब ओकर अवशेषो ताकब कठिन छैक । गाममे हेल्थ सब सेन्टर खूजल छैक किन्तु किएक से ककरो बुझल नहि छैक ।

खैर ई सब तँ भेल बातक बतंगड़ । कहबाक गप्प तँ दोसरे छल ।

काकाक श्राद्धमे अनेको गोटे आएल रहथि । साधो-माधो लोकनिक बेटा लोकनि सेहो । एक भाइक बेटालोकनि सूरतमे रहैत छथिन । माधोबाबूक बेटालोकनि बम्मैमे । अपन सभक घर ढहल ढनमनाएल छनि । तेँ हमरे लोकनिक घरमे डेरा देने रहथि । बेचारी भगवती....गौआँक शब्दमे झगड़हुआ भगवती....वनवासिनी बनल छथि । केओ बूढ़-पुरान जनिका ओहि भगवतीक अकबाल मोन छलनि, कहलथिन....'बाउ, घर-घरहट करिऔ आब । बड़ अकबाली भगवती छथिन अहाँक घरक । सबकेँ एक-सँ-एकैस केने छथि । ओना हुनका रखवाले विवादो बड़ भेल रहनि, अहाँक बाबू आ कक्कामे ।'

माधोक बेटा विनोदकेँ ई गप्प नीक नहि लगलनि । कहलखिन...गप्प तँ ठीके कहै छी, बड़ झगड़ा भेल रहनि । किन्तु भगवती तहिआ तेहन अकबाली रहथि । आइ तँ हमरा, गाममे, पेटो भरबा योग्य नहि रखने छथि । ओना झगड़ाक कोन छैक । सुनै छिऐक मोसम्मातक परनाति लोकनि सेहो झगड़हुआ बरीक दुनू टुकरीकेँ चीरिकए बाप पित्तीक अछिआमे द कए जरा देने रहथिन ! हमरो भगवती माटिएसँ बनल छथि माटिएमे जाथु । जखनिह मर डीहे आबाद नहि तखनि गोसाउनिक कोन गप्प । ओना सुनै छी अहाँक बाबूवला शालिग्राम आ नर्मदेश्वर सेहो सम्पुटमे बन्न भेल पोसिआ लागल फिरै छथि !

□□□



कीर्तिनाथ झा

जन्म	:	08 सितम्बर, 1955
माता	:	स्व. विन्देश्वरी देवी
पिता	:	स्व. तारानाथ झा
मूल निवास	:	ग्राम-अवाम, पो.-रतौल, भाया-झंझारपुर (रे. स्टे.) जिला-दरभंगा-847 403
वर्तमान पता	:	161/1 गुरु गोविन्द सिंह मार्ग लखनऊ छावनी (उ. प्र.) पिन-226 002, e-mail: kirtinath_jha@yahoo.co.uk
शिक्षा	:	एम. बी. बी. एस. (आनर्स), एम. एस. (नेत्र चिकित्सा) क्रमशः दरभंगा मेडिकल कॉलेज एवं दिल्ली विश्वविद्यालय
रुचि	:	चिकित्सा-वृत्ति, देश-भ्रमण, आ लेखन।

प्रकाशित कृति :

मौलिक : कविता संग्रह जड़ि (2000).

कथा सभ मैथिली पत्रिका मिथिला मिहिर, अंतिका, भारती-मंडन, रचना, कर्णामृत, घर-बाहर आदि मे समय-समय पर प्रकाशित।

पहिल कथा देसी साहेब (1979) मिथिला मिहिर मे प्रकाशित।

कविता छिट-पुट पत्रिका सभ मे प्रकाशित।

अनुवाद : खलील जिब्रान केर उपन्यास 'टूटल पाखि' (मैथिली रूपान्तर) धारावाहिक रूपें प्रकाशित (माटि-पानि, पटना-1983-84)